ॐ

ब्रह्म सत्यम् **सर्वाधार**

समता सत्संग कार्यक्रम पुस्तिका

अमरलोक से बानी आई। सकल जीव के ताप मिटाई ॥
धुर की बानी ने धुर पहुंचाया। बिछड़ा जीव प्रभ रूप मिलाया ॥

आज्ञा परमपुरूष से ये, अत गुह्य तत्त्व ज्ञान परगास्यो।
'मंगत' श्रवन मनन जो कीजे, होवें सकल दोष चित्त नास्यो।

संगत समतावाद (रजि.)
समता योग आश्रम, जगाधरी

ॐ

ब्रह्म सत्यम् **सर्वाधार**

प्रथम संस्करण - 2021

सर्वाधिकार सुरक्षित - संगत समतावाद (रजि.) जगाधरी

मूल्य : समता प्रचार हेतू समय का बलिदान

प्राप्ति स्थान :

समता योग आश्रम

छछरौली रोड़, जगाधरी

www.samtavad.org

ॐ

ब्रह्म सत्यम् **सर्वाधार**

श्री सद्गुरूदेव मंगतराम जी महाराज

अवतरण : नवम्बर 24, सन् 1903

शुभ स्थान : गंगोठियां ब्राह्मणां, तहसील कहुटा

जिला रावलपिण्डी (पाकिस्तान)

महासमाधि : फरवरी 4, सन् 1954 (अमृतसर)

ॐ

ब्रह्म सत्यम् **सर्वाधार**

साचा गुरू हर रूप है, सकल जियाँ आधार।
'मंगत' पड्यो चरन तिस, कर डण्डवत बारमबार ।।

प्रस्तावना

प्रार्थना : श्री सत्गुरूदेव - सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, कल्याण की मूर्ति व ईश्वर स्वरूप के चरणों मे कोटि-कोटि नमन ! हृदय में विराजमान श्री सत्गुरूदेव सत्ज्ञान वर्धन में हम सब का मार्गदर्शन करते हुए सहाई होंवे ऐसी प्रार्थना है।

आभार : गुरूदेव ने अपने आशीर्वाद, आंतरिक प्रेरणा, मार्गदर्शन व अपने पत्रों द्वारा प्रेरित कर इस तुच्छ बुद्धि जीव को यह कार्य करने का बल व बुद्धि प्रदान की है उनका कोटि-कोटि आभार।

प्रेरणास्त्रोत : गुरूदेव के पत्रों से कुछ अंश जो हम सबको सत्संग के लिए जीवन बलिदान करने की प्रेरणा देते हैं संगत की सेवा में दर्ज किये जाते हैं ताकि हम सभी इनसे प्रेरणा लेकर समता की तालीम को फैलाने का प्रयास करें।

1) इस वक्त ईष्या-द्वेष की आग प्रचण्ड हो रही है, इसे बुझाने के लिए समता की रोशनी प्रकट हुई है। तुम गुरमुख जरूर इस रोशनी की किरणें बनकर अपने जीवन और देश को जरूरी प्रकाश करें। हिन्दू कौम की बिखरी हुई हालत को तुमने टांका लगाना है, इस वास्ते इस महाकार्य का बोझ तुम्हारे सिर है।

2) प्रेमी जी ऐसी सत्संग की बुनियाद कायम करें जिससे तमाम नाम जीवित हो जावें, ईश्वर सत्बुद्धि देंवे। ये एक बड़ी जिम्मेवारी

और सेवा का काम है तुम खुद प्रेम करोगे और सत्संग में समता के असूल सुनाओगे तो कई लोगो का भला हो जावेगा।

3) बशश (विशाल) चित्त हो करके सत्संग के प्रोग्राम को ऐसा दृढ करें जिससे समता का स्वरूप प्रकाशक हो करके बहुत सज्जनों को लाभ होवे । प्रेमी जी, जब स्वार्थ में तमाम अवस्था गुजर गई, आप खुद महसूस करते हैं, तो अब परमार्थ का एक विशेष नियम जो सत्संग है उसको निरमान और निष्काम भाव से अपनाएं। इससे अपने आप का भी उद्धार है और संगत का भी उत्साह बढ़ता है

4) हर वक्त सत्संग द्वारा समता का प्रचार करते रहा करें इससे जनता को आनन्द प्राप्त होगा। प्रेमी जी इन बातों को हर वक्त याद रखें समता के असूलों पर खुद चलने की कोशिश करें, दूसरों को आगाह करें । कभी-कभी बड़ा सत्संग भी किया करें और संगत को प्रचार करके सुख दिया करें।

5) पुस्तकों का अच्छी तरह विचार किया करें इस विचार से तमाम वहमात दूर हो जावेंगें । वाणी बड़ी दिलकश है इसकी मुनादी जरूर करें जिससे जनता को लाभ प्राप्त हो । इतना लिट्रेचर पब्लिक की उन्नति की खातिर है। इस वास्ते अधिकारी होकर इसको जागृत करें। हर वक्त प्रेमपूर्वक अपना जीवन बनाएं।

6) प्रेमी जी पुस्तकों का अच्छी तरह स्वाध्याय करें तो आपको पता लग सकेगा कि जमाने में किस निर्मल रोशनी की झलक को अनुभव कर रहे हैं। यह तालीम निर्मल और सरल तमाम वेद-शास्त्रों का निचोड़ प्रभु आज्ञा से आप लोगों के सामने आई है।

इसको अच्छी तरह से विचार करें और अपनी आईन्दा नस्लों के वास्ते सही जिन्दगी का आदर्श कायम करें। प्रभु नित ही सहायक होवें।

7) आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला, ईश्वर सत् विश्वास देवें तमाम संगत को एक-एक करके आशीर्वाद कहनी। तुम्हारी जिन्दगी नमूना होने की बहुत जरूरत है। प्रेमी जी, दुनिया की खिदमत (सेवा) करने वाले तुम सही मायनो में बनोगे तब समता की रोशनी फैलेगी। सत्संग द्वारा अपने जीवन का सुधार करें। हर एक को आगाह करें।

8) समता की रोशनी को फैलाने की कोशिश करें जिससे समता का अंधकार नाश हो जावे प्रेमीजियो ! रामचन्द्र, कृष्णचन्द्र, नानक, बुद्ध, ईसा आदि सब महात्माओं का मिशन समता ही है। मगर हिन्दू इस तालीम से बहुत दूर चले गए हैं। तुमको चाहिए फिर नए सिरे से उसको प्रकाश करें और तमाम जनता का मिशन समता ही हो जावे। इस संसार में आकर कुछ वक्त धर्म की उन्नति की खातिर निकालना चाहिए। जिस जगह भी जाओ समता का प्रचार करो और लोगों के टूटे हुए दिलों को टांका लगाओ।

9) समता हिन्दू धर्म की जड़ है इसको पूरा-पूरा पानी देंवे। तब फिर सूखा हुआ द्रख्त (पेड़) समर (फल) लाएगा। ईश्वर सबको समता बुद्धि देंवे।

10) आशीर्वाद पहुँचे। पत्र मिला। ईश्वर सत्बुद्धि देंवे। प्रेमी जी, तुम सत्संग का प्रोग्राम मुकम्मल बनाए रखें। ईश्वर करेगा तो कामयाबी हो जावेगी। इस खतरनाक जमाने में ईश्वर ही देश को

ख्वाबे गफलत से जगा सकता है तुम जिधर भी जाओ इन पुस्तकों का विचार किया करें। अहिस्ता-अहिस्ता सब ठीक हो जावेगा। देश बहुत मुद्दत से सोया पड़ा है, जल्दी जागना मुश्किल है। इतना जरूरी है कि प्रेमियों की जिन्दगी में कुरबानी का मादा आ जावे तो फिर ईश्वर सफलता बख्शेंगे।

11) सत्संग में अच्छे-अच्छे वाक्यात का विचार किया करें। बिल्कूल बेफिक्र रहें। ईश्वर तुम्हारी कुर्बानी को फल लगायेंगे। कोशिश करते चलो। ईश्वर सत्बुद्धि देंवे। तमाम प्रेमियों को देश और धर्म की जागृति में कोशिश करनी चाहिए हर वक्त इनको अपने हृदय में देंखे। ईश्वर सत्श्रद्धा देंवे। समता की तालीम एक समुद्र है। कोई आलीम फाजिल (विद्वान) इनकारी नही कर सकता। तुमको खुद पहले इसको अपनाना चाहिए, फिर दूसरों की सेवा करनी चाहिए। ईश्वर विश्वास देवे हर वक्त कोशिश धारण करें।

12) तुम्हारा समता का लिट्रेचर इतना है कि कोई मुकाबला नही कर सकता हर एक बात का विचार पूर्ण हो चुका है। सिर्फ तुमको जागृत करना है। देखो फिर कितने लोगों के अन्दर प्रकट हो जावेगा। ईश्वर सबको अधिक प्रेम समता का देंवे और तमाम असूलों को दोहराया करें।

13) दुनियाँ में परहित और परोपकार ही जीवन है। सो तुम तमाम प्रेमी सच्चे दिल से जगत सेवक बनने की कोशिश करते रहें। गुरू का आशीर्वाद तभी प्रफुल्लित होता है कि उनका वचन तन मन करके पालन करें।

14) इस प्रोग्राम को ऐसा दृढ़ बनावें की आम ममता की अग्नि में जले हुए मानुष ठण्डक को प्राप्त कर सकें। ऐसा प्रयत्न तमाम प्रेमियों के वास्ते अधिक जरूरी है।

15) तुम्हारे अन्दर समता के लामहदूद (असीम) दायरे की रोशनी चाहते हैं तुम्हारे अन्दर गुरू भक्ति और ईश्वर परायण जीवन चाहते हैं। तुम क्या प्रेमी सच्चे अधिकारी इस हमारी प्यास को पूर्ण करोगे ? अगर तुमने इनको अपना सच्चा रिफारमर माना है तो जरूरी अपनी कुर्बानी का सबूत देवेंगे। ईश्वर तुमको सामर्थ देवेंगे।

16) हमारी प्रसन्नता तभी हो सकती है जब तुम प्रेमी सच्चे अधिकारी के स्वरूप में देखने में आओगे।

17) तुम्हारी जिम्मेवारी तब ही उतर सकती है जब खुद समता की तालीम को अपनाओ और दूसरों को भी कोशिश करके इस तरफ रागिब करो (लगाओ)। इससे मिलाप प्रकट होता है। किसी वक्त जरूरी देश का भला हो जावेगा। तमाम लिट्रेचर से वाकफीयत (जानकारी) हासिल करें। ईश्वर आनन्द देवे।

ॐ

ब्रह्म सत्यम् **सर्वाधार**

प्रयोजन

देश के भिन्न-भिन्न भागों में स्थापित आश्रमों, सत्संगशालाओं व अन्य स्थानों पर दैनिक, साप्ताहिक, मासिक व त्यौहारिक समता सत्संग होते हैं। सत्संग का आयोजन करने वाले प्रेमियों को सत्संग के कार्यक्रम बनाने में सुविधा रहे एवं वे इस कार्य को विषयानुसार अच्छे से अंजाम दे सकें, इस प्रयोजन के साथ इस पुस्तिका में सत्संग कार्यक्रम बनाए गए हैं जोकि एक से डेढ घंटा सत्संग के लिए पर्याप्त हैं। आवश्यकतानुसार दो सम्बन्धित विषयों के कार्यक्रमों को जोड़कर सत्संग की अवधि को बढाया भी जा सकता है।

'सत्संग एक महान कारज है।' इस महान कारज को अंजाम देने वाले प्रेमियों को यदि इस संस्करण से कुछ सहायता व मार्गदर्शन मिले तो यह प्रयास सार्थक होगा और हमारे ऊपर उनकी कृपालुता होगी।

आवश्यक जानकारी

1. इन कार्यक्रमों में ग्रन्थ श्री समता प्रकाश की जो पृष्ठ संख्या व शब्द संख्या दी गई है वह छठे संस्करण के अनुसार है। पांचवे संस्करण में शब्द संख्या एक कम है व सातवें संस्करण में पेज संख्या 2 अधिक है, शब्द संख्या समान है। अतः शब्द के संकेत बिन्दू से मिलान करें।

2. संकेत बिन्दू से वाणी शुरू होगी।

3. जीवन गाथा भाग 1 व भाग 2 के लिए प्रथम संस्करण सन् 1993 का प्रयोग किया गया है।

4. गुरूदेव ने कहा - पुस्तक के प्रश्न छठे संस्करण के अनुसार हैं।

5. विभिन्न विषयों पर गुरूदेव का उपदेशों का संग्रह व प्रेरक प्रसंग विषय सूची में कार्यक्रमों के अन्त में संलग्न किए गए हैं।

6. सत्संग कार्यक्रमों मे वैराग्य वाणी को शामिल नही किया गया है। वैराग्य वाणी का संकलन पृष्ठ संख्या XV, XVI पर दिया गया है।

7. इसी प्रकार ईश्वर प्रार्थना के सभी शब्द पृष्ठ संख्या xiii, xiv पर दिए गए हैं। आप अपनी सुविधा व समय अनुसार निकाल कर पढ़ सकते हैं।

8. सत्संग के विषय का चयन करने के लिए विषय-सूची से पृष्ठ संख्या xvii से xx देखें, व सत्संग विधि पृष्ठ संख्या Xi पर देखें।

धन्यवाद

धन्यवाद है उन सभी प्रेमियों का जिन्होने इस कार्य को सम्पूर्ण करने में मेरा उत्साहवर्धन व सहयोग किया।

आपके मूल्यवान सुझाव अपेक्षित हैं व अलोचनाओं का स्वागत है।

कार्यक्रम से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की जिज्ञासा के लिए दिए गए फोन नं. पर सम्पर्क कर सकते हैं।

क्षमा प्रार्थना

पुस्तक में हुई त्रुटियों के लिए अल्पज्ञ समझकर क्षमा करें।

समर्पण

यह पुस्तिका समर्पित है मेरे सत् गुरूदेव (महात्मा मंगतराम जी) के चरणों में जिनकी प्रेरणा, आशीर्वाद व मार्गदर्शन द्वारा, मुझ जैसे तुच्छ बुद्धि जीव से यह प्रयास बन पड़ा।

सरब शकत तेरी प्रभ पाई, मैं हूँ बल से हीना ।
अपनी किरपा कर राख लें, तँ सरब स्वामी थीना ॥
गुन ज्ञान कछु न धरूँ, ना मन में तप योग ।
'मंगत' होवें दयाल प्रभ, जब पूरन भाग सँजोग ॥

सुनीता आहूजा, जगाधरी
फोन : 9996175123

ॐ

ब्रह्म सत्यम् **सर्वाधार**

सत्गुरूदेव जी द्वारा प्रतिपादित
समता सत्संग विधि

1. महामन्त्र उच्चारण पाँच बार (सम्मिलित रूप से)

2. मंगलाचरण उच्चारण (सम्मिलित रूप से)

3. ईश्वर प्रार्थना व महिमा का शब्द प्रथम पाँच से सात पंक्तियाँ दोहरी (दो बार वक्ता पढ़े, पीछे-पीछे दो बार संगत पढ़े) फिर एकहरा उच्चारण

4. संगत को सत्संग के विषय की जानकारी संक्षेप में दी जाए

5. विषय से सम्बन्धित वाणी पाठ

6. विषय की वाणी के आधार पर खुला विचार

अथवा

गुरूदेव की जीवन गाथा से उपदेश/ग्रन्थ श्री समता विलास से वचन व अन्य समता साहित्य से गुरूदेव की शिक्षाएं

7. वैराग्य वाणी अथवा अंतिम वाणी

8. आरती एवं समता मंगल का उच्चारण (सम्मिलित रूप से)

9.प्रसाद वितरण

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

महामन्त्र

ओ३म् ब्रह्म सत्यम् निरंकार
अजन्मा अद्वैत पुरखा सर्व व्यापक
कल्याण मूरत परमेश्वराय नमस्तं ।।

मंगलाचरण

नारायन पद बंदिये, ताप तपन होये दूर।
नमो नमो नित चरन को, जो सरब आधार हज़ूर ।।

हिरदे सिमरो नाम को, नित चरनी करो दण्डौत।
सत् शरधा से पूजिये, रख सत्गुरु की ओट ।।

दुबधा मिटे मंगल होये, जो चरन कँवल चित धार।
रिद्ध सिद्ध आवे घर माहीं, पावें जय जयकार ।।

साचा ठाकर सरब समराथा, अपरम शकत अपार।
'मंगत' कीजे बन्दना, नित चरनी बलिहार ।।

सत मारग सोझी मिली, तन मन भया निहाल।
गवन मिटी संसार की, सतगुर मिले दयाल ।।

बार बार करूँ बन्दना, सतगुर चरनी माईं।
'मंगत' सतगुर भेंट से, फेर गरभ नहीं आईं ।।

बार बार करूँ बन्दना, सतगुर चरनी माईं।
'मंगत' सतगुर भेंट से, फेर गरभ नहीं आईं ।।

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

ईश्वर महिमा व ईश्वर प्रार्थना के शब्द ग्रंथ

"ग्रन्थ श्री समता प्रकाश"

"छठे संस्करण" में से दोहरे उच्चारण हेतु

01	0	नमो निरंजन आद जुगादी
02	01	भवसागर में आय के
03	03	आध-व्याधी सब मिटे
04	04	संतन की सत सीख से
05	05	एक नाम प्रभ गाइये
06	07	सत शब्द की सेव से
07	08	निर्भय होय जीव तब
08	09	साची बन्दगी साहब की
09	10	मांगू भीख साहब दरबार
91	102	करें दुहाई साध जन
165	187	पूरन पुरख अपार है
176	198	परम भगत को पाय के
178	200	आज्ञा मानो साहब की
376	463	गुण ज्ञान कछू न धरूँ
479	590	साचा ठाकर जान के
510	625	अनक भाँत उस्तत करूँ
511	626	सरब जगत को छाड़ के
512	627	दीन बधु करतार तूं
515	630	प्रीति साचे नाम की
558	679	सो वडभागी जीव है
559	680	तू ही सत आद जुगादी
560	681	सरब शकत समरथ तूं
561	682	तुम दातार सरब दातारी
562	683	सब जग भरम सरूप है
563	684	माँगू नित-नित कीरती
564	720	सत सरूप नारायण को

पृष्ठ सं०	शब्द संख्या	दोहा संकेत
589	721	आवन जावन सब जगत पसारा
589	722	अन्धमत को राखें प्रभु
592	725	जिसने सब रचना रची
592	726	करता हरता जान के
593	727	अनेक जनम का भरमता
594	728	अवगत रसना नाम की
604	742	सतनाम तत जानयाँ
709	872	जीवन सब सुफला भयो
710	873	मांगू प्रीती चरन की
770	978	सत सिख्या जिसने पाई
770	979	प्रभ के चरन पुकारयो
771	980	पूरन किरपा धार तूं
791	1006	बखशनहार प्रभ बखश दे
792	1007	सरब शक्त दातार तूं
793	1008	तेंरे चरन प्रीती मन रसे
813	1035	प्रभ की कथा विचारिये
816	1039	सत पुरूषारथ धार के
826	1051	साची प्रीति चरण की
826	1052	देह जोवन का मान हरो
827	1053	नाम दीपक परगासयो
864	1101	चरन की धूड़ी में रमूं
865	1102	तुध तुल दाता न कोये
1071	1370	अवगत रूप तूं पसरया
1072	1371	पारब्रह्म परमेश्वर
1129	1441	अत दुस्तर ये संसार है
1130	1442	आसा जग की त्याग के
1130	1443	आसा निर्मल चरन की
1131	1444	अपनी गत मित आप पछाने
1144	1460	अपनी लीला धार के
1144	1461	दीन दयाल प्रभ दया कर
1146	1463	'आपे किरपा करे स्वामी' से साची भगती प्रेम रस

वैराग्य वाणी

पृष्ठ सं०	शब्द संख्या	दोहा संकेत
34	43	कहाँ से आया
49	53	जुग जुग होए अरदास 'लोक कुटुम्ब न संग चले' से
112	126	निर्मल जुगती ज्ञान की
135	155	मौत की याद 'मरना मनो विसार' के
180	203	सत ही सार जगत में जानो 'हाड-मांस का पिंजरा' से
182	204	ठाकर साचा जानकर चार दिनाँ की खेड है' से
185	206	जतन-जतन कर राखियो 'कायी देह का पिंजरा' से
187	207	सत करनी सत रहनी 'राजा दुखिया परजा दुखिया' से
198	220	चार दिसां चौदह भवन को 'नित निमाना नित परदेसी' से
257	300	नाद निरंतर मनुआ छेदे.....
265	310	सतनाम सत साधना
266	312	ऐसो ही एह चक्कर है
390	483	साची प्रीति राख के 'मोह माया गुवार' से
413	520	क्या लीला सतपुरुष की
742	906	प्रभ का सिमरन सार है

वैराग्य वाणी

पृष्ठ सं०	शब्द संख्या	दोहा संकेत
743	980	आसा रूपी अगन ये ये
744	909	ये संसार सराये
745	910	बालापन को जोबन खाये
746	911	रंचक मातर सुख नहीं
746	912	बिख बीजे निसदिन गुनी
747	913	पानी का यह बुदबुदा
1219	1565	घनी सयानफ नित करी
1221	1570	तेरा कोई संगी ना साथी
1221	1571	ऐसे सबने उठके चलना
1226	1585	नाम जपत से भरमन नासे
1233	1606	उठ जाग मुसाफिर रे मन मेरे
1245	1633	अन्तर निर्मल प्रीत लखावे
1246,47	1637-42	पूरन करमी सो बुद्धिमाना से 'प्रभ सिमरन सत्संग परीती' तक
1257	1657	मारग दुस्तर जगत में
1260	1660	अन्तर मनुआं राखिये
1265	1667	अवगत धाम परापत पायो (चौपाई वाले शब्द)
98	110	जग का सब संसा तजे
313	350	अपना सीस त्यागिये ' ना कोई मित्तर संग सहेला' से
443	552	इच्छया चक्कर में भरम रह्या
699	861	संकट रूप ये जगत है

सत्संग कार्यक्रम

विषय सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1	अपनी करनी ही सहायक	1
2	आत्मज्ञान की महिमा	2
3	आज का हमारा जीवन कैसा	3
4	आध्यात्मिक जीवन का आधार त्याग	4
5	आहार का जीवन पर प्रभाव	5
6	आज का हमारा अशुद्ध व्यवहार	6
7	आज का हमारा धर्म/रिवाजक धर्म	7
8	इन्द्रिय भोगों में अतृप्ति	8
9	इच्छा एक महारोग	9
10	ईश्वर की खोज कहाँ करें	10
11	ईश्वर के अनन्त नामों पर विचार	11
12	ईश्वर से क्या माँगना चाहिए	12
13	ईश्वर की याद / प्रार्थना का महत्त्व	13
14	ऐसे थे गुरूदेव हमारे	14
15	कर्मों का कर्ता बनना दुःख का कारण	15
16	कपटी/कलयुगी साधु के लक्षण	16
17	गुरू महिमा व उपकार	17
18	गुरू की आवश्यकता जीव को क्यों है	18
19	गुरू समर्पित जीवन कैसा होता है	19
20	गुरू खेवट संसार का	20
21	गुरू कृपा प्राप्त क्यों नहीं होती ?	21
22	गृहस्थ जीवन सुखी कैसे बने	22
23	गुरमुख व मनमुख पर विचार एवं अंतर	23
24	जगत की बिस्माद रचना/बाहरमुखी व अर्न्तमुखी	24
25	जीवन कैसे जिएं	25
26	जीव की जीवन यात्रा की अवस्थाएं	26
27	जीव की गति कैसे हो सकती है	27
28	जीवन में गुरूमुखता कैसे आए	28

सत्संग कार्यक्रम

विषय सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
29	जीव के बंधन का कारण व निवारण	29
30	जीवन का सुधार कैसे हो	30
31	जीव का स्वभाव कैसे बनता है	31
32	जीव की सांसारिक यात्रा कैसे	32
33	दूसरा साधन सत में दृढ़ता कैसे हो/सत्य की महिमा	33
34	देवी-देवताओं की वास्तविक पूजा कैसे की जाती है	34
35	देह की ममता जीव के आवागमन का कारण	35
36	दुःख रूप संसार/इन्द्रिय भोगों में अतृप्ति	36
37	धर्म का वास्तविक स्वरूप	37
38	धर्म मार्ग में गुरू शिष्य सम्बन्ध	38
39	नाम सिमरन की महिमा व लाभ	39
40	निष्काम कर्म कैसे करें	40
41	निष्काम कर्म मुक्ति का मार्ग	41
42	निर्गुण-सगुण पूजा पर विचार	42
43	निष्काम कर्म/ कर्म बन्धन से छूटने का उपाय	43
44	प्रभु आज्ञा में जीवन कैसे जिएँ	44
45	प्रभु प्रेम मे बाधा, प्रभु प्रेम कैसे प्राप्त हो	45
46	पर वस्तु का हेत दुःखदायी	46
47	पाप कर्म क्या है	47
48	प्रभु शरणागति-लाभ व शरणागति कैसे आए	48
49	परिवार, समाज व देश सेवकों का जीवन कैसा?	49
50	प्रभु अनुराग/सत् परायणता	50
51	प्रभु विश्वास आवश्यकता व लाभ	51
52	बन्धन व मुक्ति का कारण जीव स्वयं	52
53.	बिना भक्ति जीवन	53
54	भक्ति का सही स्वरू	54
55	मन जीतने के उपाय	55
56	मानुष जन्म का उद्देश्य	56
57	मन का विस्तार	57

सत्संग कार्यक्रम

विषय सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
58	मन का मान दुःखदायी	58
59	महामन्त्र की महिमा	59
60	मानुष जन्म की महानता	60
61	मनुष्य का कल्याण कैसे	61
62	वास्तविक तीर्थ यात्रा	62
63	वैर-भाव से हानि	63
64	विचारहीन जीवन	64
65	शुद्ध व्यवहार का लाभ	65
66	सत् धर्म की महिमा	66
67	सत् पुरूषार्थ क्या है व इसकी महिमा	67
68	सत् विवेक की महिमा	68
69	सत्गुरू की कृपा का स्वरूप	69
70	सत् साधु के लक्षण, प्रभाव	70
71	सत्संग की आवश्यकता व लाभ	71
72	सत् सेवा की महिमा	72
73	सादगी	73
74	सदाचारी जीवन कैसे बने व इसके लाभ	74
75	साधु संग की महिमा	75
76	सुख-शान्ति कैसे प्राप्त हो	76
77	सत्कर्म-कौन से कर्म सत्कर्म व सत्कर्म की महिमा	77
78	सत्संग का सही स्वरूप व लाभ	78
79	समता यज्ञ की महिमा	79
80	सत् सेवा की आवश्यकता व सेवा का सही स्वरूप	80
81	संकट रूप मन की कल्पना	81
82	समता ज्ञान की प्राप्ति कैसे हो	82
83	संसार की रचना कैसे ?	83
84	संसार क्या है ?	84
85	सत्कर्मों की महिमा	85
86	समता ज्ञान की महिमा	86

सत्संग कार्यक्रम

विषय सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
87	सकाम कर्म जीव के बन्धन का कारण	87
88	सब दुःख संताप को दूर करने का एकमात्र उपाय	88
89	सिमरन में दृढ़ता कैसे हो ?	89
90	सत्पुरूषों की वास्तिवक पूजा	90
91	स्वार्थ और परमार्थ	91
92	हमारे जीवन का कल्याण	92
93	त्रैगुणी माया का स्वरूप	93

निम्न विषयों पर गुरूदेव के उपदेशों का संग्रह

1	त्-सेवा, सेवा का सही स्वरूप	94,98
2	गुरू की आवश्यकता व महानता	100
3	शरणागत गुरूदेव की ईश्वर द्वारा रक्षा व हाजरी	104
4	कर्मदण्ड के भय से स्वभाव में परिवर्तन	107
5	अशुद्ध व शुद्ध व्यवहार का प्रभाव	109
6	आज की पूजा/आज का धर्म	114
7	जीवन कैसे जिएं / सुख शान्ति कैसे आए	118
8	मनुष्य जीवन का उद्देश्य व जीवन सफल कैसे हो	122
9	तृष्णा महारोग	125
10	प्रभु प्रार्थना की आवश्यकता	129
11	धर्म का वास्तविक स्वरूप एवं लक्षण	132
12	दुःख रूप संसार	134
13	सुख कैसे मिले ?	139
14	सत्संग का लाभ व स्वरूप	143
15	महामन्त्र की महिमा	148
16	आरती एवं मंगलाचरण	161

शुभ अवसरों हेतु क्रमांक 12, 13, 22, 25, 30, 37, 48, 51, 60, 61, 66, 71, 78, 85 व 92 तथा अशुभ अवसरों हेतु क्रमांक 1, 8, 26, 27, 32, 36 पर दिए गए विषयों पर सत्संग किया जा सकता है।

ॐ

ब्रह्म सत्यम् **सर्वाधार**

विषय	: अपनी करनी ही सहायता करने वाली है। देवी देवता रक्षा नही कर सकते
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं० 212, शब्द नं० 236 नित ध्याओ अन्तरगत माई
विचार वाणी	: पेज नं० 999, शब्द नं० 1276 करनी बाँधा जीवड़ा
उपदेश	
जीवन गाथा भाग 1	: पेज नं० 378 से 380 (दूसरा पहरा चौथी लाईन) सत्संग की समाप्ति पर..... पुरूषार्थ करना चाहिए
ग्रन्थ श्री समता विलास	: देवी-देवताओं और ग्रहों की पूजा का सिद्धान्त पेज नं० 146 वचन नं० 21 से 28
अन्तिम वाणी	पेज नं० 397, शब्द नं० 495

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	:	आत्मज्ञान की महिमा
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	:	पेज नं० 01, शब्द (प्रथम) नमों निरंजन आद जुगादी
विचार वाणी	:	पेज नं० 678, शब्द नं० 840 काचे इस वजूद में पेज नं० 679, शब्द नं० 841 ज्ञान सरूप खोजन करो
उपदेश		
जीवन गाथा भाग 2	:	पेज नं० 256 से 259 उनके जाने के बाद परमार्थी जी ने..... बना सकते हो पेज नं० 254 से 255 तुम सब प्रेमी संतो की शरण में..... वचन निकलेंगे

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	**:**	**आज का हमारा जीवन कैसा है/हम कैसा जीवन जी रहे हैं**
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	**:**	**पेज नं० 02, शब्द नं० 01 भवसागर में आए के**
विचार वाणी	**:**	**पेज नं० 1051 से 1053, शब्द नं० 1344 से 1347 अबगत नाम को सिमर के..... साचा धाम विचारयो (कोई एक)**
उपदेश		
जीवन गाथा भाग 2	**:**	**उपदेश नं०79, पेज नं० 304 से 306 जब से संसार को..... आओ हमारे पास**
जीवन गाथा भाग 1	**:**	**पेज नं० 306 से 309 (आखरी लाईन) एक दिन.. ..कृपा करें**

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	:	आध्यात्मिक जीवन का आधार त्याग, त्याग की आवश्यकता व स्वरूप
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	:	पेज नं० 865, शब्द नं० 1102 तुध तुल दाता न कोय
विचार वाणी	:	पेज नं० 93, शब्द नं० 104 अनहद गरजे गगन में

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1	:	पेज नं० 186 से 189 सत्उपदेश प्रेमियो..... प्रशाद बांटा गया
गुरूदेव ने कहा	:	पेज नं० 179, प्रश्न नं० 325 से 327
जीवन गाथा भाग 2	:	पेज नं० 384 से 389 सत्उपदेश अमृत नं० 115

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	:	आहार का जीवन पर प्रभाव/ शुद्ध आहार की आवश्यकता व लाभ
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	:	पेज नं० 515, शब्द नं० 630 प्रीती साचे नाम की
विचार वाणी	:	पेज नं० 305, शब्द नं० 368 सादा जीवन जिसका
	:	पेज नं० 306, शब्द नं० 369 जीभा की रसना माहीं

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1	:	1. पेज नं० 260 से 268 तक, नं० 122 - झंग मधियान गाड़ी 11 बजे.. ...खींचता है 2. पेज नं० 159 से 160, नं० 70 मारतंड भवन..... माँस इंसान...खूब पड़ा
ग्रन्थ श्री समता विलास	:	सादगी पेज नं० 100 वचन 21 से 26

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : आज का हमारा अशुद्ध व्यवहार एवं अशुद्ध व्यवहार का प्रभाव

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 178, शब्द नं० 201
आज्ञा मानो साहब की

विचार वाणी : पेज नं० 308, शब्द नं० 372
अशुद्ध ब्यौहार

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : 1) पेज नं० 144 से 145
जैसा स्वभाव..... देने वाली होवे

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : आज का हमारा धर्म/रिवाजक धर्म

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 563, शब्द नं० 684 मांगू नित नित

विचार वाणी : पेज नं० 1027, शब्द नं० 1312-13 अत बडयाई शब्द की

उपदेश

ग्रन्थ श्री समता विलास : समता धर्म पेज नं० 188, वचन नं० 41-46

जीवन गाथा भाग (1) : 1. पेज नं० 306-309 एक दिन कृपा करें

: 2. पेज नं० 155-156 जब से दृढ़ता बख्शे

: 3. पेज नं० 104 पर 14वीं लाईन में, इस तप के दौरान..... पेज नं० 105 पर नजदीक आ रहा है

: 4. पेज नं० 106 से 108 आखरी चौथी लाईन में शुभ स्थान..... वैसा ही करेंगे।

जीवन गाथा भाग (2) : पेज नं० 120-121 बाबे की बाणी मौज में

गुरूदेव ने कहा : पेज नं० 198 प्रश्न पेज नं० 368

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : इन्द्रिय भोगों में अतृप्ति

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 404, शब्द नं० 506
जैसी मन की भावना

विचार वाणी : पेज नं० 444, शब्द नं० 553
झूठ की प्रीति त्याग के

उपदेश

जीवन गाथा भाग 2 : उपदेश नं० 185, पेज नं० 469,
जीव शरीर..... पेज नं०
471, जीवन सुख सार
: उपदेश नं० 38, पेज नं० 100,
जीव ने..... पेज नं० 103,
प्रसाद बांटा गया

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : इच्छा एक महारोग व इससे छूटने का उपाय

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 826, शब्द नं० 1051
साची प्रीति चरण की

विचार वाणी : पेज नं० 441, शब्द नं० 550
माया छाया दुस्तर में
पेज नं० 12, शब्द नं० 14
अन्तर्गत सिमरन करो

उपदेश

ग्रन्थ श्री समता विलास : वासना विवेक
पेज नं० 289 से 290, वचन
नं० 5, 6, 11 से 18, 22

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 131, 132 सउपदेश
हर एक जीव.....बुद्धि देंवे
पेज नं० 235
शरीर रूपी..... पूर्ण होती है

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 131 से 133
प्रसंग नं० 44
शरीर यात्रा.....प्रशाद बाँटा गया

गुरूदेव ने कहा : विकारों से छुटकारा
पेज नं० 113
प्रश्न नं० 210 से 212

उपदेशों का संग्रह : इसी पुस्तक की पृष्ठ संख्या 125
से 128 देखें

ॐ

ब्रह्म सत्यम्   सर्वाधार

विषय	**: ईश्वर की खोज कहाँ करें / ईश्वर का निवास कहाँ है**
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	**: पेज नं० 592, शब्द नं० 725 जिसने सब रचना रची**
विचार वाणी	**: पेज नं० 616, शब्द नं० 753 सो है गुरूमुख सो वेद आचारी**

उपदेश

जीवन गाथा भाग 2	**: पेज नं० 308, प्रश्न – महाराज जी......... अनुभव कर सकेंगे**
गुरूदेव ने कहा	**: संसार, शरीर, जीव तथा ईश्वर का स्वरूप पेज नं० 4 से 9 प्रश्न नं० 13 से 17 व 19 से 25**

ॐ

ब्रह्म सत्यम्   सर्वाधार

विषय	: ईश्वर के अनन्त नाम है इन नामों का आधार व महिमा क्या है।
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं० 9, शब्द नं० 10 माँगू भीख साहब दरबार
विचार वाणी	: पेज नं० 107 से 109, शब्द नं० 120 से 122 सत् नाम की असलियत..... देव गुनी मुनी जपें
उपदेश	:
गुरूदेव ने कहा	: नाम स्मरण, ध्यान, योग पेज नं० 128-129, प्रश्न नं० 231 से 232

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : ईश्वर से क्या माँगना चाहिए ?

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 1129, शब्द नं० 1441
अत दुस्तर ये संसार है

विचार वाणी : 1. पेज नं० 594, शब्द नं० 728
अबगत रसना नाम की
2. पेज नं० 379, शब्द नं० 469
रसना तेरे नाम की

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : 1. पेज नं० 46-48
पश्चिमी पंजाब में.....पहुँच जाता है
2. पेज नं० 250-252
सतपुरूष दिन के समय.....सोच में पड़ गया

गुरूदेव ने कहा : 1. मानव जीवन का ध्येय
पेज नं० 46, प्रश्न नं० 96 से 98
: 2. विविध प्रश्न
पेज नं० 207 प्रश्न नं० 386-387
: 3. विविध प्रश्न
पेज नं० 213 प्रश्न नं० 395

ग्रन्थ श्री समता विलास : ईश्वर भक्ति की प्राप्ति, पेज नं० 69-71, वचन नं० 109-113

अंतिमवाणी/ईश्वर प्रार्थना : पेज नं० 244, शब्द नं० 285
सहा आनंद की खानी

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: ईश्वर की याद / प्रार्थना का महत्व या आवश्यकता
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं. 558, शब्द नं० 679 सो वड़भागी जीव है
विचार वाणी	: पेज नं० 177, शब्द नं. 200 अनन्त सरूप हो पसरया पेज नं० 249, शब्द नं. 291 जाँ से उपजे.....

उपदेश

ग्रन्थ श्री समता विलास	: ईश्वर भक्ति की प्राप्ति पेज नं० 56 वचन नं० 76 से 81 पेज नं० 148-149 वचन नं० 32 से 34 व 36 से 40
गुरूदेव ने कहा	: ईश्वर विश्वास व श्रद्धा पेज नं० 47-50, प्रश्न नं० 97, 98
ईश्वर प्रार्थना के महत्व सम्बन्धी सुक्तियाँ	: इसी पुस्तक की पृष्ठ संख्या 129 से 131 देखें

ॐ

ब्रह्म सत्यम्　　　　　　　　सर्वाधार

विषय : ऐसे थे गुरूदेव हमारे / सत् गुरूदेव का आदर्श जीवन

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 08, शब्द नं० 09
साची बंदगी साहब की

विचार वाणी : पेज नं० 329, शब्द नं० 400
आत्म तत परबीन गुरू

उपदेश
जीवन गाथा भाग 2 : उपदेश नं० 47, पेज नं० 150 से 154
प्रेमी जी......सत्संग समाप्त हुआ

ऐसी करनी कर चलो : गुरूदेव का आदर्श जीवन पृष्ठ संख्या 46 से 54

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : कर्मों का कर्ता बन अभिमान करना दुःख का मूल कारण

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 2, शब्द नं० 2 नित हूँ मैं सरनागती

विचार वाणी : पेज नं० 19, शब्द नं० 24 कर्म वासना भरम जीव को

उपदेश :

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 90 से 91 भक्त जी..... कदर कर सकते हैं

ग्रन्थ श्री समता विलास : वासना विवेक पेज नं० 290 से 292 वचन नं० 6 से 12

गुरूदेव ने कहा : पेज नं० 30 से 32 मन बुद्धि तथा अहंकार प्रश्न नं० 69 से 76 तक

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : कपटी कलयुगी साधु के
लक्षण, प्रभाव, परिणाम

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 792, शब्द नं० 1007
सरब शकत दातार तूं

विचार वाणी : पेज नं० 642, शब्द नं० 795
सच वरताए कूड़ मल हरे
पेज नं० 643, शब्द नं० 796
कपटी साधु से उत्तम शिला
जान

उपदेश

ग्रन्थ श्री समता विलास : गुरू पद का सिद्धान्त
पेज नं० 239 वचन नं० 6, 7,
9, 11, 13, 15, 26, 27, 28

जीवन गाथा भाग (1) : 1. पेज नं० 415
एक बूढ़ा साधु.....दिया करो
: 2. पेज नं० 378-380
दूसरा पहरा - चौथी पंक्ति
सत्संग की समाप्ति पर....
पुरूषार्थ करना चाहिए
: 3. पेज नं० 43 व 44
भक्त जी.... उसे किसी वक्त पढना
:4.पेजनं०83
इस तप के दौरान.....
दावाएखुई

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : गुरू महिमा व उपकार

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पृष्ठ संख्या 1017 शब्द नं० 1300
साची विरह प्रभ चरण की

विचार वाणी : पृष्ठ संख्या 333 शब्द नं० 405
गुर महिमा अपरम अपार

उपदेश

जीवन गाथा (भाग 1) : पृष्ठ संख्या 449 से 451 तक
उपदेश नं०
इस मानुष.....वाले नही है

जीवन गाथा (भाग 2) :1. पृष्ठ संख्या 11 से 15 तक
उपदेश नं० 04
संसार एक.....संसार का गुरू है
2. पृष्ठ संख्या 22, 23
प्रेमी जी जब तक.. ...याद करोगे

अंतिम वाणी - पृष्ठ संख्या 1261 शब्द नं० 1662
घड़ी अमोलक सो गुनी

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : गुरू की आवश्यकता जीव को क्यों है

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 592, शब्द नं० 726
करता हरता जान के

विचार वाणी : पेज नं० 1035, शब्द नं० 1323
मारग सहज पछान कर

उपदेश

जीवन गाथा (भाग 2) : 1. पृष्ठ संख्या 215 से 217
प्रेमी ने अर्ज की कि महाराज जी..... सिदक वालों के बेड़े पार हैं

विषय सम्बन्धित उपदेशों का संग्रह : इसी पुस्तक में पृष्ठ संख्या 100 से 103 तक देखें

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : गुरू समर्पित जीवन कैसा होता है

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 5, शब्द नं० 5
एक नाम प्रभ गाईये

विचार वाणी : पेज नं० 1037, शब्द नं०
1326
रहनी वाले गुर मिले

उपदेश :

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 260 से 264
गंगोठिया दरबार.....आधार बनते
है

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 109 से 111
कुठाला निवास से.. आदर्श
कायम किया

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : गुरू खेवट संसार का

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 865, शब्द नं० 1102
तुध तुल दाता न कोय

विचार वाणी : पेज नं० 333, शब्द नं० 405
गुर महिमा अपरम अपार है

उपदेश

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 288, प्रसंग नं० 76,
भगत जी को शिक्षा.. दवा
और परहेज़ लाज़मी है।

जीवन गाथा भाग 1 : 1) पेज नं० 120 से 121
एक समय .. ठहरना चाहिए
2) पेज नं० 127 से 128
इस जगह..... सलीम बक्ो ं ।
3) पेज नं० 191 से 192
(आखिरी लाईन)
कत्राल में..... देख लो।
4) पेज नं० 194 से 195
तरनतारन में..... प्रसन्न हो रहे
हैं
5) पेज नं० 225 से 226
कृपा दृष्टि का असर..... स्वीकार
कर लिया

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : गुरू कृपा प्राप्त क्यों नहीं होती,
गुरू कृपा प्राप्त करने के लिए
स्वयं का पुरूषार्थ जरूरी ।

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 1130, शब्द नं० 1442
आसा जग की त्याग के

विचार वाणी : पेज नं० 69, शब्द नं० 75
धन्न सतगुरू धन्न सिख है

उपदेश

गुरूदेव ने कहा : पेज नं० 357, गुरूदेव की अपने शिष्यों से अपेक्षा पत्र नं० 62

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 276 से 278
श्री महाराज जी रात को.....
बीस दिन ठहरेंगे

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: गृहस्थ जीवन सुखी कैसे बने
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं० 604, शब्द नं० 742 सत्नाम तत्त जानयाँ.....
विचार वाणी	: 1. पेज नं० 654, जीव उद्धारक करम ये..... 2. पेज नं० 104, शब्द नं० 117 : प्रभ अपने से मांगयो
उपदेश :	
जीवन गाथा भाग 2	: पेज नं० 445 व 451 165 नं० सउपदेश हर एक जीव.....अर्पण कर सकें
गुरूदेव ने कहा	: संसार में रहने का तरीका पेज नं० 81-82, प्रश्न नं० 156, 157, 161 पेज नं० 83-85, प्रश्न नं० 164 से 167
उपदेशों का संग्रह	: इसी पुस्तक की पृष्ठ संख्या 118 से 121 देखें।

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : गुरमुख व मनमुख पर विचार एवं अंतर

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 827, शब्द नं० 1053 नाम दीपक परगासयों

विचार वाणी : पेज नं० 103, शब्द नं० 116 साच गति गुरमुख ले
पेज नं० 104, शब्द नं० 117 प्रभ अपने से मांगयो

उपदेश :

जीवन गाथा भाग 1
गुरूदेव द्वारा भक्त जी की मनमुखता दूर करने सम्बन्धी संवाद : पेज नं० 444 से 446 एक दिन... ..शर्मिन्दा हुए

जीवन गाथा भाग 2 : 1. पेज नं० 186 से 190 55 नं० सत् उपदेश शरीर को धारण.....मुक्ति आप करें
: 2. पेज नं0 293 से 295 आज भक्त..... नही विचार सकते

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	:	जगत की बिस्माद रचना/बाहरमुखी व अर्न्तमुखी जीवन
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	:	पेज नं० 176, शब्द नं० 199 परम भगत को पाय के
विचार वाणी	:	पेज नं० 1106, शब्द नं० 1411 नित ही नित विचार करो
उपदेश		
जीवन गाथा भाग 1	:	पेज नं० 92 से 96 शाम के समय.....तशरीफ ले गए
जीवन गाथा भाग 2	:	पेज नं० 40 भगत जी ने पूछा..... प्रतीत प्रीत बखखों

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : जीवन कैसे जिएं

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 7, शब्द नं० 7
सत शबद की सेव से

विचार वाणी : पेज नं० 904, शब्द नं० 1153
पाप कूप भसमत करो

उपदेश :

समता विलास : सत् जीवन नियम निर्णय
पेज नं० 430 वचन नं० 1 से 12

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 281 से 283
प्रश्न-प्रेमी मुंशी राम.....पैदा होता है

उपदेशों का संग्रह : इसी पुस्तक की पृष्ठ संख्या 118 से 121 देखें

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: जीव की जीवन यात्रा किन-किन अवस्थाओं में व कैसे गुजरती है
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं० 595, शब्द नं० 730 माया चक्कर को देख के
विचार वाणी	: पेज नं० 450, शब्द नं० 560 बिना विचार न पाईये
उपदेश जीवन गाथा भाग 2	: 1. पेज नं० 100 से 103 उपदेश नं० 38 जीव ने..... प्रशाद बांटा गया 2. पेज नं० 270 से 274 यह विचार हो ही रहा था..... गति के वास्ते खुद भी सोचो 3. पेज नं० 431 से 432 उपदेश नं० 148 हन्द्वानी 11 मार्च 1953..... बुद्धि अनुराग देवे

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : जीव की गति कैसे हो सकती है

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 810, शब्द नं० 1031
अनन्त शकत भगवन्त तू

विचार वाणी : पेज नं० 416, शब्द नं० 523
पारब्रह्म परम परमेश्वर

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 221 से 224
उपदेश नं०104 अपना सुधार.....
आप अच्छा कर

मेरे गुरूदेव : पेज नं० 107 से 108 (पंजा साहिब वृतांत)
कोई बीस मिनट में..... आत्मा ही है

ग्रन्थ श्री समता विलास : भूत-प्रेत व पित्तर का सिद्धान्त
पेज नं० 158, वचन नं० 19 से 25
(2)

विचार वाणी : पेज नं० 417, 504
शब्द नं० 524, 618
जैसा वक्खर खाटया
जीवन में जो कुछ किया

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 140 से 142
प्रेमी करोड़ीमल. ...कृपा की
: पेज नं० 115 से 116
उपदेश नं० 41
जन्म से लेकर... ..लाभ इसी में है

गुरूदेव ने कहा : जीव गति पेज नं० 168 प्रश्न नं० 302 व 304

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: जीवन में गुरूमुखता कैसे आए व सच्चे गुरूमुखों का जीवन
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं० 563, शब्द नं० 684 माँगू नित नित कीर्ति
विचार वाणी	: पेज नं० 68, शब्द नं० 74 अपने मन की भरमना धोए
उपदेश	
जीवन गाथा भाग2	: पेज नं० 258 से 264 परमार्थी जो चुप..... आधार बनते है
जीवन गाथा भाग 1	: पेज नं० 132 से 134 इस जगह निवास..... सम्भाला ही नही जाएगा

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : जीव के बंधन का कारण व निवारण

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 512, शब्द नं० 627
दीनबन्धु करतार तूं

विचार वाणी : पेज नं० 438, शब्द नं० 547
बंधन सरूप निधान

विचार बाणी 2 : पेज नं० 439, शब्द नं० 548
सतसरूप भगवान बिन
बंधन सरूप का सुनो विवेक

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 275 से 277
एक दिन साफ कर दंते थे

गुरूदेव ने कहा : पेज नं० 32 से 38, दुःख और सुख प्रश्न नं० 79 से 84

उपदेश 2

ग्रन्थ श्री समता विलास : पेज नं० 288, वचन पेज नं० 4 से 11

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : जीवन का सुधार कैसे हो

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 176, शब्द नं० 199
परम भक्त को पाये के

विचार वाणी : पेज नं० 500, शब्द नं० 614
अविनाशी शब्द पहचानया

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 221 से 224 प्रसंग नं० 104
अपना सुधार
जागृत..... अपना आप अच्छा कर

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 384 से 389
प्रसंग नं० 115 शरीर रूपी....
उन्नति कर सके

गुरूदेव ने कहा : पेज नं० 84, प्रश्न नं० 165 से 169

ग्रन्थ श्री समता विलास : पेज नं० 430 सत् जीवन नियम निर्णय
वचन नं० 1 से 12

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	:	जीव का स्वभाव कैसे बनता है?
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	:	पृष्ठ संख्या 792, शब्द नं० 1007 सर्व शकत दातार तूं
विचार शब्द	:	पेज नं० 417, शब्द नं० 524 जैसा वक्खर खाटया
	:	पेज नं० 360, शब्द नं० 442 वार पार सूझे नहीं
उपदेश		
जीवन गाथा भाग 1	:	पेज नं० 142 से 145 तक सत् उपदेश अमृत वास्तव में... ....सुख देने वाली होवे।
गुरूदेव ने कहा	:	संस्कार और स्वभाव पेज नं. 107 से 109, प्रश्न नं० 199, 200, 202
ग्रन्थ श्री समता विलास	:	वासना विवेक पेज नं० 294 वचन 16 से 18

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : जीव की सांसारिक यात्रा कैसे व्यतीत होती है / दुःखदायी व असत संसार

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पृष्ठ संख्या 816 शब्द नं० 1039 सतपुरूषार्थ धार के

विचार वाणी :

असत संसार : पृष्ठ संख्या 443 शब्द नं० 552 इच्छया चक्कर में भरम रह्या

यात्रा कैसे व्यतीत होती है? : पृष्ठ संख्या 444 शब्द नं० 553 झूठ की प्रीति त्याग के

उपदेश

जीवन गाथा (भाग 1) : पृष्ठ संख्या 361 से 363, सतसंग, जीव शरीर..... सुमति देवे पृष्ठ संख्या 441 से 442, जीव शरीर ..निर्मल बुद्धि देवें

जीवन गाथा (भाग 2) : पृष्ठ संख्या 46 से 49, उपदेश नं० 15, सतउपदेश अमृत

गुरूदेव ने कहा : पृष्ठ संख्या 102 से 103, प्रश्न नं० 192-193

ग्रन्थ श्री समता विलास : भोगवाद स्थिति, पृष्ठ संख्या 508 वचन नं० 6 से 10

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: दूसरा साधन सत में दृढ़ता कैसे हो/सत्य की महिमा
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं० 1131, शब्द नं० 1444 अपनी गत मित आप पछाने
विचार वाणी	: पेज नं० 179, शब्द नं० 202 खिमा गरीबी दीनता इसे 9वें दोहे (सत ही मूल सरब परकाशे) से भी शुरू कर सकते हैं
उपदेश	
ग्रन्थ श्री समता विलास	: पेज नं० 103, वचन नं० 33 से 48 तक या 56 तक (समयानुसार)
गुरूदेव ने कहा	: पेज नं० 216, विविध प्रश्न नं० 402,
जीवन गाथा भाग 1	: पेज नं० 268, प्रेमी ने अर्ज की..... नहीं हो सकेगा।
यादगार पल	: पेज नं० 38, 39 गंडु राम जी जगाधरी का संस्मरण

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : देवी-देवताओं की वास्तविक पूजा कैसे की जाती है

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 594, शब्द नं० 728
अबगत रसना नाम की

विचार वाणी : पेज नं० 999, शब्द नं० 1277
देवी देव की साधना

उपदेश :

ग्रन्थ श्री समता विलास : मूर्ति पूजा का सिद्धान्त
पेज नं० 138 से 143, वचन नं० 2, 6, 7, 9 व 22 से 26

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 116 से 119
सत् उपदेश अमृत
प्रेमियों..... निर्मल बुद्धि
बख्शें

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : देह की ममता जीव के आवागमन का कारण व दु:ख का मूल

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 91, शब्द नं० 102 करें दुहाई साध जन

विचार वाणी : पेज नं० 787, शब्द नं० 1000 देह की ममता न मिटे

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 234 से 236 देह मद – जीव निर्भय.. ..दीक्षा ग्रहण की

जीवन गाथा भाग 2 : उपदेश नं० 75, पेज नं० 252 से 255, गुरूदेव व भक्त जी का संवाद देह ममता के सम्बन्ध में (साबुन, तेल की मनाही) (2)

विचार वाणी : पेज नं० 829, शब्द नं० 1055 देह भरवासा राख के

उपदेश

ग्रन्थ श्री समता विलास : पेज नं० 410, वचन नं० 7 से 9 पेज नं० 511 वचन नं० 9

गुरूदेव ने कहा : पेज नं० 93, प्रश्न नं० 177 शरीर तथा संसार से मुक्ति का मार्ग पेज नं० 100 से 104, प्रश्न नं० 191 से 193 मोह ममता प्रेम

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : दुःख रूप संसार/इन्द्रिय भोगों में अतृप्ति

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 432, शब्द नं० 540
निर्मल तत पहचान के

विचार वाणी : पेज नं० 675, शब्द नं० 836
बिनसन हारे जगत से

उपदेश

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 270 (तीसरी लाईन)
से पेज नं० 275
यह विचार हो रहा था.....
मुक्ति कहाँ

ग्रन्थ श्री समता विलास : पेज नं० 592, वचन नं० 6 से 14

उपदेशों का संग्रह : इसी पुस्तक की पृष्ठ संख्या 134 से 138 देखें।

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : धर्म का वास्तविक स्वरूप

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं. 91, शब्द नं० 102
करें दुहाई साध जन

विचार वाणी : पेज नं० 38, शब्द नं० 45
रंचक धर्म जिस जानया
पेज नं० 468, शब्द पेज नं० 580
मारग धर्म में जो गए

उपदेश :

ग्रन्थ श्री समता विलास : पेज नं० 169 प्रश्न नं० 1, 2,
6, 10, 29 से 31, 35

जीवन गाथा भाग (1) : 1. पेज नं० 214-216, उपदेश
नं० 101
धर्म की महिमा..... धर्म पर
चलो
2. पेज नं० 182, सत् उपदेश
अमृत प्रेमियों बख्शे बुद्धि सबको

अन्य उपदेशों का संग्रह : इसी पुस्तक में पृष्ठ संख्या
132 से 133

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : धर्म मार्ग में गुरू शिष्य सम्बन्ध

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 165, शब्द नं० 187
पूरन पुरख अपार है

विचार वाणी : पेज नं० 67, शब्द नं० 73
मन अपना निर्मल करे।
पेज नं० 68, शब्द नं० 74
अपने मन की भरमना धोए

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : 1. प्रसंग नं० 15, पेज नं० 21 से
23 तक
23 मार्च 1938..... जैसी
आपकी इच्छा
: 2. पेज नं० 372 (ii) से 373 तक
प्रेमी किशोरी लाल.... तुम्हारी
किस्मत
: 3. पेज नं० 449 से 451 तक
इस मानुष..... सत्संग समाप्त हुआ

ग्रन्थ श्री समता विलास : पेज नं० 243 से 246 गुरू पद
का सिद्धान्त
वचन नं० 16 से 24

मेरे गुरूदेव : पेज नं० 331 से 334 तक
जहाँ देश की दुर्दशा.....
किसी के भी नही

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : नाम सिमरन की महिमा व लाभ

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पृष्ठ संख्या 588 शब्द नं० 720
सत् सरूप नारायन के

विचार वाणी : 1. पृष्ठ संख्या 352 शब्द नं० 432
सरब कला समरथ स्वामी
2. लाभ : पृष्ठ संख्या 432
शब्द नं० 540 निर्मल तत्त
पहचान के

उपदेश

जीवन गाथा (भाग 1) : 1. पृष्ठ संख्या 86 से 88 उपदेश
नं० 40
एक दिन.....समय पूरा कर
लिया करो
2. पृष्ठ संख्या 232 से 233
उपदेश नं० 112 नाम की महिमा
मन अति चंचल..... लीन हो गया
3. पृष्ठ संख्या 376 से 377
(आखिरी पंक्ति) से स्थान पर
पहुँच कर से..... दृढ़ता बख्खो

ग्रन्थ श्री समता विलास : पृष्ठ संख्या 125-सत् सिमरन
वचन नं० 96 से 102 व 104

गुरूदेव ने कहा : नाम स्मरण ध्यान योग पृष्ठ
संख्या 127 से 136 प्रश्न नं०
229, 230, 235 से 247 तक

यादगार पल : पेज नं० 5 से 7
एक सन्यासी..... देने को तैयार हूँ

ॐ

ब्रह्म सत्यम्　　　　　　　　　सर्वाधार

विषय : **निष्काम कर्म कैसे करें/निष्काम कर्म जीवन में कैसे आए**

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : **पेज नं० 9, शब्द नं० 10**
माँगू भीख साहब दरबार

विचार वाणी : **पेज नं० 880, शब्द नं० 1122**
नित मतवाल शबद के माहीं

उपदेश

जीवन गाथा भाग 2 : **पेज नं० 103 से 105**
श्री महाराज जी ने........विचार चलते रहे

गुरूदेव ने कहा : **नाम सिमरन, ध्यान तथा योग**

1) **पेज नं० 140, प्रश्न नं० 255**
2) **पेज नं० 139 प्रश्न नं० 252**

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : निष्काम कर्म मुक्ति का मार्ग / निष्काम कर्म का सरूप

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 3, शब्द नं० 3 आध व्याधी सब मिटे

विचार वाणी : पेज नं० 843, शब्द नं० 1074 ममता देह की नाश होवे

उपदेश :

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 88 से 92 सत्संग समाप्त.. नमस्कार योग्य है

गुरूदेव ने कहा : पेज नं० 124 से 126 धर्म का स्वरूप तथा निष्काम कर्म प्रश्न नं० 222 से 227 तक

ग्रन्थ श्री समता विलास : वासना छेदन विवेक पेज नं० 303 से 304 वचन नं० 37 से 39

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : निर्गुण-सगुण पूजा पर विचार

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 4, शब्द नं० 4
सन्तन की सत सीख से

विचार वाणी : पेज नं० 683, शब्द नं० 845
उलट सुरती अन्तर करें

उपदेश

गुरूदेव ने कहा : निर्गुण-सगुण पूजा

1) **पेज नं० 157-158, प्रश्न नं० 284 से 286**
2) **कीर्तन पेज नं० 154, प्रश्न नं० 281 से 282**
   कीर्तन

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : निष्काम कर्म कर्म बन्धन से
छूटने का उपाय

ईश्वर प्रार्थना व महिमा :पेज नं० 91, शब्द नं० 102
करें दुहाई साध जन

विचार वाणी : पेज नं० 474, शब्द नं. 586
माया जाल से छूटिये

उपदेश

ग्रन्थ श्री समता विलास : आत्मचिंतन
1. पेज नं० 629
वचन नं०11 से 15
: 2. पेज नं० 625
वचन नं० 1 से 10

जीवन गाथा भाग (1) : पेज नं० 230 से 232
सत् उपदेश दोरांगला
प्रेमी जीवों.....जीव की फांस

यादगार पल : पेज नं. 102, 103

गुरूदेव ने कहा : धर्म का स्वरूप पेज नं० 124 से
126 प्रश्न नं० 222 से 227

अंतिम वाणी : पेज नं० 659, शब्द नं. 818
दया धर्म संतोख मत

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: प्रभु आज्ञा में जीवन जीना कैसा होता है व इसका क्या प्रभाव पड़ता है
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं० 404, शब्द नं० 507 आसा एको चरन की
विचार वाणी	: पेज नं० 419, शब्द नं० 526 सत् सरूप पहचान से
उपदेश	
जीवन गाथा भाग 1	: 1. पेज नं० 372 (10वीं लाईन) से 372 (ii) एक रोज सत्संग की समाप्ति 2.पेज नं० 231 से 232 प्रेमियों परम प्रेमियो परम् शांति..... निष्काम कर्म किये जाओ

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: प्रभु प्रेम मे बाधा, प्रभु प्रेम कैसे प्राप्त हो
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं० 1130, शब्द नं० 1443 आसा निर्मल चरण की
विचार वाणी	: पेज नं० 117, शब्द नं० 131 प्रेम सम न बंदगी
उपदेश	
गुरूदेव ने कहा	: 1. मोह ममता और प्रेम पेज नं० 100 से 105, प्रश्न नं० 189, 190, 194 से 197 2. पेज नं० 351, पत्र संख्या 57-प्रभु प्रेम कब प्राप्त होता है
ग्रन्थ श्री समता विलास	: ईश्वर प्रेम, पेज नं० 610
अंतिम वाणी	: पेज नं० 133, शब्द नं० 152 प्रेम यानि ला-गर्ज मोहब्बत जिसके मन में..

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : पर वस्तु का हेत दुःखदायी व पाप का कारण

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 1071, शब्द नं० 1370 अबगत रूप तूं

विचार वाणी : पेज नं० 905, शब्द नं० 1154 सत् करनी नर कीजिए

उपदेश

जीवन गाथा भाग 2 : उपदेश नं० 80, पेज नं० 310 संसार रूपी.. पेज नं० 313 पवित्र बुद्धि बख्खों

ग्रन्थ श्री समता विलास : जीवन यात्रा पेज नं० 454, वचन नं० 1 से 8

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : पाप कर्म क्या है, पापकर्मी का जीवन व कर्म अमिट

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 813, शब्द नं० 1035 प्रभ की कथा विचारिये

विचार वाणी : पेज नं० 362, शब्द नं० 445 करम निबेड़ा नित करो

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 208 से 210 उपदेश नं० 98 फिल्सफा स्वभाव...

ग्रन्थ श्री समता विलास : बुद्धि की पूर्ण व अपूर्ण अवस्था का निर्णय पेज नं० 199 से 201, वचन नं० 7 से 11

गुरूदेव द्वारा 'कर्म अमिट' पर सुनाया गया प्रसंग : इसी पुस्तक में पृष्ठ संख्या 107-108 देखें

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : प्रभु शरणागति-लाभ व
शरणागति जीवन में कैसे आए

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पृष्ठ संख्या 1130 शब्द नं० 1442
आसा जग की त्याग के

विचार वाणी : 1. पृष्ठ संख्या 590 शब्द नं० 723
परमेश्वर को सिमरिये
3. पृष्ठ संख्या 591 शब्द नं० 724
परम धरम संसार में

उपदेश

जीवन गाथा (भाग 1) : उपदेश 150, 1. पृष्ठ संख्या 371 से
372 (ii) तक संकेत 7 फरवरी की
सुबह..... पसंद किया
(12वीं लाईन तक)

जीवन गाथा (भाग 2) : 1. पृष्ठ संख्या 64, अमृत वचन नं०
24, संसार की गर्दिश.....
सतबुद्धि देवें
2. पृष्ठ संख्या 82 से 83
उपदेश नं० 32
इस द्वंद से..... सत् अनुराग देवे।
(7वीं लाईन तक)

गुरूदेव ने कहा - : ईश्वर परायणता पृष्ठ संख्या 75,
79 प्रश्न नं० 148, 154, 155

शरणागति से सम्बन्धित : इसी पुस्तक की पृष्ठ संख्या 104 से

गुरुदेव के जीवन के प्रसंग: 106 देखें

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : परिवार, समाज व देश की सेवा
एवं सुधार का दम भरने वालों का
जीवन कैसा है ? व कैसा होना
चाहिए ?

ईश्वर प्रार्थना व महिमा :पेज नं० 510, शब्द नं० 625
अनक भाँत उस्तत करूँ

विचार वाणी : पेज नं० 1051, शब्द नं० 1344
अवगत नाम को सिमर के
पेज नं० 1052, शब्द नं० 1345
दुर्मत माया धार के।

उपदेश

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 452 से 458
168 नं० सउपदेश

गुरूदेव ने कहा : 1. पेज नं० 301 पत्र संख्या 2
अमली जीवन बनाने की प्रेरणा
: 2. पेज नं० 301 पत्र संख्या 3
केवल विचारों द्वारा.....

ग्रन्थ श्री समता विलास : पेज नं० 503 राम राज्य का स्वरूप
वचन नं० 1 से 15

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : प्रभु अनुराग/सत् परायणता

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पृष्ठ संख्या 589 शब्द नं० 721
आवन जावन सब

विचार वाणी : पृष्ठ संख्या 557 शब्द नं० 678
सत् अनुराग प्रभ चरन का

उपदेश

जीवन गाथा (भाग 2) : 1. पृष्ठ संख्या 239 से 242
जब श्री महाराज जी. ..लाठी भी न टूटे।
2. पृष्ठ संख्या 64 संसार की
गर्दिश .....सत बुद्धि देवे

ग्रन्थ श्री समता विलास : 1. पृष्ठ संख्या 610-612 ईश्वर
प्रेम
2. पृष्ठ संख्या 620 से 623
समवाद विज्ञान - वचन नं० 25 से
35

गुरूदेव ने कहा - : विरह-वैराग्य 1. पृष्ठ संख्या
178-180 प्रश्न नं० 324 से 327
2. पृष्ठ संख्या 350 पत्र संख्या 1
सत् परायणता दृढ़ करने पर।

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : प्रभु विश्वास आवश्यकता व लाभ

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पृष्ठ संख्या 593 शब्द नं० 727
अनेक जनम का भरमता

विचार वाणी : 1. पृष्ठ संख्या 298 शब्द नं० 359
बिपत रूप संसार में
2. पृष्ठ संख्या 301 शब्द नं० 362
पूरन सम्पत जगत में

उपदेश

जीवन गाथा (भाग 1) : 1. पृष्ठ संख्या 172-173 सत्
उपदेश नं० 77
आप लोग..... निर्भय जीवन
देवे
पृष्ठ नं० 46-48
19 सावन.....पहुंच जाता है।
उपदेश नं० 23, पश्चिमी पंजाब में
आगमन

जीवन गाथा (भाग 2) : पृष्ठ संख्या 229 से 231 उपदेश
65
प्रेमियो को पत्र....छुपाना पड़ता है

गुरूदेव ने कहा- : ईश्वर विश्वास पृष्ठ संख्या 50-52
प्रश्न नं० 100 से 104

अंतिम वाणी : पृष्ठ संख्या 130 शब्द नं० 146
सत् विश्वास यानी यकीने पाक

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : बन्धन व मुक्ति का कारण जीव स्वयं

ईश्वर प्रार्थना व महिमा :पेज नं० 404, शब्द नं० 507
आसा एको चरन की

विचार वाणी : पेज नं० 997, शब्द नं० 1274
मन की तजी नही दूषना

उपदेश

ग्रन्थ श्री समता विलास : जीवन सार सिद्धान्त पेज नं० 468
वचन नं० 7 से 13

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 305 उपदेश नं० 128
अंधकार परस्ती.....तुम्हे छोड़ना था
पेज नं० 442, प्रश्न-महाराज जी... ..
परलोक सुधर जायेगा

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : बिना भक्ति जीवन

ईश्वर प्रार्थना व महिमा :पेज नं० 376, शब्द नं० 463
गुण ज्ञान कछु न धरू

विचार वाणी : पेज नं० 326, शब्द नं० 396
गिनती गिने न आ सके
पेज नं० 327 शब्द नं० 397
मनमुख पूरन रोग है

उपदेश

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 369 से 374, सउपदेश 109
शरीर रूपी..... खत्म हो जाना है

गुरूदेव ने कहा : मानव जीवन का ध्येय
पेज नं० 45-46 प्रश्न नं० 95, 96

ग्रन्थ श्री समता विलास :विश्व शांति संदेश पेज नं० 492 से 496 वचन नं० 6 से 10

यादगार पल : पेज नं० 124 संस्मरण नं० 27

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : भक्ति का सही स्वरूप, आज को
भक्ति का स्वरूप

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 864, शब्द नं० 1101
चरन की धूड़ी में रमूं

विचार वाणी : पेज नं० 328, शब्द नं० 398
देह सागर विकार का
पेज नं० 328, शब्द नं० 399
जब लग विरह नहीं राम से
पेज नं० 508, शब्द नं० 623
निर्मल करनी चित्त बसी

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 119
प्रेमियों देखना है.....सुमति दें

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 369 से 374, प्रसंग नं० 109

गुरूदेव ने कहा : ईश्वर प्राप्ति या कल्याण का मार्ग
पेज नं० 68, प्रश्न नं० 130 से 144

यादगार पल : पेज नं० 124 से 126, नं० 27

ग्रन्थ श्री समता विलास : ईश्वर भक्ति की प्राप्ति
पेज नं० 51 वचन नं० 66 से 71

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : मन जीतने के उपाय

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 432, शब्द नं० 540
निर्मल तत्त पहचान के

विचार वाणी : पेज नं० 714, शब्द नं० 877
संकट रूप मन कल्पना

उपदेश :

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 28 से 30
दूसरे दिन.....किया या नही

ग्रन्थ श्री समता विलास : पहला अंग सिमरन
पेज नं० 210, वचन नं० 1 से 5

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : मानुष जन्म का उद्देश्य व जन्म सफल कैसे हो ?

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पृष्ठ संख्या 1072 शब्द नं० 1371
पारब्रह्म परमेश्वर

विचार वाणी : पृष्ठ संख्या 1260 शब्द नं० 1660
अन्तर मनुआँ राखिए

उपदेश

जीवन गाथा (भाग 1) : पृष्ठ संख्या 449 से 451,
इस मानुष चोले.....लेने वाले नहीं

जीवन गाथा (भाग 2) : पृष्ठ संख्या 186 से 190, उपदेश नं० 55 - सत उपदेश
शरीर को ..... मुक्ति आप करे

ग्रन्थ श्री समता विलास : सत शिक्षा, पृष्ठ संख्या 471,
वचन नं० 1 से 3

सम्बन्धित उपदेशों का संग्रह : इसी पुस्तक में पृष्ठ संख्या 122 से 129

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: मन का विस्तार (सारी सृष्टि मन का ही रूप)
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	:पेज नं० 560, शब्द नं० 681 सरब शकत समरथ तूं
विचार वाणी	:1. पेज नं० 52, शब्द नं० 55 जो करना है सो कर लियो
	: 2. पेज नं० 712, शब्द नं० 875 मन-तन अंदर रिझियो
उपदेश	
जीवन गाथा भाग 2	: 1. पेज नं० 117 से 121 प्रश्न से..... मालिक की मौज में गुजारो
	: 2. पेज नं० 143, 145 एक रोज भक्त.....सिलसिला बदल गया
गुरूदेव ने कहा	: मन बुद्धि तथा अहंकार पेज नं० 22 प्रश्न नं० 48 से 53
ग्रन्थ श्री समता विलास	: शुद्ध निदिध्यास पेज नं० 551 वचन नं० 84 से 87
अंतिम वाणी	: पेज नं० 1233 शब्द नं० 1606 उठ जाग मुसाफिर रे मन मेरे

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : मन का मान दुःखदायी, मन का मान दूर करने का उपाय

ईश्वर प्रार्थना व महिमा :पेज नं० 592, शब्द नं० 725
जिसने सब रचना रची

विचार वाणी : पेज नं० 489, शब्द नं० 602
जगत का खेल विचारया
पेज नं० 490, शब्द नं० 603
मन का मान त्याग कर

उपदेश

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 310 से 313, 80 नं० उपदेश
संसार रूपी.... पवित्र बुद्धि बख्शें
पेज नं० 127 से 131
सत्संग की समाप्ति.....दग्ध हो जाएं

गुरूदेव ने कहा : मन बुद्धि तथा अहंकार
पेज नं० 22 से 33 प्रश्न नं० 48 से 51, 71, 72 से 76

ग्रन्थ श्री समता विलास : ईश्वर भक्ति की प्राप्ति
पेज नं० 60, वचन नं० 88 से 95

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : महामन्त्र की महिमा

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 771, शब्द नं० 980
पूरन किरपा धार तूं

विचार वाणी : पेज नं० 414, शब्द
महिमाँ महामन्त्र-
त्रियोदश अक्षर.....

उपदेश

जीवन गाथा भाग 2 : महामन्त्र श्रेष्ठ कैसे
पेज नं० 220 से 222
श्री महाराज जी ने..... विश्वास
की जरूरत है

सम्बन्धित उपदेशों का संग्रह : महामन्त्र सम्बन्धित संवाद एवं
व्याख्या इसी पुस्तक में पृष्ठ
संख्या 148 से 160

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: मानुष जन्म की महानता
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं० 1129, शब्द नं० 1441 अत दुस्तर ये संसार
विचार वाणी	: पेज नं० 717, शब्द नं० 880 मन को छेदन जो करे
उपदेश	
जीवन गाथा भाग 2	: 1. पेज नं० 115 से 121 उपदेश नं० 41, जन्म से लेकर..... मौज में गुजारो 2. पेज नं० 359, उपदेश नं० 95, श्री मुख वाक्य अमृत
गुरूदेव ने कहा	: पृष्ठ संख्या 44 से 45, प्रश्न नं० 92 से 95
अंतिम वाणी	: पेज नं० 33, शब्द नं० 42 मानुष तन को पाये के

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : मनुष्य का कल्याण कैसे

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पृष्ठ संख्या 2 शब्द नं० 1
भव सागर में आए के।

विचार वाणी : 1. पृष्ठ संख्या 428 शब्द नं० 536
कल्यान सरूप प्रभ जान के
2. पृष्ठ संख्या 429 शब्द नं० 537
मन के भरम को त्यागना

उपदेश -

जीवन गाथा (भाग 2) : 1. पृष्ठ संख्या 115 से 117 तक
उपदेश नं० 41
जन्म से लेकर... बड़ी कृपा करते हैं
: 2. पृष्ठ संख्या 97 से 98 तक
उपदेश नं० 37
इसके बाद आपने..... कृपा कर रहे हैं।

गुरूदेव ने कहा - : जीव गति पृष्ठ संख्या 168-170,
प्रश्न नं० 303, 304

ग्रन्थ श्री समता विलास : वासना छेदन विवेक
पृष्ठ संख्या 310 वचन नं० 51 से 54

यादगार पल : पृष्ठ संख्या 23 से 31

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : वास्तविक तीर्थ यात्रा

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 595, शब्द नं० 730
माया चक्कर को देख के

विचार वाणी : पेज नं० 1085, शब्द नं० 1383
छठे दोहे से (तपन बुझावें शीतल
करे से शुरू)

उपदेश

ग्रन्थ श्री समता विलास : तीर्थ यात्रा का सिद्धान्त पेज नं०
132 से 135 वचन नं० 1 से 18

गुरूदेव ने कहा : तीर्थ यात्रा पेज नं० 163 से 164
प्रश्न नं० 295 से 297

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : वैर-भाव से हानि

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 178, शब्द नं० 201
आज्ञा मानो साहब की

विचार वाणी : पेज नं० 183, शब्द नं० 204
(बीच में से)
सो ही नरकी जीव है से.....
जिस दर बाजत नौबतां तक
फिर अन्तिम दोहा :
लख चौरासी जीव में

उपदेश

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 265 से 267 (तीसरी लाईन)
भक्त जी ने पूछा.....यत्न करो

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 311 से 312
इस भयानक. है ...खुदाई इसी में हैं

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : विचारहीन जीवन

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 561, शब्द नं० 682
तुम दातार सरब दातारी

विचार वाणी : पेज नं० 449, शब्द नं०
सत् विचार निधान –
सत् विचार मन माही..

उपदेश

ग्रन्थ श्री समता विलास : शुद्ध आचरण विवेक पेज नं०
340 से 342 वचन नं० 107,
108

जीवन गाथा भाग 2 : 1. पेज नं० 100 से 105
38 नं० सउपदेश
जीव ने..... विचार चलते रहे
: 2. पेज नं० 115, 116
41 नं० सत्उपदेश
जन्म से.....लाभ इसी में है
: 3. पेज नं० 333 से 335
87 नं० सत्उपदेश
इस शरीर.....देही का लाभ
समझो

ॐ

ब्रह्म सत्यम्   सर्वाधार

विषय : शुद्ध व्यवहार का लाभ व शुद्ध व्यवहारी का जीवन

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 2, शब्द नं० 1
भवसागर में आय के

विचार वाणी : पेज नं० 307, शब्द नं० 371
शुद्ध ब्यौहारी पुरूष जो

उपदेश :

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 278 से 279
एक दिन.........जाकर देखें तो सही
पेज नं० 264 से 266
जीव जब से.......... धारण करो

गुरूदेव ने कहा : संस्कार और स्वभाव
पेज नं० 108 प्रश्न नं० 201

व्यवहार का जीवन पर प्रभाव: गुरूदेव द्वारा सुनाया गया प्रसंग इसी पुस्तक में पृष्ठ संख्या 109 से 113

ॐ

ब्रह्म सत्यम्　　　　　　　　सर्वाधार

विषय : सत् धर्म की महिमा

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 604, शब्द नं० 742 सतनाम तत्त जानयाँ

विचार वाणी : पेज नं० 35, शब्द नं० 44
: सत् धर्म की सार सुन.......
आनंद मंगल होय तक 10 दोहे,
फिर 16 से 19
अंतिम दोहा - रंचक धर्म जिस जानया........

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 214 से 216, उपदेश नं० 101, धर्म की महिमा..........धर्म पर चलो।

ग्रन्थ श्री समता विलास : पेज नं० 169 से 174, वचन नं० 1-2, 6, 7, 9, 10, 11

सम्बन्धित उपदेशों का संग्रह : इसी पुस्तक में पृष्ठ संख्या 132 से 133

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: सत् पुरूषार्थ क्या है व इसकी महिमा
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं० 592, शब्द नं० 726 करता हरता जानके
विचार वाणी	: पेज नं० 816, शब्द नं० 1038 पूरन दीजो दीखया
उपदेश	
जीवन गाथा भाग 2	: पेज नं० 250 से 252 प्रसंग 74
गुरूदेव ने कहा	1. मानव जीवन का ध्येय पेज नं० 44 से 46, प्रश्न नं० 92 से 96 2. सफलता प्राप्ति का सूत्र पेज नं० 199, प्रश्न 369 से 371
यादगार पल	: पेज नं० 117 उपदेश नं० 2500
ग्रन्थ श्री समता विलास	: शुद्ध वैराग पेज नं० 532 से 535 वचन नं० 46 से 52

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : सत् विवेक की महिमा

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 559, शब्द नं० 680
तूं ही सत् आदि जुगादी

विचार वाणी : पेज नं० 341, शब्द
अपने जन्म का करो विचार..

उपदेश

ग्रन्थ श्री समता विलास : शुद्ध विवेक पेज नं० 516 से 520
वचन नं० 18 से 26
बुद्धि की प्रकाशमयी अवस्था
पेज नं० 202
वचन नं० 12 से 14

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 443 से 445
उपदेश नं० 164

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: सत्गुरू की कृपा का स्वरूप
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं० 604, शब्द नं० 742 सत्नाम तत्त जानयाँ
विचार वाणी	: पेज नं० 688, शब्द नं० 850 साचा गुरू हर रूप है
उपदेश	
गुरूदेव ने कहा	: पेज नं० 356 से 359 पत्र नं० 61 से 63
जीवन गाथा भाग 2	: 1. पेज नं० 288 से 289 प्रसंग नं० 76 भक्त बनारसी दास को शिक्षा प्रेमी होना.....बैठी या नही
	: 2. पेज नं० 295 से 297 प्रेमी बनारसी.. ..दूर हो गई
जीवन गाथा भाग 1	: पेज नं० 444 से 447 एक दिन..... पहुँचाना चाहते थे

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: सत् साधु के लक्षण, प्रभाव, परिणाम
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं० 512, शब्द नं० 627 दीन बन्धु करतार तू
विचार वाणी	: पेज नं० 644, शब्द नं० 797 तिस की सेव दुरगुण को देवे....
ग्रन्थ श्री समता विलास	: गुरूपद का सिद्धान्त
	: पेज नं० 241 वचन नं० 10, 12, 14, 29 एवं 30
जीवन गाथा भाग 2	: 1. पेज नं० 335 उपदेश नं० 88 दिल्ली के लिए रवानगी
	: 2. पेज नं० 267 से 269 एक दिन..... रवाना हो गए

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: सत्संग की आवश्यकता, लाभ व महिमा
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं० 903, शब्द नं० 1151 अपनी महमाँ धार के
विचार शब्द	: पेज नं० 367, शब्द नं० 451 यज्ञ करम सत धरम है
उपदेश	: 367 (ii) शब्द नं० 452 (मान मध सब नासयो)
मेरे गुरूदेव	: पेज नं० 179-180 प्रेमियों..... नहीं पहुँचता
ग्रन्थ श्री समता विलास	: सत्संग पेज नं० 120, वचन नं० 84 से 93
गुरूदेव ने कहा	पेज नं० 177, प्रश्न 321
मेरे गुरूदेव	सत्संग से जीवन परिवर्तन पेज नं० 199-205 सन् 1946.. ..पिलाने योग्य हो गए थे

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : सत् सेवा की महिमा

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 03, शब्द नं० 03
आध व्याधी सब मिटें

विचार शब्द : पेज नं० 162, शब्द नं० 184
हर का भगत दुर्लभ
पेज नं० 163, शब्द नं० 185
साची सेवा जब मिली
: पेज नं० 310, शब्द नं० 374
अम्बर वायु अगनी

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 200 से 201, शरीर रूपी
संसार हासिल हुई।
पेज नं० 237 से 239 एक दिन
जब.....दरबार खुला है
पेज नं० 247 से 248
भक्त जी ने मांगा करते

गुरूदेव ने कहा : धर्म का स्वरूप पेज नं० 314, पत्र
संख्या 20
पेज नं० 122, प्रश्न 220

सम्बन्धित उपदेशों का संग्रह : इसी पुस्तक में पृष्ठ संख्या 94
से 99 देखें

ॐ

ब्रह्म सत्यम्   सर्वाधार

विषय	**: सादगी (समता सिद्धांत का पहला नियम)**
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	**: पृष्ठ संख्या 1144 शब्द नं० 1461 दीन दयाल प्रभ दया करी**
विचार वाणी	**: पेज नं० 304, शब्द नं० 367 करम जाल अपार है**
उपदेश	
ग्रन्थ श्री समता विलास	**: सादगी-पेज नं० 99 से 103, वचन नं० 18 से 32**
जीवन गाथा भाग 2	**: पेज नं० 304 से 306 जब से संसार की रचना...... हमारे पास**
गुरूदेव ने कहा	**: संसार में रहने का तरीका पेज नं. 82-87 प्रश्न नं० 161, 164, 166, 167, 169**
जीवन गाथा भाग 2	**: पेज नं० 252 प्रेरक प्रसंग-महाराज जी द्वारा भक्त जी को चेतावनी नं० 75 साबुन तेल विचार**
यादगार पल	**: सरलता की मिसाल पेज नं० 127 से 130**
अंतिम वाणी	**: पेज नं० 134 शब्द नं० 153 सादगी**

ॐ

ब्रह्म सत्यम्   सर्वाधार

विषय	**: सदाचारी जीवन कैसे बने व इसके लाभ**
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	**: पृष्ठ संख्या 770 शब्द नं० 979 प्रभु के चरण पुकारयो**
विचार वाणी	**: पृष्ठ संख्या 127 शब्द नं० 143 सत-करम की खोजना**
उपदेश	
जीवन गाथा (भाग 1)	**: 1. पृष्ठ संख्या 384 से 386 तक उपदेश नं० 152, चौथा सत् उपदेश इस नास्तिकवाद...... तसल्ली दी जाती है**
गुरूदेव ने कहा -	**: सदाचार 1. पृष्ठ संख्या 206 प्रश्न नं० 382, 384 2. पृष्ठ संख्या 322 पत्र संख्या 27 सदाचारी जीवन और ईश्वर भक्ति**
ग्रन्थ श्री समता विलास	**: पृष्ठ संख्या 338-341 वचन नं० 104 से 108 (शुद्ध आचरण विवेक)**

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : साधु संग की महिमा

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 1131, शब्द नं० 1444
अपनी गत मित आप....

विचार वाणी : पेज नं० 148, शब्द नं० 169
साध मिलावा जब हुआ
पेज नं० 648, शब्द नं० 803
महमा सत्संग अलग अपारी
पेज नं० 638, शब्द नं० 786
तीसरा विवेक सत्साधु
की महिमा

जीवन गाथा भाग 2 : 1. पेज नं० 267 से 269
एक दिन.....गए रवाना हो
गए
2. पेज नं० 145 से 150
प्रेमी रामचन्द्र और.....शायद

मेरे गुरूदेव : जीवन परिवर्तन सम्बन्धी पालशाह
जी का प्रसंग
पेज नं० 177 से 179
गुरूदेव का तप का असर.....
फिर न बन सके

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : सुख-शान्ति कैसे प्राप्त हो

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 511, शब्द नं० 626
सरब जगत को छाड़ के

विचार वाणी : 1. पेज नं० 358, शब्द नं० 439
राम चरण हिरदे रखो

: 2. पेज नं० 904, शब्द नं० 1153
पाप कूप भसमत करो

: 3. पेज नं० 364, शब्द नं०448
सत्करम साधन करो

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 1 : पेज नं० 216 से 218 प्रसंग नं० 102-सुख पैदाईश..... शांति हो जावेगी

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 137 से 139
अनादि काल.....लाभ प्राप्त करें

ग्रन्थ श्री समता विलास : सत् जीवन नियम निर्णय पेज नं० 430 वचन नं० 1 से 10

गुरूदेव ने कहा : दुःख तथा सुख पेज नं० 38
प्रश्न नं० 83
शान्ति या आनन्द पेज नं० 42
प्रश्न नं० 90

सम्बन्धित उपदेशों का संग्रह : इसी पुस्तक में पृष्ठ संख्या 139 से 142 देखें

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : सत्कर्म - कौन से कर्म सत्कर्म
व सत्कर्म की महिमा

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 1072, शब्द नं०
1371
पारब्रह्म परमेश्वर

विचार वाणी : पेज नं० 364, शब्द नं० 448
सत्कर्म साधन करो
पेज नं० 273, शब्द नं० 322
सत् परमेश्वर ज्ञान बिन

सत्कर्म की महिमा वाणी : पेज नं० 363, शब्द नं० 446
पाप कर्म नित ताप को देवें

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 221 से 224 तक
उपदेश नं. 104, अपना सुधार

ग्रन्थ श्री समता विलास : पेज नं० 236 समाधि
वचन नं० 74, 75

गुरूदेव ने कहा : दुःख तथा सुख
पेज नं० 38-42 प्रश्न नं० 83,
90,91

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: सत्संग का सही स्वरूप व लाभ
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं० 792, शब्द नं० 1007 सरब शकत दातार तूं
विचार वाणी	: पेज नं० 646, शब्द नं० 800 नित ही नित सतसंग पधार पेज नं० 367, शब्द नं० 451 यज्ञ करम सत् धरम है
उपदेश	
जीवन गाथा भाग 2	: पेज नं० 94-95, (आठवीं लाईन से) आपने फरमाया से... ....ईश्वर सुमति देवे।
गुरूदेव ने कहा	: पेज नं० 177, प्रश्न 321
अंतिम वाणी ईश्वर महिमा	: पेज नं० 389, शब्द नं० 481 साची प्रीत जभी चित आई
सम्बन्धित उपदेशों का संग्रह	: इसी पुस्तक में पृष्ठ संख्या 143 से 147 देखें

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: समता यज्ञ की महिमा
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं० 816, शब्द नं० 1039 सत पुरूषारथ धार के
विचार वाणी	: पेज नं० 365, शब्द नं. 449 सत करम की साधना पेज नं० 366, शब्द नं० 450 क्या करता क्या भोगता
उपदेश	
जीवन गाथा भाग 2	: पेज नं० 54-55 (18 नं० आज्ञाकारी सती..... अलहैदा रखना) पेज नं० 337 (16 अक्तूबर..... .....सुनाई पड़ जाती है)
मेरे गुरूदेव	पेज नं० 343 से 351 (उधर रात्रि के.. बैठे) ..कुटिया में जा
गुरूदेव ने कहा	विविध प्रश्न-पेज नं० 232-233, प्रश्न 439 से 441

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: सत् सेवा की आवश्यकता व सेवा का सही स्वरूप
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पेज नं० 1144, शब्द नं० 1460 अपनी लीला धार के
विचार वाणी	: पेज नं० 309, 'सत् सेवा' - सत् सेवा को हिरदे धार। पेज नं० 313, शब्द नं० 378 मन अपने को सोधिये
	: पेज नं० 309, शब्द संख्या 375 जीवन का ये लाभ है
उपदेश	
ग्रन्थ श्री समता विलास	: सेवा-पेज नं० 110, वचन नं० 57-58 पेज नं. 114 से 119, वचन नं. 61, 62, 64, 70, 71, 79, 83
गुरूदेव ने कहा	: धर्म का स्वरूप व निष्काम कर्म पेज नं० 117, प्रश्न नं० 216, 218, 220
सउपदेशों का संग्रह	: इसी पुस्तक में पृष्ठ संख्या 94 से 99 देखें
अन्तिम वाणी	: पेज नं० 132, शब्द नं० 150 पर उपकार यानी नेकी

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : सकट रूप मन की
कल्पना/डोलना, इस कल्पना से
छूटकारा कैसे पाएं

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 404, शब्द नं० 507
आसा एको चरण की

विचार वाणी : पेज नं० 713, शब्द नं० 876
सब जग मन का खेल है

उपदेश

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 124 से 126
बाद समाप्ति..... आराम करो

ग्रन्थ श्री समता विलास : आठवां उपदेश
पेज नं० 125 से 127 वचन नं०
96 से 98

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : समता ज्ञान की प्राप्ति कैसे हो

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 404, शब्द नं० 506
जैसी मन की भावना

विचार वाणी : पेज नं० 346, शब्द नं० 423
शस्तर पकड़ ज्ञान का
पेज नं० 346, शब्द नं० 424
द्वन्द विकार जब मिटे

उपदेश

जीवन गाथा भाग 2 : 1) पेज नं० 8 भक्त जी ने अजं
की .....कमी नही आती
2)पेज नं० 288 से 289, उपदेश
नं० 76
प्रेमी होना..... दिल में बैठी या नही

गुरूदेव ने कहा : विविध प्रश्न
1) पेज नं० 216, प्रश्न नं० 403
2) पेज नं० 383 पत्र संख्या 89
समतावादी पुरूषों का धर्म
3) पेज नं० 368 पत्र संख्या 72
समता साहित्य का स्वाध्याय करने
की प्रेरणा
4) पेज नं० 369 पत्र संख्या 73
समता के असूलों पर खुद चलें

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : संसार की रचना कैसे ?

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 404, शब्द नं० 506
जैसी मन की भावना

विचार वाणी : पेज नं० 32 से 33, शब्द नं०
40 और 41
संसार की उत्पति
मानुष तन को पाय के.....

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 441 से 442
जीव शरीर रूपी संसार.....
निर्मल बुद्धि देवें

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 278 से 280
प्रश्न राय साहब से.....सत्
पुरूष मिला देते हैं

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय	: संसार क्या है ? मन की कल्पना ही संसार
ईश्वर प्रार्थना व महिमा	: पृष्ठ संख्या 176 शब्द नं० 199 परम भगत को पाये के
विचार वाणी	: पृष्ठ संख्या 909 शब्द नं० 1159 गिनती गिने नहीं आ सके
उपदेश	
जीवन गाथा (भाग 1)	: पृष्ठ संख्या 200 से 201, सत उपदेश शरीर रूपी..... दिन चार पृष्ठ संख्या 175 से 176, प्रेमी जीयो..... सतयत्न बख्शो
ग्रन्थ श्री समता विलास	: भोगवाद स्थिति, पृष्ठ संख्या 511 वचन नं० 9-10
यादगार पल	: पेज नं० 124 से 126
अंतिम वाणी	: पेज नं० 1246 शब्द नं० 1637-1638
	: संसार की रचना में मन नहीं तृप्ते

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : सत्कर्मों की महिमा व सत्कर्मी
पुरूष का जीवन

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 7, शब्द नं० 8
निर्भय होए जीव तब

विचार वाणी : पेज नं० 363, शब्द नं० 446
पाप करम नित ताप को देंवें
पेज नं० 364, शब्द नं० 447
सत्संगत के मेल से

उपदेश

ग्रन्थ श्री समता विलास : समता धर्म पेज नं० 181 से 185,
वचन नं० 28 से 32 और 35
पेज नं० 236
वचन नं० 74 से 75

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 155 से 156
जब से जीव. ..दृढ़ता बख्खों
पेज नं० 182 से 183
सत् उपदेश अमृत.....
निर्मल बुद्धि सब को बख्खों

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : समता ज्ञान की महिमा

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 407, शब्द नं० 511
अखण्ड आनन्द सरब का
स्वामी

विचार वाणी : पेज नं० 344-345, शब्द नं०
420 व 421
समतत् विचार
समता ज्ञान आद से आदी

उपदेश

जीवन गाथा भाग 2 : पेज नं० 256 से 259
उनके जाने के बाद.....दो
रोज और रह लूं

ग्रन्थ श्री समता विलास : समता मार्ग संदेश पेज नं०
193, वचन नं० 1 से 10

गुरूदेव ने कहा : पेज नं० 376 से 377
पत्र संख्या 79 समता ही
असली खुशी है.....
पत्र संख्या 81 समता की
तालीम को अपनाकर.....

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : सकाम कर्म जीव के बन्धन का
कारण / आवागवन का कारण

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 1131, शब्द नं० 1444
अपनी गत मित आप पछाने

विचार वाणी : पेज नं० 838, शब्द नं० 1067
करम साकाम बन्धन जग भारा

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 230 से 232
सत् उपदेश दौरांगला
प्रेमी जीओ..... जीव की फांस

ग्रन्थ श्री समता विलास : वासना छेदन विवेक पेज नं० 304
से 307, वचन नं० 40 से 45

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : सब दुःख संताप को दूर करने का एकमात्र उपाय ईश्वर की याद ईश्वर की याद क्यें जरूरी है ?

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 816, शब्द नं० 1039
सच पुरूषार्थ धार के

विचार वाणी : पेज नं० 270, शब्द नं० 318
आसा माहीं जन्मया

उपदेश

जीवन गाथा भाग 2 : उपदेश नं० 87, पेज नं० 333, सत्संग से..... पेज नं० 336 प्रकाश कर दे ।

ग्रन्थ श्री समता विलास : पेज नं० 55 से, वचन नं० 74, 80, 101, 115, 116, 136

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : सिमरन में दृढ़ता कैसे हो ?

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 515, शब्द नं० 630
प्रीती साचे नाम की

विचार वाणी : पेज नं० 677, शब्द नं० 839
जाँ से उतपत होया

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : 1) पेज नं० 232 से 233,
उपदेश नं० 112, नाम की
महिमा
मन अति लीन हो गया
2) पेज नं० 376 से 377
महंत रतनदास जी (आखिरी
लाईन) ..... दृढ़ता बक्शे

गुरूदेव ने कहा : नाम स्मरण ध्यान तथा योग
पेज नं० 133 से 135, प्रश्न संख्या
244 पेज नं० 335
पत्र संख्या 42 श्रद्धा और समर्पण
बुद्धि से सिमरन में सफलता
पत्र संख्या 43 निष्कर्म अवस्था में
स्थित रहने की प्रेरणा

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : सत्पुरूषों की वास्तिवक पूजा

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 793, शब्द नं० 1008
तेरे चरण प्रीति मन रसे

विचार वाणी : पेज नं० 999, शब्द नं० 1277
देवी देव की साधना

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 116 से 119
सत् उपदेश अमृत :
प्रेमियो..... निर्मल बुद्धि बख्शें

ग्रन्थ श्री समता विलास : पेज नं० 150 से 153
मूर्ति पूजा का सिद्धान्त
पेज नं० 139 से 143
वचन नं० 9 से 26

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : स्वार्थ और परमार्थ

ईश्वर प्रार्थना व महिमा: पेज नं० 3, शब्द नं० 3
आध व्याधी सब मिटे

विचार वाणी : 1. पेज नं० 531, शब्द नं० 647
बंद खुलासी जगत में
2. पेज नं० 531, शब्द नं० 648
स्वार्थ से मन डूबता

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : पेज नं० 306 से 309
एक दिन सत्संग..... ईश्वर सब पर कृपा करें।
: पेज नं० 438 से 440
सत् उपदेश शरीर रूपी. ..उपकारी बनावें

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : हमारे जीवन का कल्याण (उद्धार कैसे हो)

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 1017, शब्द नं० 1300
साची बिरह प्रभ चरन की

विचार वाणी : पेज नं० 429, शब्द नं० 537
मन के भरम को त्यागना

उपदेश

जीवन गाथा भाग 1 : उपदेश नं० 82
पेज नं० 186 से 189
प्रेमियों प्रार्थना.....प्रशाद बांटा गया

गुरूदेव ने कहा : पेज नं० 168, जीवगति प्रश्न नं० 303 व 304

सम्बन्धित उपदेशों का संग्रह : इसी पुस्तक में पृष्ठ संख्या 118 से 121 देखें

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

विषय : त्रैगुणी माया का स्वरूप व जीवन पर प्रभाव एवं त्रैगुणी माया से छुटकारा

ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 563, शब्द नं० 684
माँगू नित-नित कीरती
विचार वाणी : पेज नं० 1106, शब्द नं० 1412
बाहरमुख रचना माहीं
उपदेश
ग्रन्थ श्री समता विलास : वासना विवेक पेज नं० 294 से 299 वचन नं० 16 से 25 (2)
ईश्वर प्रार्थना व महिमा : पेज नं० 178, शब्द नं०. 201
आज्ञा मानो साहब की
विचार वाणी : पेज नं० 888, शब्द नं० 1133
साचा नाम अंतर कियो
उपदेश
जीवन गाथा भाग 2 : उपदेश नं० 51, पेज नं० 172 से 173, शरीर रूपी जंत्र प्रतीत बक्शें
जीवन गाथा भाग 1 : उपदेश नं० 102
पेज नं० 216 से 218
पैदाईश से.....शान्ति हो जायेगी

सत्-सेवा

1. जीव को हर वक्त चाह है कि मुझे सुख मिले और मेरा मान सारी दुनिया करे। यह प्रधान कामना उसके अंदर है। महापुरूषों ने सोचा कि सुख भी सदा नहीं रहेगा, बड़ा भी हमको कोई न मानेगा, सुख प्राप्ति की कामना, उसके लिए कोशिश और सुख की स्थिति की आग लगी रहेगी। यह रोग कभी मिटने का नहीं। इस बात को सोचकर उन्होने इसका इलाज निकाला कि अगर वह सर्व सुख चाहता है तो अपने आपको ही मिटा दे अर्थात् नित ही सेवा कर। अगर तू सेवा करेगा मान और सुख पायेगा।

2. हर एक जीव चाहता है मुझ को दुख न मिले, इसलिए उन्होंने बतलाया कि अगर तू सुख चाहता है तो सब जीवों को सुख देने वाला बन, अपना सुख दूसरों में तकसीम (बाँट) कर, तुझे खुद-ब-खुद सुख मिलेगा। अगर तू ऐसा बनेगा दुनिया में नाम रोशन होगा। अपनी रोटी में से अतिथि, अभ्यागत, यतीम, अनाथों को दे तेरे अम्बार भरे रहेंगे। तुम्हारा भला दूसरों के भले में है। ऐ मानुष तेरा कल्याण दूसरे के कल्याण में है। अगर तू दूसरे के नाश का वत्न करेगा तेरा अपना नाश होगा। आत्मा जैसे तुम में प्रकाश कर रहा हे वैसा दूसरों में भी प्रकाश कर रहा है। अगर तू दूसरे से दुश्मनी करेगा तो अपने से दुश्मनी करेगा लेकिन यह ऊँची तालीम है, इसकी समझ मुश्किल है। कुलक्षण रूप बुद्धि दूसरो के दोष तलाश करके अपने अंदर दोष भर लेती हैं। अपने अंदर वे इतबारी (अविश्वास) है इसलिए दूसरों को बेइतबार समझता है।

3. सत्-सिमरन के असली अंग सेवा सत्संग हैं। जिस तरह सारा शरीर बड़ा सुन्दर हो, बुद्धि उसमें मन्द हो, कोई तमीज, ढंग की बात न कर सकता हो, सब कहेंगे यह पागल है, मूर्ख है। खाली सेवा का उपदेश करते रहो, सेवा करो नहीं तो तुम्हारा भाव विचार सब थोथे दिखाई देंगे। सत्-सिमरन करने वाला ही वही सत् सेवा के मर्म को जानता है। सत्-सिमरन की परिपक्वता तब ही होगी जब हर तरह की छोटी से छोटी सेवा करने के वास्ते भी मन के अन्दर ग्लानि न आवे। सिमरन

करने वाले से सेवा और सेवा करने वाले से सिमरन चन सकता है। दोनों लाज़म मल्जूम भाव हैं। सेवा के वक्त तो आलसी बने रहे, खाली एक कोने में बैठ जाने से मार्ग तय न हो सकेगा। अभ्यास के समय अभ्यास और जब सेवा का मौका आए तन, मन से उसमें जुट जाना । आलस, प्रमाद को नज़दीक तक न फटकने देना। सर्दी-गर्मी का बिल्कुल विचार न करना । छोटी-छोटी सेवाओं को बढ़-चढ़ कर करने की कोशिश करनी । इन्हें पाया तकमील तक पहुँचाने की कोशिश करनी। जिस तरह शूरवीर बिना हथियारों के शोभा नहीं पाता, इसी तरह भक्ति सेवा के बिना धोथी लंगड़ी है। चौंसठ घड़ी अनाथ जीवों की भलाई के वास्ते साचते रहो। मन, वचन, कर्म से किसी के वास्ते बुरा न सोचना और सेवा करना ही श्रेष्ठ कर्तव्य है।

4. जो जीव औलाद की सेवा में लगे रहते हैं और नेक लोक सेवा की तरफ रागब नहीं होते उनको आखिर तजूरबा होता है कि उनकी औलाद उनके अहसान फरामोश (भूल जाना) कर देती है। अगर किसी दूसरे जीव पर अहसान किया जावे वह तमाम उम्र उसके अहसान को याद रखता है। एक पुरूष अपनी लड़की की शादी पर लाखों रूपया देता है जगर लड़का उसका अहसान नहीं मानता बल्कि कहता है कि थोड़ा दिया है। अगर तुम गरीब की लड़की पर एक हजार रूपया भी सरफ (खर्च) कर दो तो वह तमाम उम्र तुम्हारा यश गाता रहेगा । जब तक कुर्बानी न की जाये दुनिया कायल नहीं होगी।

5. जिस तरह अपने शरीर की गंदगी साफ करते वक्त मन में ग्लानि नहीं आती इसी तरह ऐसे मौके मिलने पर कभी मन को मत मोड़ो । अमली जीवन हर तरह से होना चाहिये। गुरू दरबार मे जो सेवा भी सामने आए करते समय सब गुरू की सेवा समझो । यह मत ख्याल करो कि दूसरे आदमी की कर रहा हूँ सबको अपने से उच्च और गुरू रूप जानो। तब जाकर, तन, मन द्वारा हर एक की सेवा बन सकती है ।

6. सेवा करते कभी ख्याल न करो कि यह खराब है, यह अच्छी है। यह अमीर है, यह गरीब है। हर जीव की तन, मन, वचन, कर्म से

सेवा करने के वास्ते हर घड़ी तैयार रहो। अगर कोई कहे वर्तन साफ काँ या पानी लाओ और टट्टी फेंक आओ, और भी इससे तुच्छ सेवा का वक्त आ जाये तो खुले चित्त से सेवा करो। मन में ग्लानि आ जाये तो समझो मन बेईमान है। जबरदस्ती उस तरफ लगाओ। बिना सेवा के सार का पता नहीं लगता। मन की मैल को दूर करने के वास्ते केवल एक सेवा का ही मार्ग है। मन के रोगों से खुलासी (छुटकारा पाने का वाहिर (उत्तम) इलाज एक सेवा ही है और अंतर सतनाम सिमरन से अंतःकरण शुद्ध होता है।

7. सेवा भी कई किस्म की होती है। जितना-जितना लालच रखकर सेवा करता है उतना-उतना मान-अपमान पाता रहता है। निर्मान भाव में दृढ़ होकर निष्काम चित से की हुई सेवा जुगा-जुग तक सबके वास्ते सुखदायक होती चली जाती है। तुम्हें क्या फिक्र लग रहा है, परिवार और संगत की सेवा में बड़ा जमीन-आसमान का फर्क है। परिवार की सेवा में नित ही मोहवश रहता है, हर प्रकार की खिदमत करके भी छित्तर (गालियां) पड़ती हैं। कोई खुश नहीं होता। चाहे कितना भी निष्काम भाव से सेवा करे, मगर फिर भी थोड़ी बहुत गर्ज़ बनी रहती हैं। संगत की सेवा से चित में खेद नहीं पैदा होता।

8. न फर्ज़ की कोई हद है, न सेवा की। स्वार्थी जीव एक टका अरदास करके सारे संसार के पदार्थों की मांग कर लेता है लेकिन लोक सेवा में शरीर तक बलिदान करने वाले कुछ भी नहीं मांगा करते।

9. यह मत समझ पानी भरना, बर्तन साफ करना, झाड़ू देना वगैरह यह निकम्मी सेवा है। जिस किसी ने अपनी आन्तरिक सफाई की है छोटा काम करके निर्मानता में रहकर अहंकार से बचा है। जो भी गुरू घर का काम हो बड़ी श्रद्धा, विश्वास, प्रेम से उसमें तन मिट्टी हो जाना चाहिए। जो सेवा के मार्ग को नहीं अपनाते वह ऐसे ही होते हैं : छेरी के गल थनां जां में दूध न मृत।

10. बुद्धि को शुद्ध करने की खातिर जब तक सेवा का धर्म माना गया है। सेवा करने से पाप नाश हाते हैं। दूसरे की खिदमत करने से अपने पापों का नाश होता है। भवगान कृष्ण और भगवान राम

चन्द्र ने सेवा का आदर्श पेश किया है। सेवा से निर्मानता में आज़िज़ी का घना आनन्द प्राप्त होता है। बड़ा कौन है ? जिसके अन्दर आज़िज़ी और प्यार है। जिसकी आदत नेक है वही बुजुर्ग है। कमीना कौन है ? जो हर वक्त अपनी खुदगर्जी में गर्क (डूबा) रहता है और हर दाव करके अपने सुख की खातिर लोगों को दुःख देता है और अपने पापों से बिल्कुल डरता नहीं है।

11. प्रेमी सेवा वह होती है कि दूसरे मुँह से निकले ही न, तुम खुद-ब-खुद ही हर बात को करने लग जाओ। यह गुरूमुखपन होता है । कह कर सेवा करवानी यह मध्यम सेवा है, जबरदस्ती करवानी इससे कम तमोगुणी सेवा है । सेवादार के अन्दर खुद-ब-खुद ही प्रेरणा होती रहती है कि अब ऐसा करना है या यह करना है।

और जतन सब छाड़ के, सेवा मन में साध ।
मंगत, निश्चय तर जायें, मिट जायें भरम अगाध ।

सेवा का सही स्वरूप

पहला तप सेवा है। एक समय का वृतांत है पूँछ क्षेत्र में बैरमशाह नामक एक महात्मा थे। एक बार वे गुरू-दरबार में शिक्षा ग्रहण के निमित्त पहुँचे। उस समय गुरू हरिहर राम जी पंजाब की संगतो को कृतार्थ कर रहे थे। बैरमशाह ने उनके चरणों में उपस्थित होकर उनके चरणों में शिक्षा ग्रहण की और फिर प्रार्थना की कि मेरे लिए कुछ सेवा का आदेश दिया जाए। गुरूदेव ने उन्हें पानी लाने का कार्य सौंप दिया।

उन दिनों ताम्बे का एक मोटा पैसा सिक्के के रूप में चलता था। गुरूदेव ने बैरमशाह को एक पैसा देकर कहा इसकी इंढी लेकर सिर पर रख लेना। बैरमशाह ने ईढी की बजाए वह पैसा ही सिर पर रख लिया। उसी पर पानी का पात्र रखकर वह प्रतिदिन ब्रह्म मुहुर्त में गुरू जी के स्नान के लिए और फिर लंगर के लिए जल लाते। सांयकाल के समय लंगर से प्रस्थान करते। प्रभात समय पुनः पानी लाने के लिए उपस्थित हो जाते। इस प्रकार सेवा करते करते काफी समय बीत गया। एक बार दिन के समय जब बैरमशाह लंगर के लिए जल ला रहे थे तो गुरू जी ने देख लिया। पानी की गागर बैरमशाह के सिर से दो इंच ऊपर उठी हुई थी। उन्होने सोचा, अब इससे जल लाने की सेवा नही लेनी चाहिए। सिद्ध पुरूष से इस प्रकार सेवा लेना उचित नही।

बैरमशाह को आसन पर बुलवाया गया। गुरूदेव ने कहा - प्रेमी गुरमुख, आज से तुम्हारी सेवा पूर्ण हो गई। अब पानी लाने की सेवा न किया करो। इधर दरबार में ही बैठा करो। बैरमशाह ने निवेदन किया इस तुच्छ सेवक से और कोई सेवा नही बन सकती और न ही मैं बैठा रह सकता हूँ। मुझे जल लाने की सेवा ही प्रदान करने की कृपा दी जाए। यह कहकर जब बैरमशाह ने गुरू चरणों में सिर झुकाया तो गुरूदेव ने देखा, सिर के बीचों-बीच गोल पैसा टिका हुआ है। पूछा - बेटा, यह क्या ? बैरमशाह ने कहा महाराज ! यह पैसा आपने ईढी लाने के लिए दिया था। सेवक ने इसी को ईढी समझ कर सिर पर रख लिया।

आपकी दया हो गई। ऐसे परम विश्वासी और श्रद्धालु के ये वचन सुनकर गुरूदेव ने तुरन्त उसे हृदय से लगा लिया उससे सेवा छुड़वाकर, पुंछ की ओर जाकर आसन लगाने का आदेश दिया। वहाँ बैरमशाह ने बहुत समय तक जीवों को सतमार्ग पर लगाने की सेवा की। प्रेमी ! सेवा को साधारण वस्तु मत समझो। पानी भरना, बर्तन साफ करना, और भी तन-मन-धन से संगत की जो सेवा बन आवे, उसे गुरू की ही सेवा समझना चाहिए।

एक समय महात्मा बुद्ध एकान्तवास कर रहे थे। अन्य अनेक शिष्य भी साथ ही कुटियाओं मे अथवा वृक्षों के नीचे ध्यान-तप कर रहे थे। एक दिन एक भिक्षु के पेट में दर्द हो गया। कष्ट बढने लगा। वह इतना शिथिल हो गया कि उसके लिए उठना भी कठिन हो गया। लाचार होकर वह मुत्र विसर्जन के स्थान पर ही पड़ा रहा। संयोगवश महात्मा बुद्ध और उनके अनन्य शिष्य भिक्षु आनन्द घुमते हुए उस ओर चले आए। भिक्षु को उस दशा में देखकर भगवान ने पूछा - क्या कष्ट है ? भिक्षु ने बताया कि उदर रोग है। फिर पूछा क्या सेवा करने के लिए कोई नही है ? भिक्षु ने दुख भरे स्वर में कहा - नही भंते ! मुझसे भी कभी किसी भिक्षु की सेवा नही बन पडी। तब महात्मा बुद्ध ने भिक्षु आनन्द से कहा - जल लाओ मैं इसे स्नान कराऊँगा। जल आने पर भगवान बुद्ध ने स्वयं उस बीमार भिक्षु को नहला धुला कर साफ किया। भिक्षु आनन्द ने भी सहायता की। फिर दोनो रोगी को उठाकर उसके आवास में ले गए तथा उसकी चिकित्सा एवं सेवा की ओर विशेष ध्यान दिया। कुछ समय उपरान्त, अवसर पाकर भगवान बुद्ध ने भिक्षु को एकत्र किया और कहा - भिक्षुओं ! यहाँ तुम्हारे माता-पिता या परिवार के लोग नही है जो कष्ट के समय तुम्हारी सेवा करें। अगर तुम लोग स्वयं परस्पर मिलकर एक दूसरे की सेवा नही करोगे तो और कौन करेगा। स्मरण रखो जो किसी रोगी या दुखी की सेवा करता है वह वास्तव में मेरी सेवा करता है।

गुरू की आवश्यकता व महानता

अमृतसर जनवरी 1948, कानहुवान जनवरी 1949

प्रश्न - महाराज जी ! अभी तक हमने कोई गुरू धारण नही किया। क्या गुरू के बिना समझ नही आ सकता ?

उत्तर - लाल जी ! गुरू के बिना जीव न तो संसार में चल सकता है, न प्रभु मार्ग में । परमार्थ-मार्ग तो वैसे ही कठिन है। श्रद्धा और विश्वास के बल द्वारा सत्मार्ग में प्रीति हो जाती है। इस पर कोई रंग चढ़ाने वाला मिल जाए तो कोटि जगत के बन्धन पल भर में छूट जाते हैं। उसके बिना जीव अनेक जन्म भ्रम-जाल में भटकता रहता है। पढ-सुनकर भी उसका मन नही मानता, यह ऐसा ही दुष्ट है। सचेत जीव कोई अवतार ही आते हैं। अन्य सभी अज्ञान-मद में ग्रस्त होकर मोहमाया के भंवर में उलझे रहते हैं। जिस समय कोई मार्गदर्शक मिल जाता है तब अध्यात्म-रहस्य की बातें समझ आने लगती हैं।

प्रश्न - महाराज जी ! इस काल-देश से जब तक गुरू आकर निकालता नही तक तक जीव बेचारा कैसे मालिक तक पहुँच सकता है? सतगुरू ही तो पिण्ड से ब्रह्माण्ड तक ले जाएगा।

उत्तर - प्रेमी ! यह बचकानी बाते हैं। कभी ऐसा सुना है कि किसी गुरू ने शिष्य का हाथ पकड़कर उसे कहीं पहुंचाया हो ?

मुए गुरू तो मुए शिष्य, दोऊ डूबे मंझधार

पहुँचना-पहुँचाना क्या है। पहले इस बात को अच्छी तरह समझो कि शरीर क्या है ? इसके भीतर कौन बोल रहा है ? वियोग और मिलन का अभिप्राय क्या है ? गुरू स्वयं ही यदि मिला हुआ न हो तो तुम्हे कैसे मिला देगा ? गुरू तो आदिकाल से मार्ग बताते रहे हैं जिस पर चलकर शिष्य जानने योग्य तत्व को जानकर शांत हो जाता है। दो टूक बात है, अपना यत्न छोडकर सब कुछ गुरू पर डाल दिया - यह तो ठीक नही है। गुरू किस-किस को पार लगा देंगे ?

तुम स्वयं ही सोचो। जब से तुमने गुरू धारण किया है तुम्हारे मन का कौन सा विकार कम हुआ है ? काम वासना क्षीण हुई है ? क्रोध, लोभ, मोह या अहंकार में कुछ कमी आई है ? यह सभी नाशक विकार तो अब भी बने हुए है। गुरू किस समय इनसे छुड़ाएगा ? सच्चाई यह है कि बिना सत्संग के इस मोह-माया के जाल से छुटकारा नही। बार-बार ईश्वर आज्ञा में अपनी मैं (अहंकार) को समाप्त करो। यह ठीक है कि साधना द्वारा परमगति प्राप्त होती है। साधना द्वारा ही सिद्धि मिलती है और यह साधना संतो, गुरूओं के दरबार से मिलती है। परन्तु यह कहो कि कोई उंगली पकड़कर काल और देश की सीमा से पार कर देगा तो यह अंधविश्वास है। इससे तो और भी हानि होगी। गुरू इस अंधविश्वास रूपी सागर से पार कर देते हैं वे सही पुरूषार्थ करने तथा उत्तम जीवन बनाने का संदेश देते रहे हैं। ऐसे गुरू ही इस जगत के आधार स्तम्भ है, जीव युग-युगान्तर तक ऐसे सतगुरू की महिमा का गान करते हुए प्रभु प्रीति और प्रतीति में दृढ़ता प्राप्त करते रहे हैं। सच्चे तत्व-ज्ञान के बिना, माया के कठिन जाल से छुटकारा सम्भव नही। सत् का निर्णय, सत् का निश्चय, सत् में प्रीति, उसी का यशगान, स्मरण और ध्यान, हर समय वृति को सत् में उन्मुख रखना - यही मन के वेगों को स्थिर करने वाले साधन है। सारे संसार को सत्-तत्व का प्रतिबिम्ब समझते हुए केवल सत् को ही कर्त्ता-हर्त्ता जानते हुए जीव मोह आदि विकारों से मुक्त होकर शांत पद को प्राप्त करता है यही मनुष्य जीवन का सार है। जो सत् की खोज बने, चित्त की अग्नि भी तभी शांत हो सकती है। सत्-यत्न के बिना मन की शंका नही मिट सकती। मन के गुरू बनो, संसारी गुरू मत बनो।

गुप्त वस्तु-तत्व को प्रकट करने के लिए ही जिज्ञासु को गुरू की शरण में जाना पडता है। जब पूरे गुरू का मिलाप हो जाता है तब फिर किसी अन्य के पास जाने की आवश्यकता नही रहती। जब

"तक मन में यह संशय है कि किसी ने जो मुक्ति बताई है वह उचित भी है या नहीं, यह संशय किसी को कुछ करने नही देता। श्रद्धा-भाव से लगे रहने में ही कल्याण है।

गुरू के बिना साधना नही मिलती और साधना के बिना धैर्य सम्भव नही। उसके बिना जीव अनेक शरीरों को धारण करता हुआ भ्रम में ही यात्रा पूर्ण करता है।

संसार में सबसे बड़ा मित्र गुरू ही है जो शिष्य से किसी स्वार्थ की कामना किए बिना हर समय शिष्य की उन्नति का इच्छुक होता है। वह हर समय जिज्ञासु को निष्काम भाव धारण करने की प्रेरणा देता रहता है संसार में आने वाला प्रत्येक शरीर धारी अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए यत्न-प्रयत्न करता रहता है किन्तु इसे सफलता नहीं मिलती। इस अभाव की पूर्ति के लिए साधन बताने वाले गुरू ही होते हैं। कुछ जीव तो इस साधना को शीघ्र ही प्राप्त कर लेते हैं, कई सारा जीवन लगा देने पर भी असमर्थ रहते हैं। यह सब अपने सत् पुरूषार्थ पर ही निर्भर है। पहला प्रयत्न तो यह होना चाहिए कि तन-मन-धन सब कुछ गुरू की सेवा में अर्पित कर दिया जाए। अपना कुछ न समझकर, जीवन निर्वाह करते हुए, लोक सेवा में हर प्रकार से तन-मन-धन लगाए। परन्तु जो सच्चे गुरू हैं वे शिष्य से कुछ भी ग्रहण न करके सब कुछ परमार्थ में लगाने की प्रेरणा देते हैं ऐसे गुरू संसार में कठिनाई से मिलते हैं।

शिष्य बनना भी सरल नही क्योंकि अदृश्य वस्तु को पहचानना है। इसके लिए अधिक श्रद्धा और विश्वास की आवश्यकता है। शिष्य का कर्त्तव्य है कि पहले वह गुरू सेवा में उपस्थित होकर अपने मन के संशय को दूर करे, फिर योग-साधना के लिए प्रार्थना करे। यह ऐसा सस्ता सौदा नही कि बुला-बुलाकर उपदेश दिया जाए। भले ही कोई शिष्य बार-बार प्रार्थना करे, किन्तु सत्गुरू शिष्य की श्रद्धा परखते है, तब ही कृपा करते हैं। प्रेमी ! जब तक

गुरू से पूर्ण शिक्षा नही मिलती तब तक कोई साधन सफल नहीं हो सकता। फिर साधन के बिना सिद्धता कहाँ से आए ? पहली बात तो यह है कि आजकल साधन वाले मिलते नही। मिलते भी हैं तो विश्वास जरूरी है। पूर्व जन्म के कर्म और संस्कार अच्छे हों और कोई सत्मार्ग दिखाने वाला संत मिल जाए तब उसकी कृपा से, श्रद्धा और विश्वास होने से साधना की जा सकती है। सत्गुरू मिल जाए तो स्थान-स्थान पर भटकना नही पड़ता। परन्तु जो मंदबुद्धि हैं वे हीरा पाकर भी कांच की तलाश में भटकने पर मजबूर हैं। ब्रह्म, अज्ञान और संदेह-बुद्धि से मुक्ति मिलना भी ईश्वर की कृपा समझनी चाहिए। किसी सम्राट के द्वार मांगने के लिए जाने के बाद कहीं और जाकर मांगना दुर्भाग्य ही तो है। साधन के लिए बार-बार सत्गुरू से प्रार्थना करना जिज्ञासु का कर्त्तव्य है, यद्यपि गुरू की ओर से स्वतः ही कोई न्यूनता नही होती। जिस शिष्य में बुद्धि का अभाव होता है वही इधर-उधर भटकता है।

यह शरीर रूपी मन्दिर जिस कारीगर ने बनाया है उसे जानने के लिए विधाता ने मनुष्य को विवेक बुद्धि भी प्रदान की है। यदि गुरू धारण कर भी लिया जाए किन्तु अपनी विवेक बुद्धि का उपयोग नही किया जाए तो तत्व ज्ञान के मार्ग पर सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। ऋषि मुनियों ने ग्रन्थों में बहुत कुछ कह दिया है परन्तु उसका रहस्य जानने के लिए किसी गुरू की शरण में जाना आवश्यक है। गुरू दरबार में उपस्थित होकर, नम्रता पूर्वक अपनी जिज्ञासाएं रखो। जब गुरू परख लेंगे कि जिज्ञासु सच्चा है तब स्वयं ही मार्ग बता देंगे। संसार के साधारण से साधारण कार्य को सीखने के लिए भी गुरू, शिक्षक या मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है, फिर तत्वज्ञान की प्राप्ति के लिए तो किसी महान् तपस्वी, वैरागी, महात्मा की शरण में जाना आवश्यक है ही। उसके प्रति अटल विश्वास होगा, तभी मार्ग मिलेगा।

शरणागत गुरूदेव की ईश्वर द्वारा रक्षा व हाजरी

1. जब गुरूदेव को स्वयं प्रभु ने गोद में ले लिया

कल्लर में रहते हुए पढाई के दौरान आप रोजाना नियमानुसार रात को बाहर जंगल में चले जाया करते थे और सुबह घर वापिस आया करते थे। उन्हीं दिनों एक अपूर्व घटना आपके जीवन में घटित हुई जिसका जिक्र उन्होने स्वयं अपने शब्दों में उस वक्त किया था जब जून 1939 में नखेतर पर्वत पर गुरूदेव के एकांतवास के दौरान भक्त बनारसी दास जी खड्ड में गिर गए थे। तब आपने जीवनकाल की घटना का वर्णन इस प्रकार किया था :-

'सावन के मास का शुरू था काली अमावस की रात थी । बादलों के कारण गहरा अंधेरा छाया हुआ था। समय का ठीक से पता न चला । पहले पहर ही घर से निकलकर जंगल की राह ले ली। कल्लर से चलते-चलते काफी दूर निकल गए। जो रास्ता चोहा भगतां गांव की तरफ जाता था उस तरफ तेज-तेज कदम उठाए । काली अंधेरी रात की वजह से रास्ता ठीक से दिखाई नही दे रहा था। वह स्थान पथरीला पहाड़ी इलाका था, नीचे खड्डे में एक नदी पडती थी। अचानक पाँव जो फिसला तो फिसलते हुए नीचे खाई में जाने का आभास हो रहा था। सीधे खड़े-खड़े नीचे जा रहे थे। बस ! इतना ही मालूम हुआ कि किसी लम्बे-लम्बे कोमल हाथ वाले ने गोद में ले लिया। फिर होश न रही। प्रातःकाल जब सूरज निकला और दिन चढ आया तो अपने आप को एक नदी के किनारे पाया । कुछ देर बाद पांव फिसलने, गिरने और गोद में लेने की सारी बात याद आ गई। नजर उठा कर ऊपर देखा तो बड़ी ऊँची चोटी दिखाई दी। वाह मेरे मालिक ! तूं बडा ही बेपरवाह है, किस तरह हाथों से पकड़कर यहां रख दिया है, उस वक्त यह शब्द मुंह से अपने आप ही निकले। बडी देर तक नदी के किनारे बैठे रहे। दोपहर के बाद वहां से एक आदमी गुजरा उससे चोहां भगतां की तरफ जाने वाला रास्ता पूछा । उसने कहा, उस तरफ ऊपर जाओ, वहाँ से सीधा जास्ता निकल जाता है। फिर उठकर कपड़े उतारे और स्नान किया

देखा ! शरीर पर कोई चोट न लगी थी। कहीं रगड़ तक का निशान न था। स्नान करके फिर वहां ही एक ओट में बैठ गए। चोहां भगतां जाने का विचार ही छोड़ दिया। शाम को वहाँ से उठे और कल्लर लौट आए। घर पहुंचने पर बहनोई साहिब कुछ नाराज हुए। पूछा ! किधर गए थे ? कहकर तो जाना था। चुप होकर सब कुछ सुनते रहे। कोई उत्तर न दिया।

भगत जी से :- प्रेमी ! इस तरह वक्त गुजरता रहता था। काफिले वाले चलते रहते हैं। संसारी लोग आवाजें कसते रहते हैं। प्रेमी ! संसारियों का अपना रास्ता है, फकीर अपने हिसाब से चलते रहते हैं। संसारियों से मेल-जोल रखना कठिन हो जाता है।

2. जब भगवान को स्वयं मंगतराम जी की जगह हाजिरी देनी पड़ी

दूसरी घटना इस प्रकार है कि प्रभु अपने भक्तों की सदा रक्षा करते आए हैं, ऐसी बहुत सी मिसाले हैं इतिहास उनका साक्षी है। इस तरह की घटना सत्गुरू महाराज मंगतराम जी के जीवन से मेल खाती है जिसमें भगवान् को अपने भक्त का साकार रूप धारण करके काम भी करना पड़ा। सन् 1922 में जब आप पेशावर (पाकिस्तान) में स्थित सरकारी दफ्तर में काम कर रहे थे वहाँ आप दफ्तर में ज्यादा समय हरि चर्चा में व्यतीत करते थे या ध्यान मग्न रहते थे। एक बार ऐसा हुआ कि आप रोजाना की तरह रात में ध्यान में बैठ गए। मगर आप ध्यान में इतने लीन हो गए कि वक्त का ख्याल ही न रहा, दिन निकल आया। जब आप का ध्यान टूटा तो देखा कि दफ्तर का समय तो कभी का निकल चुका है। फिर भी आप जल्दी-जल्दी तैयार होकर दफ्तर पहुँचे। दफ्तर पहुंचने पर देरी से आने की सूचना देने के लिए सीधे अफसर के कमरे में चले गए। साहब दफ्तर के काम में मग्न थे। चंद मिन्टों के पश्चात जब उन्होने ऊपर देखा तो आपको सामने खड़े पाया और पूछा, 'मंगतराम' ! आप कैसे आए ? तो आपने बतलाया कि आज लेट हो गए हैं और लेट आने की इतला देने आए हैं। साहब यह सुनकर हैरान रह गए और कहा ! मंगतराम, आप तो ठीक

वक्त पर दफ्तर आए थे। आपकी हाजिरी लगी हुई है। आप कैसे कहते हो कि लेट हो गए। मंगतराम इतने सुनते ही सब राज जान गए, खामोशी से कमरे से बाहर आ गए। लौटकर अपने कमरे में सीट पर आए तो देखा कि किताबें खुली पडी हैं और उन पर जो काम होना था वह पूरा हो रखा था। यह देखकर खामोश हो गए, किसी साथी से कुछ नही कहा और अपने काम में लग गए। शाम को दफ्तर से छुट्टी करने से पहले-पहले अपना त्याग पत्र लिखकर ऊपर बड़े साहब को भेज दिया और घर चले आए। दूसरे दिन हसबमामूल समय अनुसार दफ्तर पहुंचे। बड़े साहब ने आपको बुलाया और दोनो के दरमयान इस प्रकार वार्ता हुई :-

साहब : मंगतराम ! आपने इस्तीफा क्यों दिया ? ऐसी नौकरी आसानी से नही मिलती। इसलिए आपको इसे नही छोड़ना चाहिए।

गुरूदेव : साहब ! इनसे केवल एक की ही नौकरी हो सकती है, दो की नहीं। वो भी बड़ी सरकार की। इनसे दो सरकारों की नौकरी अब नहीं हो सकती।

साहब : मंगतराम ! अगर तुम इस नौकरी पर रहोगे तो तुम्हे बहुत ऊँचे ओहदे पर ले जाऊंगा।

गुरूदेव : साहब ! आप कृपा करके यह बतलाएं कि आपने खुद क्या पा लिया है जो आप मुझे देंगे ?

साहब : यह जानते हुए कि उनकी बातों का मंगतराम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा तब अफसराना तरीके से कहा कि मैं आपका त्यागपत्र स्वीकार नही करूंगा।

गुरूदेव : साहब ! आप इस्तीफा मंजूर करो या न करो ! यह पहली तारीख से दफ्तर नही आएंगे, इतना कहकर आप कमरे से बाहर आ गए और फिर पहली तारीख से आप दफ्तर नही गए, वापिस घर लौट गए।

कर्मदण्ड के भय से स्वभाव में परिवर्तन/कर्म अमिट है

प्रेरक प्रसंग

आखिरी सितम्बर 1943 में गुरूदेव जी रावलपिंडी में प्रेमी नन्द लाल बिन्द्रा के मकान पर निवास कर रहे थे। रोजाना शाम को सत्संग होता था एक दिन आप प्रवचन करते हुए कर्मो के विचार दे रहे थे, उस समय एक दृष्टांत देते हुए बताया कि किस प्रकार एक डाकू कर्मो के नतीजे के भय से एक सिद्ध फकीर बन गया । आपने फरमाया कि शाहवली एक प्रसिद्ध डाकू उनके जन्म स्थान के निकटवर्ती गांव में रहता था। इलाका के लोग उससे बड़ा खौफ खाते थे। जीवन में शायद ही उसने कोई अच्छा काम सिवाय डाके मारने के किया हो। एक दिन शाहवली आधी रात में बैलों को लेकर घर से अपनी जमीन में हल चलाने के लिए निकल पड़ा। रात चाँदनी थी, समय का ठीक पता न चल सका, चलते-चलते बैल जरा रूका तो उसने उसको चाबूक मारा, तो बैल चल पड़ा। पर कहीं से हूँ हूँ की आवाज आई। सुनसान जंगल का रास्ता था, आधी रात का वक्त। वह यह न समझ सका कि आवाज कहाँ से आई व किसकी है ? वहाँ तो कोई आगे-पीछे दिखाई नही देता था। अचानक उसे ख्याल आया कि कल शाम को जब मैं इधर से गुजरा तो यहाँ एक पेड़ के नीचे एक खुदा दोस्त फकीर बैठा हुआ था हो न हो वह इस समय भी यादे इलाही मे बैठा हो, यह उसी की आवाज हो सकती है। वह उसकी ओर बढ़ा और देखा कि वही फकीर समाधि लगाया बैठा हुआ है। उसने आगे बढ़कर उससे पूछा कि साई जी आप को क्या तकलीफ है और क्या यह हूँ हूँ की आवाज आप की ही थी।

फकीर : मुझे कोई तकलीफ नही है मगर हूँ हूँ मैने आपको होने वाली तकलीफ को महसूस करते हुए की।
शाहवली : साई जी भला वो कैसे ?

फकीर : तूने बेजुबान जानवर को जो चाबुक मारा है उसका बदला जब तुझे भोगना पड़ेगा तो बड़ा दुख होगा ।

शाहवली : (कुछ देर के लिए चुप हो गया) फिर बोला कि साई जी अगर यह सच है तो मैने तो जीवन भर चोरी की है, डाके मारे

हैं, कितने ही घर उजाड़े हैं, यतीमों को सताया है, लोग मेरे नाम से खौफ खाते हैं। तो मेरा क्या हाल होगा ?

फकीर : जो तेरे कर्म का नतीजा हो सकता है वो हर हाल में भोगना पड़ेगा । उसकी सजा तो जरूर मिलेगी। शाहवली फकीर के बचन सुनकर अपने किए हुए कर्मों को यादकर भयभीत हो गया। शरीर काँपने लगा।

फिर पूछा : साई जी क्या ऐसी कोई युक्ति है जिससे इतने खराब कमों का फल न भोगना पड़े।

फकीर : हाँ जरूर है, शर्त यह है कि सच्चे दिल से खुदा से अपने गुनाहों की माफी मांग और आईन्दा कुछ न करने का वायदा कर। वो बखान हार तुझे जरूर माफ कर देगा।

शाहवली : साई जी मेरे जैसे गुनाहगार को भी ?

फकीर : हाँ जरूर ! और साथ ही शाहवली को यादे खुदा यानि सिमरन की युक्ति भी बता दी।

शाहवली पास ही बनी एक गुफा के अन्दर चला गया। फिर एक दिन लोगों ने देखा कि वह अपने गुनाहों को माफ करा कर और ईश्वर का साक्षात करके ही बाहर आया। कई दिनों तक कुछ खाया-पिया नही। मालिक के दरबार में रोता ही रहा अब उसकी हालत यह थी कि उसे गर्मी, सर्दी और बारिश का कुछ अता-पता नहीं चलता था। आम तौर पर लोग उसकी जुबां से यही सुनते थे कि ऐ खुदा, तेरे दरबार में मेरा जैसा गुनहगार भी बख्शा जा सकता है तभी तुझे फकीरों ने दयालु और कृपालु कह कर पुकारा है। अब उसकी हालत यह थी कि मुर्गे के बच्चे जब उसे अपनी चोंच मारते थे तो वह कहता था कि ठीक है मैने भी तो इनका बहुत मांस खाया है। यह था उस डाकू शाहवली (असली नाम दयाल चन्द) का तीव्र वैराग और सच्ची लग्न ईश्वर के चरणों में जिसने घर-बार सब कुछ भुला कर रख दिया और ईश्वर के साक्षात दर्शन करके वह अपना जीवन सफल कर गया। जब संसार में कोई ठोकर लगती है तो वैराग्य उत्पन्न हो जाता है और तीव्र वैराग होने से जीवन का लक्ष्य ही बदल जाता है।

अशुद्ध व शुद्ध व्यवहार का प्रभाव
गुरूदेव द्वारा सुनाया गया प्रेरक प्रसंग

जिस-जिस जीव को जैसी चाह होती है उसके मुताबिक वह पुरूषार्थ करना शुरू कर देता है जिसके अन्दर राज करने की इच्छा प्रबल होती है उसके कर्तव्य राज हासिल करने के लिए इस तरह के होते हैं जिसके लिए शारीरिक बल व बुद्धि दोनो चाहिए । नीति कानून सब जानता हो और जो-जो पॉलिसी, छल राजनीति में जरूरत पड़ती है, सब में माहिर होता है। वह कुदरती ऐसे संस्कार जन्म से ही लेकर आता है। जिसके अन्दर प्रभु की प्राप्ति के वास्ते लग्न होती है, उसका जीवन शुरू से ही त्याग भाव वाला व सदा संसार से उदासीन रहता है। न उसको खाने में खुशी होती है, न अच्छे कपड़े पहनने में, न और रख-रखाव में ध्यान रहता है। एक ही धुन सदा रहती है किस तरह मेरा साई मुझे मिल जावे ।

अगर मन के अन्दर यह आदर्श बना रखा है कि खूब खाऊँ-पीऊँ, सुख भोगूं तो वह बड़े-बड़े व्यापार करता है। अकसर धन की लालसा सबके अन्दर बनी रहती है जिसके वास्ते छल-कपट, झूठ वगैरा भी करना पड़ता है असल व्यापारी तो वह ही है जो संसार में रहते हुए सब काम करते हुए प्रभु आज्ञा में जीवन गुजारता है। लाभ हो, हानि हो और भी जो हो रहा हो, वह अपनी सफाई को नही छोड़ता । हमेशा धीरज में रहता है। कपट वाला व्यापार करने वाले के अन्दर भय सदा बना रहता है। वह कपट आखिरकार उसे नुकसान देकर रहता है।

पंजाब के अन्दर जो अनाज वगैरा खरीदकार दूसरी जगह जाकर बेच देने वालो को घुमहार लोग करके पुकारा जाता था । उनका काम ही यह था किसी मण्डी से या कई घरों से अनाज सस्ते भाव लेकर दूसरी जगह जाकर, जरा महंगे भाव बेचकर अपना गुजारा कर लिया । चन्द घुमहार गांव वालों से पूछ रहे थे "किसी के पास अनाज है ?" एक ने उनको बताया इस अकाल के समय में केवल

एक घर में ही गेहूं मिल सकती है और फलां गली में फलां माई का घर है। वह पूछते-पूछते उस माई के घर पहुँचे। माई चरखा कात रही थी। उनमें जो घुमहारों का सरदार बड़ा व्यापारी था, प्रजापत उसका नाम था। उसने माई से कहा-माई, गेहूँ, हमने लेनी है, जरा नमूना दिखाओ । माई कहने लगी अन्दर कठार में पड़ी है जाकर खुद ही नमूना देख आओ । प्रजापत ने जाकर गेहूँ देखी, नमूना पसन्द आ गया । माई से कहा गया - क्या भाव दोगी। माई कहने लगी बच्चा जो भाव मुनासिब है आप बता दो, वैसे ही कर लिया जावेगा । प्रजापत ने कहा माता मण्डी में इस भाव बिक रही है। हमने भी बाल-बच्चों का पेट पालने के वास्ते मेहनत करनी है, उस भाव से एक रूपया मंदा लगा लो और दे दो। माई ने कहा बच्चा परमात्मा सबकी पालना करने वाला है जो भाव कहते हो उस भाव ले लो। मगर आप ही अन्दर जाकर कठार से गेहूँ जितनी दरकार है, निकाल लो, तोल लो । हिसाब के पैसे जो बनते हैं दे दो। अंधे को क्या चाहिए दो आँखे । घुमहार कहने लगे - बस ! काम बन गया है, माई सीधी-सादी है, चलो अपना काम करलो । उन्होने अंदर जाकर गेहूँ अपनी मर्जी से ढेर बनाकर, तोलकर बोरियों मे भर ली ।

"चोराँ दे कपड़े, डांगां दे गज" माई चरखा कातती रही, वे मन ही मन बड़े खुश हुए आज बड़ा दांव लगा है। ऐसा वक्त का अन्धा कौन मिलेगा। धारण में, गिनती करने में ज्यादा तोल कर के थोड़ी बताई । हिसाब ज्यादा बना कम बताया । घोड़ो, खच्चरों पर लादकर कहने लगे -इतने मन, इतनी बोरियां और इनके इतने पैसे बनते हैं। माई कहने लगी अच्छा ! बच्चा ठीक है । प्रजापत ने कहा - बेशक किसी से हिसाब करा लो । माई कहने लगी - जो हिसाब तुमने किया सो ठीक है । वह पैसे कठार के ऊपर पड़े कूजे में डाल दो । माई की सब बातें सुनकर, देखकर बड़े हैरान हो रहे थे । रत्ती भर भी किसी बात से लगाव नही है। साथ-साथ में कह रहे थे - ऐसा व्यापार हमने आज तक नही देखा है। आज दांव लगा है मतलब

माई से भाव भी कम लगाया है, घड़ा भी ज्यादा कर लिया और जो ठगी हो सकी कर ली, माई ने कुछ झगड़ा नही किया, कुछ खोटे, कुछ खरे पैसे डालकर चल दिए। जल्दी-जल्दी जैसे चोर माल लूटकर चलते हैं, जैसे चालाक लोग किसी देहाती अनपढ़ को ठगकर जल्दी-जल्दी खिसकने लगते हैं। जब खच्चरों पर माल लेकर कस्बा से बाहर चार-पाँच कोस निकल गए तो जिस प्रजापत की कमर से रूपयों की बानसली बंधी हुई थी, उसने जब हाथ कमर पर धरा, झट ही चौंक पड़ा। घबराकर कहने लगा बानसली रूपयो वाली कहाँ है ? सब सोच में पड़ गए, वह तो माई के घर ही भूल आए हैं। रूपये देकर फिर बांधकर शायद वहाँ ही रख दी है। जल्दी में नुकसान कर दिया, गेहूँ की बोरियां उठाने लग गए थे । बानसली किसी ने उठा ली होगी। अब नही मिल सकेगी। अब वह व्यापारी सिर पर हाथ रखकर वहां ही बैठ गए। सलाह करने लगे, क्या किया जाए। एक ने कहा- अब तो दूध का दूध और पानी का पानी ही होगा। अब बानसली नही मिलेगी। आपस में सलाह करके वह व्यापारी वापिस गांव में माई के घर पहुंचे । माई और उसके लड़के घर आए हुए थे। प्रजापत उनको देख कर घबरा गए । माई से चुपके से घबराकर बात की। ऐसे-ऐसे हमारी बानसली में इतने रूपये बंधे रह गए हैं। माई ने बड़े सादे भाव में कहा- देख लो जहां रख गए वहीं होगी। प्रजापत ने जाकर देखा बानसली मिल गई। माई ने कहा अब सफर न करो। चोरों का जमाना है, ऐसा न हो रास्ते में ही लूट जाओ। प्रातः ही निकल जाना। मण्डी में जाकर माल बेच देना । सबने सोचा यहां ही रहना ठीक है। रोटी जब तैयार हुई, उसके बड़े लडकों ने थाली लेकर रोटी खुद ही डाल ली। अपने आप खाने लगे और साथ ही उन व्यापारियों को भी खाना खिलाया । जब सब खा-पी चुके, उस माई का छोटा लड़का आ

हुए थे, खुद परोस कर थाली लड़के के आगे रख दी। प्रजापत सथ देख रहा था। माई ने छोटे लड़के के साथ बहुत प्रेम दिखाया और बडे लड़को ने खुद ही रोटी ली। इस पर प्रजापत से न रहा गया उसने पूछा-

प्रजापत : माता ! यह क्या बात है ? इस छोटे बच्चे को तो बहुत प्रेम से खाना खिलाया है और आप को बाकी सारा काम बेदिली से करते देखा गया है। हमसे गेहूँ लेते, तोलते, पैसे देने में कोई दिलचस्पी नही ली, न बड़े बच्चों मे आपका मोह देखा। आपका केवल छोटे बच्चे से ही प्यार दिखाई दिया।

माई कहने लगी : इस छोटे बच्चे ने उन बड़े बच्चों से पिछले जन्म का कुछ लेना है और मैने इसका कुछ देना है। यह हिसाब अगले 6 महीने में पूरा हो जाएगा। प्रजापत ने पूछा-माई तू ये सब कैसे जानती है

माई ने कहा : अढाई वर्ष पहले मैं बीमार हो गई थी और मृत्यु के बिल्कूल नजदीक पहुंच गई थी घर वाले सब हाहाकार करने लगे थे। मैं धर्मराज के दरबार में हाजिर थी, चूंकि मेरी शादी के कुछ वर्षों पश्चात ही मेरा पति परलोक सिधार गया था। मैं बेवा हो गई थी और बच्चें यतीम हो गए थे। इनके पालने पोसने में लगी रही। नौकरों से क्रोध करके खेती-बाड़ी का काम करवाया। जमींदारी का काम एक किस्म का राजा की तरह का काम है। मैं लडाई झगडों से गुजारा करती रही। ढींगा मस्ती से काम चलता रहा बडी होशियारी से समय गुजारते हुए यह बच्चे बडे हुए थे। इस सारे कारज को चलाने के वास्ते हक नाहक, चालाकी, ज्यादती, छल-कपट, अच्छे बुरे सब काम का हिसाब धर्मराज के पास था। धर्मराज ने मुझे सारा हिसाब दिखाया और सुनाया मैं घबरा गई। इन कर्मों का हिसाब तो मुझे कई जन्म तक भुगतना पडेगा। कैसे भुगतान होगा यह किस्सा अभी चल ही रहा था कि धर्मराज कहने लगे, "इस माई को अभी क्यों ले आए हो इसकी

उम्र अभी तीन साल की ओर बाकी है, इसे वापिस करो।" कहते ही धर्मराज के दूतों ने मुझे ऊपर से धक्का दिया क्या देखा कि इधर मेरी आंख खुल गई बच्चे वगैरा रो रहे थे मैं धीरे-धीरे ऐसे उठकर बैठ गई जैसे कोई सो कर उठता है। अब जबसे मैं अगला रास्ता देखकर आई हूं उस ईश्वर के व दण्ड के भय से मेरे भाव बिल्कुल बदल गए हैं। ऐसे बन गए हैं कि चाहे कोई जितनी मर्जी ज्यादती करे, ठगी करे, कपट करे, मेरे साथ बुरा सलूक करे मगर अब सबको सहकर भी किसी के साथ बुरा नही करूंगी, जबरदस्ती नही करूंगी। जो ज्यादती किसी पर करता है ऊपर मालिक देख रहा है। मालिक जाने, करने वाला जाने। इस ख्याल से मेरे कर्तव्य का असर बच्चों पर भी है। बाहर फसल पर भी कोई नुकसान कर जाए, गन्ना-मक्की इत्यादि की चोरी कर ले फिर भी बोलते नही। मुंह फेर लेते हैं ताकि ले जाने वाला आराम से ले जाए। किसी को न हाथ लगाते हैं न ओए करके कुछ कहते हैं।

और ठगे दुख होत है, आप ठगाये सुख होय ॥

मेरे मालिक की बहुत मेहर है, फसल और पैदावार गांव वालों से अच्छी निकलती है। अढाई साल बीत गए हैं, छः माह बाकी हैं। जब माई का सारा किस्सा प्रजापतियों ने सुना उनको भी अपनी करनी पर खौफ आया । अपनी मौत व कर्मों को याद करके पछताने लगे। कहने लगे माई जी "हमने आप के साथ जो गेहूँ का व्यापार किया है, सो बहुत ठगी से किया है हर बात में बोल तोल में, पैसे देने के भाव में सब झूठ ही किया है जिसकी कुदरत ने सजा दी बानसली यहीं रह गई इधर आपका सारा मामला देखा और सुना । आप भी माफ करें और परमात्मा से प्रार्थना करें कि हमें ऐसी गलतियों की सजा न दें। हमने समझा था माई भोली-भाली है।" प्रजापतियों ने सारी गेहूँ उडेल दी, अच्छी तरह से तोलकर हिसाब किया और पूरी रकम तथा खरे रूपये देकर हाथ जोड़े।

आज की पूजा/आज का धर्म

1.जब - जब जीव धर्म मर्यादा को भूल जाते हैं, कहर इलाही (ईश्वर) नाजल हुआ करता है। जंग व जलद, लूट खसोट, मारकाट का बाजार गर्म होता है। अति तमोगुण बढ़ जाते हैं और ऐसा ही हुआ करता है। इस समय भी न तो खाने-पीने की और उठने बैठने की तमीज है। मानुष और पशुओं के जीवन में कोई फर्क नही रहा। गिरावट की इस समय हद हो गई है। प्रेम भाव खत्म हो चुका है। वैर भाव अधिक बढ़ गया है। राम कृष्ण के नाम लेवा, उनकी शिक्षा को भूल गए हैं। धर्म का स्वरूप, उनकी मूर्तियों को धूप दीप देना ही समझ रखा है। गीता का वह फिलस्फा व ज्ञान जो च्यूटी से लेकर ब्रह्मा तक व तिनकों पहाड़ों मे उस आत्मा को व्यापा हुआ देखना सिखलाता था वह अलोप हो चुका है। सगुण व निर्गुण पूजा का मतलब अपनी मरजी के मुताबिक निकाला जा रहा है। सत्पुरूषों के फरमान के मुताबिक सगुण देह में निर्गुण आत्मा की खोज को भूलकर पत्थरों को गले से लगा रहे हैं और जीवों के बधिक बन रहे हैं।

2."कई तपस्वियों के तपोबल ने देश और धर्म के लिए कुर्बानियां दी। मगर हिन्दू जाति ने किसी का साथ नही दिया यह मुर्दे पूज कौम है। मरने के बाद सत्पुरूषों की मूर्तियां थाप कर उनकी पूजा शुरू कर दी। फूल चढ़ाने लगे गऊओं को पेड़े देने और तीर्थों पर जाकर स्नान करना धर्म मान लिया। कपट करना, कम तोलना नही छोड़ा। आपस में मिलकर बैठना नहीं आया। मां का धर्म कुछ है, बाप का कुछ। लड़का पिता से मुतरिफ (भिन्न विचार) है। ऐसे हालात में प्रेम भाव कैसे बन सकता है।"

3."कभी ऐसा समय था घर-घर में आत्म ज्ञान का विचार होता था। आज धर्म का सारा स्वरूप ही गायब हो गया है। हर एक जीव रात दिन माया की पूजा में लगा हुआ है। शरीर की बनावट, सजावट में ही सारा समय लगा देते हैं। सही सत् विचार न होने

करके हर जीव अशांत हो रहा है। गो (यद्यपि) लोग मंदिरों, गुरूद्वारों में जाकर प्रार्थना करते हैं मगर अन्तर में खोटी वासना के होने से किसी को भी मानसिक शांति प्राप्त नही हो रही है। हर एक का धर्म आजकल सिनेमा देखना, खाना पीना ही बना हुआ है।"

4. टली बजाना, सुत्र लपेटना, पानी चढाना, यह पूजा नही है। ऊँचे ऊँचे राग गाना यह भी पूजा नही है।

5. किसी भी महापुरूष ने किसी देवी देवता की पूजा अराधना नही दरसाई। पितृ पूजा, देवी पूजा, देवताओं को खुश करना, जादू, जन्तर-मन्तर, तावीज सब खाने के मसले पंडित मौलवियों ने बना रखे हैं। गणपति, दुर्गा चण्डी, जिन्न-भूत आदि अनेक तरह के कामनावादी जीवों ने अपने अपने देवता घड रखे हैं। यह अंधेरा आज का नही मुहम्मद साहिब के समय से चला आ रहा है।

6. वास्तव में यह जीव इस शरीर की भक्ति कर रहा है। यह इस शरीर से कभी गाफिल नही होता और इसको किसी देवी देवता पर निश्चय भी है तो वह महज शरीर के सुखों को पूरा करने की खातिर है। मतलब यह है कि ईश्वर को भी यह जीव अपने सुखों के लिए ढूंढता है।

7. प्रेमी, गंगा नहाने से मुक्ति नही मिलती। मुक्ति कर्मों से मिलती है। जहां बैठे हो वहां ही गंगा बन सकती है। यह सिर्फ आचार्यों ने खाने के तरीके बनाये हैं। पंडितो के कहने से जान नही छूटेगी। करनी भरनी पड़ेगी। प्रेमी, जब पांडव गंगा स्नान करने जा रहे थे तो कृष्ण ने उनको एक तुम्बी दी थी और कहा था इसको भी गंगा स्नान करवा लाना । पांडवो ने ऐसा ही किया। जब वापिस आए तो कृष्ण ने उनसे पूछा 'क्यों भई इस तुम्बी को भी स्नान करवा लाये हो?' उन्होने जवाब दिया, हां महाराज, बहुत ज्यादा ।' परन्तु उसका स्वाद कड़वा ही रहा।

आजकल धोती बांधनी, तिलक लगाना, मन्दिर में गढ़वा पानी का शिवलिंग पर चढाना और पक्की रसोई खाने में ही कल्याण समझी हुई है और रकम जमा करनी सबसे बडा कर्तव्य मान रखा है। मकान और शादी पर ज्यादा से ज्यादा खर्च करके मान बढाई हासिल करनी ही बडा फर्ज और पुण्य जानते हैं। सत् सेवा में भी कोई कोई बनिया आगे रहता है। मायाधारी लोग इससे ज्यादा धर्म कर्म नहीं जानते।

9. गुरूओं ने बड़ी से बडी कुर्बानी करके सत्धर्म को फिर से खडा करने की कोशिश की थी आज तरट्टी चोड हो रही है। गुरूद्वारों का दान श्री गुरू गोबिन्द सिंह ने दरिया में फैकवा दिया था दान का पैसा गरीब, अनाथ, यतीम और देश सेवा में खर्च के वास्ते होता था। नाकि गुजरान के वास्ते। जैसे ब्राह्मणों ने पत्थर के ठाकुर बनाकर पेट पूजा बना रखी है। उन्होने दरबार साहिब सजा लिया है। दरबार में तत्वज्ञान भरा है। इसे निर्मल बुद्वि से विचार करके ही निर्मल पद पाया जाता है।

10. यह जीव आसरे ढूंढता रहता है चाहता है कि उसकी जगह कोई मौलवी पंडित भाई पाठ करदे। झूठ, कुसत जो यह दिन रात कर रहा है उससे कोई क्या छुडा सकता है। जिन्दगी में जो शुभ-अशुभ कर्म इसने किया है उनका एव जाना इसे जरूर देना पडेगा।

11, जीव के वास्ते बाहर से कोई दुख नही लाता। जीव की अपनी शुभ अशुभ करनी ही उसके सुख-दुख का बायस बनती है।

12. कल्याण चाहते हो या भगवान के चरण अमृत से मुक्ति हासिल करना चाहते हो और चाहते हो कि करना धरना कुछ ना पडे प्रेमी यह ठगी ठगोली करके भगवान को ठगना चाहते हो क्या वह भोला है कुछ नही जानता ? तुम भी पागल और तुमको

रास्ता दिखाने वाले भी अंधे । जो अपना कल्याण नही कर सकते वह तुम्हारा क्या कल्याण कर सकेंगे कोई ठीक रास्ता पकडो पहले समझो करना क्या है, किधर से आए हैं, किधर जाना है, कल्याण का रास्ता बताने वाला कैसा होना चाहिए।

13. जब तक अंतःकरण शुद्व नही होता, पापवृति कायम रहती है। अपने लाभ के लिए दूसरे की हानि का भाव मौजूद रहता है जबान में मिठास नही, दूसरो से प्रेम नही तब तक एक नही ख्वाहे लाख गंगा स्नान कर लिए जाएं बडे-बडे तीर्थों की यात्रा कर ली जावे सब बे फायदा ही है। इस वास्ते सही कल्याण को प्राप्त करने के लिए अपने आचार-विचार शुद्ध करने चाहिए । सत्पुरूषों से सत् मार्ग प्राप्त करके उनके बताये हुए असूलों और साधनों को अपना कर ही मुक्ति हो सकती है।

14. व्रत के दिन ज्यादा स्वाध्याय किया जाए।

15. अगर कोई इन्सान, जिस बुत या मुर्ति को मानने वाला है, उसकी तालिम यानि शिक्षा पर अमल करता है तो ठीक है, वह वहदत परस्त (ईश्वर को मानने वाला है) है। वरना सब कुछ बुतपरस्ती ही है।

जीवन कैसे जिएं /
सुख शान्ति कैसे आए

1. पहले क, ख पढ़ो मतलब यह कि सादगी धारण करो। फिजूल खर्ची का त्याग करने की कोशिश करो। जब तक तुम अपनी आदत पर काबू नहीं पाओगे कभी भी किसी पहलू में कामयाब नहीं हो सकते ।

2. तेरा शरीर ही तेरी दुनिया है। अगर तेरा मन मैला है विकारो से नापाक है तो तेरा गन्दा संकल्प सारी दुनिया को गंदा कर देगा।

3. रेडियो की मिसाल लो : किस तरह आवाज एक जगह से चलकर चंद लम्हों में सारे कुर्राह हवाई के इर्द-गिर्द घूम जाती है और जहाँ कहीं रेडियो लगे हैं सुनाई देती है। आज भौतिक दृष्टि से भी सारा संसार एक हो रहा है। किसी एक मुल्क की गलती का खम्याजा सारी दुनिया को भुगतना पड़ता है। इसी तरह रूहानी दुनिया में लोगों के मैले मन से निकले हुए गंदे संकल्प तमाम दुनिया के वातावरण को खराब करते हैं। तुम्हारे खोटे संकल्प दूसरों के खोटे संकल्पों के साथ मैल पैदा करके तुम्हारी गिरावट और नाश का कारण होंगे।

4.इसलिए जीव को चाहिए कि इस दुनिया में आकर ऐसा काम न करे जिससे उसके मानसिक दोषों में वृद्धि हो। तेरा पाप तेरा नाश कर देगा। इसलिए शरीर अथवा मन को सदाचारी जीवन में लगा। सत् यानि ईश्वर की सत्ता में निश्चय रख। उसकी तलाश कर जीवन को कर्तव्यमयी बनाओ। अगर आप अपना फर्ज पूरी तरह से निभा देंगे तो बाकी सब अपने आप ठीक हो जावेगा।

पांच असूलों (सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग, सिमरन) को धारण करो । दीन-दुनिया की जीत इसी में है हर एक से मोहब्बत करो दुखी का दुख दूर करो। असली जिन्दगी का सामान खरीद करो। क्या बनेगा जब वजूद (शरीर) नाश को प्राप्त होगा। जिन्दगी में अपने सुधार और देशभक्ति को धारण करो।

6. राक्षसी जिन्दगी को तर्क कर दे । तुम्हारे लोगो की जिन्दगी पर ही देश और धर्म है अगर तुम सच्चे सुपुत्र बनोगे तो बाजी जीत जाओगे।

7. अपने कारोबार में हकशनासी को धारण करें। दूसरों का हक खाना असलियत में अपना ही नाश है। यह निश्चय करके जान लेंवे।

8. हर वक्त कल्याण के वास्ते सोचते रहो। अंतर विखे जो चोर बैठे हुए हैं पलक - पलक विखे उनसे बचाव करो। बार-बार सोचो जिन्दगी किस लिए मिली है। जो श्रवण किया है उस पर अच्छी तरह विचार करो और उसे धारण करो।

9. सत्संग द्वारा विचार ग्रहण करके अपना प्रोग्राम बनाओ उस पर कस कर चलो इस जिन्दगी का आखिर मरण ही है कोई भी इसे महाकाल कराल से नही बचा सकता । तेरे शुद्ध विचार ही विवेक है ऐसे विचारों की परिपक्वता ही निश्चय है।

10. सत्य बोलो, सेवा करो। सत्संग में आया करो। फिर आहिस्ता, आहिस्ता किसी गुरू, पीर का आधार पकड़ो।

11. आलस छोड़कर सत पुरूषार्थ धारण करो।

12. जिन्होने अपने ऊपर काबू पा लिया है उनकी नजदीकी हासिल करो तब ही तृष्णा रूपी नदी को पार कर सकोगे ।

13. नेक अमल, सतकर्म धारण करो। जिन कर्मों से मन की अशांति बढ़े उनको छोड़ दो।

14. स्वार्थ छोड़ो, फर्ज को पकड़ो।

15. वास्तव में शान्ति और अशान्ति तुम्हारे कर्तव्य में निहित है इसलिए श्रेष्ठ कर्तव्य करने वाले बनो। दुष्कर्म ही अशान्ति का मूल है। उनसे स्वार्थ परमार्थ दोनो बिगड़ते हैं। अतः अपने जीवन को पवित्र बनाने का प्रयत्न करो। सत्कर्म शुद्ध आहार पवित्र व्यवहार धारण करना जिससे बुरी वासनाओं का अन्त हो जाए वह सच्ची शान्ति का मार्ग है। ईश्वर सभी सज्जनों को सुमति प्रदान करे जिससे अपने समाज, देश और परिवार को वास्तविक शान्ति प्राप्त हो।

16. यह एक मोटी थ्योरी है कि अपना स्वभाव ही सुख रूप है। जीव की सबसे बड़ी चाह सुख की प्राप्ति है। इस वास्ते इसका सबसे पहला कर्तव्य है कि सबको सुख दिया जावे। इंसानी शरीर दूसरों को सुख देने के वास्ते है। इसी में उसकी शोभा है। अपने आपको सुख देने की चेष्टा तो सब भूत प्राणी कर रहे हैं। लेकिन बाकी जीवों से मानुष की क्या उच्चता है । वह यह कि जब जीव श्रेष्ठ करने लग जावेगा, दूसरों का भला करना उसका स्वभाव बन जाएगा, तब इसके अंदर सच्ची कुर्बानी व सेवा का जज्बा पैदा होगा और इंसानियत के मायने सही तौर पर समझने वाला होगा। "सत् पुरूषार्थ में ही परम लाभ है। झूठा पुरूषार्थ हानि दिया करता है। सत् की स्थापना के वास्ते सतपुरूष हर युग में संसार के अन्दर आए और पाखंडवाद का खंडन करते रहे । बडे-बडे दुख, मुसीबतें, फांके उठाकर सुधार की कोशिश करते रहे मगर मायावादी अपने रंग ढंग में ही चलते रहते हैं।

विरला ही तलवार की धार पर चलकर पार होता है। अपना भाव ठीक रखना चाहिए। मोटी बात यह है सबसे प्रेम भाव रखना, किसी से द्वेष न करना, जहां तक हो सके तन, मन से दुखियों की सेवा करनी, अच्छे महापुरूषों को देखकर खुश होना और सेवा करना, पापी जीवों को देखकर नफरत विरोध न करना बल्कि उदास होना/उनके लिए चित से प्रार्थना करनी : 'ईश्वर इनको सुमति देवे'। निन्दा किसी की नही करनी, सत्संग सत् सिमरन में लगे रहना। यह ही सत् धारणा किसी समय पर परम गति की तरफ ले जायेगी इसी तरह विचार करते रहा करो। एकांत का बडा लाभ यह ही है कि सत् सुनना और मनन निध्यासन करना। जब तक शुभ गुणों की धारणा में न लगोगे तब तक कोई लाभ नही। सत्संग यह ही है बार-बार सत् का निर्णय करना। सत् कर्म कोई एक ही कर्म नही होता। जितना दिन-रात में मन इन्द्रियों द्वारा व्यवहार करता है मर्यादा पूर्वक हो, जीवन निर्वाह मात्र । बाकी समां आत्म उन्नति में देना ही सत् तत् की धारणा है, यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए 'सत करतार, झूठ संसार' सब ग्रन्थ, वेद ऋषि मुनि इस बात की दृढ़ता करवा देते हैं। जितनी इस सत् भावना की दृढ़ता हो सके उतनी ही थोड़ी है।

मनुष्य जीवन का उद्देश्य व
जीवन सफल कैसे हो

1. जब जब जीव धर्म मर्यादा को भूल जाते हैं। प्रकृति का प्रकोप नाजल होता है। युद्ध और हिंसा लुट-खसोट, मार-काट होने लगती है। अति तमोगुण बढ़ जाने के कारण ही ऐसा होता है। आज यही हो रहा है। मर्यादा शिष्टता सब समाप्त हो रही है। मनुष्यों और पशुओं में कोई अन्तर नही रहा। इस समय पतन की चरम सीमा है। प्रेम भाव समाप्त हो चुका है। ईर्ष्या, द्वेष, वैर विरोध वहुत बढ़ गए हैं।

2. जिस प्रकार हर वस्तु किसी नींव पर खड़ी है, वृक्ष जड़ पर आधारित है, भवन की अपनी नींव होती है इसी प्रकार मनुष्य का जीवन भी किसी सिद्धान्त पर आधारित है। मनुष्य पहले पैदा होता है फिर होश संभालता है। जब युवा होता है यौवन के मद में चूर होता है। अभिमान में आकर कहता है कि संसार में कोई उसके सामान ही नहीं। धरती को रौंदता है। सत्मार्ग पर चल कर यदि सही पग न उठाया तो इस संसार से पश्चाताप लेकर चला जाता है। खाना, पीना, सोना, जागना आदि विकार मनुष्यों और पशुओं में एक से हैं। मनुष्य की श्रेष्ठता तभी है जब वह सही सिद्धान्त सोचे और उसके अनुसार अपना जीवन ढाले। अपना सुख दूसरों में बांटे।

3. वास्तव में जीवन के सम्बन्ध में विचार करना बहुत कठिन है। शरीर प्राण-धारा के साथ में चलता है इसे एक विशेष शक्ति चला रही है इस शरीर रूपी रथ को जीव अपने स्वभाव के अनुसार चलाता रहता है। कोई चोरी करता है, कोई अपशब्द बोलता है, कोई मधुर वचनों से सबका मन मोह लेता है । माता-पिता संतान को जन्म देते हैं बुद्धि या स्वभाव को नहीं, स्वभाव सबका अलग-अलग होता है। इसका कारण अपने कर्म

और संस्कार हैं। पहले अपनी बीमारी की अच्छी तरह जांच कर लो फिर उसका इलाज भी हो जाता है। जो अपनी बीमारी को समझता ही नही वह उसे कैसे ठीक कर सकता है। इस बीमारी में सभी जीवधारी खड़े है। इसी आन्तरिक विकार रूपी दैत्य को पहचान कर नष्ट करना मनुष्य जीवन का उद्देश्य है

4. प्रेमियों, विचार करना है कि इस मनुष्य जीवन को धारण करने का उद्देश्य क्या है। गहराई से देखा जाए तो सामान्य जीवों के जीवन का उद्देश्य केवल आहार निंद्रा, मैथुन (खाना, पीना, सोना, भोगविलास करना आदि ही प्रतीत होता है। परन्तु ऐसा तो पशु पक्षी आदि भी कर रहे हैं। तब मनुष्य और पशु पक्षियों मे अन्तर क्या है। मनुष्य को विधाता ने बुद्धि दे रखी है। जीव कई बार सोचता है कि भूख तो कभी समाप्त नही होती। सुबह खाया शाम को फिर भूख लग गई सत्पुरूषों का कथन है कि जीव खाते हुए भी भूखा है। इकठ्ठा कर करके भी कंगाल है। ज्यों-ज्यों भोग भोगता है त्यों त्यों तृष्णा बढ़ती है। तब उन्होंने बताया कि वास्तविक तृप्ति इन भोगों में नहीं है। यह शरीर तो परिवर्तनशील है बनना और बिगड़ना इसका स्वभाव है। इसलिए उन्होने इसके भीतर की अखंड शक्ति की ओर ध्यान दिलाया । वही शक्ति पूर्ण है। उसे पाना ही तृप्ति है।

1. मनुष्य जीवन का मकसद (ध्येय) निर्भय शान्ति है अर्थात् ऐसी खुशी जिसमें तबदीली का डर न हो। यह तब ही हासिल हो सकती है जब जिस्म की छानबीन करके उसके अन्दर जो जीवन शक्ति है उसे मालूम किया जावे। यह जीव अज्ञान की वजह से वास्तविक शान्ति की तलाश अपने अन्दर करने के बजाए संसारी पदार्थों में कर रहा है। चूंकि संसार की सब चीजें नश्वर एवं क्षणिक है इसलिए उनसे मिलने वाले सुख भी नश्वर एवं क्षणिक होने की वजह से दुःख और अशान्ति का कारण बन जाते हैं जो

जीव सुख चाहता है उसे चाहिए कि अपना सुख दूसरों पर न्यौछावर करे। इससे उसे सुख मिल जावेगा। इस मानुष देह का असली मकसद जानो । जब जान लोगे तब कहीं सही सोच वाले बनोगे। इस मानुष देह को धारकर सिर्फ भोग प्राप्ति के वास्ते यत्न करते रहना यह सही यत्न नहीं हैं। इस शरीर की विशेषता यह ही है कि अपने आप की पहचान करें। यह जाने कि कहां से आया है ?, किधर जाना है ?, और क्या कर रहा है ?, ईश्वर क्या है ?, संसार क्या है ?, आत्मा क्या है ?, जिस्म क्या है ?, आत्मा शरीर का सम्बन्ध कितनी देर चलेगा ?, अन्तर विखे जो वासना उमड़ रही है यह किधर ले जा रही है ?, इसकी निवृति कैसे होगी ?, मनुष्य स्वार्थ में फंसकर गलतियां करता है और पछताता है व्यर्थ ही नदी की लहरें गिनता रहता है और जब भंवर में फंस जाता है जिससे न अपना कल्याण न देश का । गुरू गोबिन्द सिंह ने अपने बच्चों का उत्सर्ग किया दुर्ग वैभव सब छोड़ दिया किन्तु सिद्धान्त नही छोड़ा प्रकृति ऐसे ही परीक्षा लेती है।

6. मनुष्य के जीवन का उद्देश्य है इस दैवी, आसुरी स्वभाव का भेद पहचानना । भलाई-बुराई का विवेक करके ही मनुष्य अपने जीवन को सही मार्ग पर चला सकता है महान वही है जिसमें नम्रता और परोपकार की भावना है, जिसका स्वभाव शुभ है वही श्रेष्ठ है। नीचे वह है जो स्वार्थ के कारण अन्य जीवों को कष्ट देता है।

7. इस कर्म रूपी संसार में जैसा करोगे वैसा पाओगे मनुष्य जीवन पाकर सतसाहस धारण करो, हृदय को उदार बनाओ, प्रभु में विश्वास रखो, दूसरों का हित चाहोगे तो तुम्हारा भी हित होगा। तुम सब ईश्वर विश्वासी बनो। बच्चों वाले विचार छोड़कर नेक अमल, सतकर्म धारण करें।

तृष्णा महारोग

1. जीव शरीर रूपी संसार को धारण कर, हर समय तृष्णा की आग में जलता रहता है। जब तक तृष्णा का रोग लगा है, शान्ति नहीं मिल सकती। पांच तत्वों से बना हुआ यह शरीर तृष्णा का सागर है। जितनी तृष्णा अधिक है, उतना ही कष्ट अधिक है। जितनी तृष्णा कम है, उतना ही सुख है।

2. प्रत्येक जीव को तृष्णा-रूपी रोग लगा हुआ है। तृष्णा की पूर्ति के लिए धनी-निर्धन, राजा-रंक सभी दिन-रात लगे रहते हैं। अनेक प्रयत्नों के बावजूद यह रोग बढ़ता ही जाता है।

3. तृष्णा की आग की तपन पल-पल बढ़ रही है। जन्म से मृत्यु तक सभी इसी में जलते रहते हैं। इस शरीर ने बहुत कुछ खाया-पिया, परन्तु तृष्णा समाप्त न हुई –

अधिक धन प्राप्त कियो, अधिक पाया परिवार ।
मान मद पाई बहु कीर्ति, पर मिटे न मन अंधकार ॥

बड़े बड़े यल-प्रयल किए, राजा-महाराजा, चक्रवर्ती भी बन गए, परन्तु अन्त में व भी प्यासे और निराश ही गए। विवेकी पुरूषों ने विचार करके जाना कि सत् स्थिति प्राप्त होने पर दशा यह हो जाती है कि न किसी वस्तु के मिलने पर हर्ष होता है, न बिगड़ने पर विवाद होता है।

4. वास्तविक इच्छा है - अखण्ड शांति की । परन्तु जितने भी पुरूषार्थ हो रहे है। उनसे अशांति बढ़ रही है। मूर्ख जीव देवी-देवताओं के पीछे भाग रहा है। उसे पता नहीं है कि उसके कर्म ही ठीक नही। देवी-देवता उसे कैसे बचा सकते हैं। महापुरूषों ने विचार करके जाना कि तृष्णा ही सबसे बडा रोग है। यह वह आग है जो ठंडी होने की बजाए अधिक भडकती जा रही है। सभी इस रोग में ग्रस्त है। जिस

उसी प्रकार भोग-विलास में फंसे लोग अंत से अपरिचित रहते हैं।

5. शहर वाले कहते हैं - गांव वाले सुखी हैं। गांव वाले समझते हैं-शहरी बड़े आराम से रहते हैं। वास्तव में दोनों को ही शान्ति नही। जितनी आशा-तृष्णा बढ़ती है उतनी ही अशान्ति बढ़ती है। आज सुख मिलेगा, कल मिलेगा - इसी आशा में जीव निरन्तर प्रयत्न करता हुआ सांसारिक भोग भोगता है। उन विषय-भोगों रूपी घी से तृष्णा की अग्नि और भी भड़क उठती है। इस आग में पडकर आज तक कोई भी जीव सुखी नही हुआ। चाहे लाख वर्ष की आयु क्यों न मिल जाए, अन्त में तो इस संसार से खाली हाथ ही जाना पड़ता है। आखिरी समय कोई चीज सहायक नहीं होती।

6. संसार यातना का सागर है। सभी जीव अपनी प्यास बुझाने के लिए दिन-रात भटक रहे हैं। अनेक महापुरूषों ने इस सम्बन्ध में खोज की तो उन्हें अनुभव हुआ कि जीव तृष्णा- रूपी रोग में इतना डूब चुका है कि उसे सही विचार करने का अवसर ही नहीं मिलता । माया का इतना घना अंधेरा छाया हुआ है कि बडे-बडे धनी, ज्ञानी तक धैर्य प्राप्त नहीं कर पा रहे। बिना सत् ज्ञान के प्रभु की माया का ओर-छोर नहीं जाना जा सकता। माया के मोह में जीव की तृष्णा और परेशानी समाप्त नही होती। महापुरूषों ने बताया कि संसार की चहल-पहल केवल चार दिन की है। सदा एक-सी दशा किसी की नहीं रही।

7. पश्चिम वाले भोगों की सामग्री को एकत्र करने में सुख मानते हैं और उसी की तृष्णा में दिन-रात एक करते रहते हैं। यही तृष्णा, अर्थात् भोगवाद की समृद्धि आपसी कलह और युद्ध के लिए उकसाती है।

तृष्णा माहीं जग आए, तृष्णा माहीं जग जाएँ, ।
अनेक भोग प्राप्त पाए तो भी धीर न पाएँ ॥

नित-नित मन भटकत फिरे धार के अद्भुत माया ताप,
पलक न पाएँ शान्ति, कोटि जतन कर मर जाता ।।

नाना प्रकार की सामग्री एकत्र करके भी, जीव को अन्त में यह संसार छोड़ना ही पड़ता है। यद्यपि शरीर बन-बनकर समाप्त हो जाते हैं किन्तु जीव की इच्छाएं पूरी नही होती। हर रोज वह नये-नये खेल रचता है। शरीर की कैद में बुद्धि सत् विचारों को धारण नहीं करती, इन्द्रियों के भोगों के पीछे दौड़ती रहती है। जो बुद्धि इन्द्रियों के सुख के निमित्त अनुकूल प्रतिकूल कर्म करती है वह चंडाल बुद्धि है। अपने सुखों के लिए दूसरों को दुःख देने वाला जीव किसी का मित्र नहीं होता। अपने ही दाव में रहता है। जब तक भेद- बुद्धि बनी हैं, तब तक स्थायी सुख-शांति सम्भव नहीं।

8. जीव जैसा प्यासा आया है वैसा ही प्यासा चला जाता है। असली रोग क्या है –

तृष्णा अग्नि लागी मीता, पल-पल करे अंगार ।
सत सील होवे नहीं, कोटिक करे विचार ।।

9. सौ वर्ष की आयु के बाद भी मनुष्य ज्योतिषियों के पीछे भागता है, मानो वे उसकी आयु बढ़ा देंगे। परन्तु बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी ? भोजन के पदार्थों में एक चटनी ही कम हो तो बुरा लगता है? जब शरीर ही छूटेगा तो कितना दुःख होगा ?

10. महापुरूषों ने कहा है कि निर्णय यही है कि प्रत्येक जीव अपनी शारीरिक कामनाओं में जकड़ा हुआ है और उन्ही कामनाओं को पूरा करते-करते यह शरीर समाप्त हो जाता है। यह जीव निराश ही जाता है।

11. देखना यह है कि जिस सुख की इच्छा जीव भीतर से करता

है उसका वास्तविक स्वरूप क्या है? और दुःख जो उसे भीतर से करता है उसका वास्तविक स्वरूप क्या है? और दुःख जो उसे प्राप्त हो रहा है, वह क्या है?

साधारण मनुष्य अपने अन्दर दुःख का विचार न करके दूसरों के सुखों को देखते रहते हैं इससे उनके मन में हर समय सुखों की तृष्णा बढ़ती जाती है और उसे विचलित करती है-

तृष्णा तुल नहीं कष्ट है मीता, जो पलक न धीरज देही ।
राजे राणे गुणी सयाने, नित संकट को लेहीं ॥

तृष्णा को शांत करने के लिए लोग बड़े-बड़े आडम्बर रचते हैं। धन, वैभव, सम्पदा परिवार आदि बढ़ाते हैं। फिर भी जीव आठों पहर तृष्णा की आग में जलता रहता है। यह एक ऐसा असाध्य रोग है जिसमें कायर और शूर सभी पिस रहे हैं। गुणी पुरूषों ने विचार कर अनुभव किया कि शारीरिक सुखों या ऐश्वर्य की अधिकता से यह रोग शांत नही हो सकता । यह रोग भयंकर विष वासुकि नाग की तरह भीतर जलाता-तड़पाता है।

तृष्णा की आग सबके अन्दर भड़क रही है। सभी को जला रही है। यह रोग दृश्यमान नाना प्रकार के पदार्थों को घुन की तरह खा रहा है।

प्रभु प्रार्थना की आवश्यकता एवं महत्व सम्बन्धी सूक्तियाँ

1. कुछ लोगों का कहना है कि निष्काम भाव से की गई प्रार्थना ही सच्ची प्रार्थना है। कोई चुपचाप मन से प्रार्थना करता है, कोई घन्टा घड़ियाल बजा-बजाकर और चिल्ला-चिल्लाकर, कोई दिन में तीन मर्तबा आसन लगाकर, कोई पाँच दफा उठ-बैठ कर, कोई गिरजों में सिजदा करके, कोई साकार द्वारा तो कोई निराकार द्वारा।

क्या सचमुच प्रार्थना से कोई लाभ है और यदि है तो किस प्रकार प्रार्थना की जावे। यह विषय जबरदस्ती मनवाने या तर्क-वितर्क द्वारा सिद्ध करने का नहीं है क्योंकि इसका सीधा सम्बन्ध आत्मा से है। आत्मा जितनी श्रेष्ठ होगी उतना ही आनन्द प्रार्थना में आयेगा।

2. प्रार्थना आत्मा की सच्ची पुकार :

प्रार्थना करना याचना करना नहीं वह तो आत्मा की सच्ची पुकार है। जब हम अपनी असमर्थता खूब समझते हैं और सब कुछ छोड़ कर ईश्वर पर भरोसा करते हैं, तब उसी भावना का फल प्रार्थना है। प्रार्थना या भजन जीभ से नहीं हृदय से होता है। इससे गूंगे, तुतले, मूढ़ सभी प्रार्थना कर सकते हैं, जीभ पर अमृत हो और हृदय में हलाहल हो तो जीभ का अमृत किस काम का ? कागज के गुलाब से सुगन्ध कैसे निकल सकती है।

3. प्रार्थना से अन्तर्भात्मा की शुद्धि :

प्रार्थना करने का उद्देश्य ईश्वर से सम्भाषण करना एवं अन्तर आत्मा की शुद्धि के लिये प्रकाश प्राप्त करना है ताकि ईश्वर की सहायता से हम अपनी कमजोरियों पर विजय प्राप्त कर सकें। अगर प्रार्थना मन से न हो तो सब व्यर्थ है। प्रार्थना से जो कुछ बोला जाता है, उसका मनन कर अपने जीवन को वैसे ही बनाने का प्रयास करना चाहिए। तभी उसका पूर्ण लाभ है

4. प्रार्थना-जीवन अमृत :

मुझे रोटी न मिले तो मैं व्याकुल नहीं होता, प्रार्थना के बिना मैं पागल हो जाऊँगा। प्रार्थना भोजन की अपेक्षा करोड़ गुनी ज्यादा उपयोगी चीज़ है। खाना भले ही छूट जाये, लेकिन प्रार्थना कभी न छूटनी चाहिए। प्रार्थना तो आत्मा का भोजन है यदि हम पूरे दिन ईश्वर का चिन्तन किया करें तो बहुत ही अच्छा, पर चूंकि यह सबके लिए संभव नहीं, इसलिए हमें कम से कम कुछ घण्टों के लिए ईश्वर स्मरण करना ही चाहिए।

5. प्रार्थना सुख-शान्ति का साधन :

परलोक की बात तो जाने दीजिए, इस लोक के लिये भी प्रार्थना सुख-शांति देने वाला साधन है। अतएव यदि हमें मनुष्य बनना है तो हमें चाहिए कि जीवन को प्रार्थना द्वारा रसमय और सार्थक बना डालें इसलिए मैं आपको सलाह दूंगा कि आप प्रार्थना से भूत की तरह लिपटें रहें। (महात्मा गांधी)

6. जब तुम प्रार्थना या भजन करो तो पाखंडियों की तरह उसका दिखावा न हो। ऐसे लोगों को सभाओं में, सड़कों पर और भीड़-भाड़ में प्रार्थना करना अच्छा लगता है ताकि दूसरे देखें और कहें कि यह भक्त है। मैं सच कहता हूँ कि ऐसे लोगों को उनकी प्रार्थना और भजन का फल कुछ न मिलेगा जब तुम प्रार्थना करो तो किसी कोठरी में छिपके करो, उसका द्वार बन्द कर लो। निश्चय कर लो कि तुम्हारा पिता वही है, वह तुम्हारी आवाज़ सुन रहा है और उसका फल अवश्य देगा। (ईसा मसीह)

7. जब भी प्रार्थना करो तो लोगों को दिखाकर, रास्तों के पास या मन्दिर के चबूतरे पर बैठ कर मत करो। बल्कि एक बन्द कमरे में बैठ जाओ और इसका दरवाजा अन्दर से बंद कर लो फिर अपने पिता से एकान्त में बातें करो। प्रार्थना करते समय अपने वाक्यों को बार-बार न दोहराओ। अज्ञानी,
!

लोग यह समझते हैं कि अधिक बोलने से परमात्मा उनकी जल्दी सुनता है। भले मानुष ! तेरे पिता को तेरी आवश्यकताओं का बहुत अच्छी तरह ज्ञान है। तेरी जबान पर आने से पहले ही वह तेरे विचारों को जान लेता है। इसलिए निम्नलिखित प्रार्थना किया करो - "ऐ परम पिता परमात्मा ! तेरा नाम संसार में सबसे अधिक पवित्र है। मेरे अन्दर तेरा ही राज्य हो और मैं तेरे ही अन्दर निवास करूँ। मैं केवल यही चाहता हूँ कि तेरी मर्जी ही मेरे अन्दर और समस्त संसार में पूर्ण हो। हमें शरीर के लिए प्रतिदिन रोटी और बुद्धि के लिये आध्यात्मिक खुराक प्रदान कर। हम किसी के कर्जदार न हों, हमें बुराई और पाप से बचा। हम तेरी बादशाहत को ही अपने अन्दर प्राप्त करें। ऐ पिता ! तू सर्व शक्तिमान है और यह सब तेरा ही जहूर और शान है।"

धर्म का वास्तविक स्वरूप एवं लक्षण

1- सत् को धारण करना आवश्यक है। जिस सत् के आधार पर शरीर स्थित है, सुन्दर प्रतीत हो रहा है, उसी का सहारा लेकर निर्मल कर्म करने चाहिए जिससे मन को शान्ति और शीतलता प्राप्त हो। जब मन में नम्रता आती है तथा वह पर-सेवा में प्रवृत हो जाता है तब शरीर मोह छूट जाता है तथ सत्-स्वरूप जीवन-शक्ति का अनुभव होता है। उसको समझने का यत्न करो, सत् को धारण करो। सत्पुरुषों के जीवन से यही शिक्षा मिलती है। नश्वर शरीर की वास्तविकता पहचानकर, स्वार्थ छोड़कर और प्रभु-परायण बनकर, अपने सुख दूसरो में बाँटना ही सच्चा धर्म है। अतः सबसे प्रार्थना है कि इन शुभ विचारों को धारण करके जीवन सदाचारी बनाएँ। यही धारण ही धर्म है। ईश्वर सबको सुमति प्रदान करे।

2. अपने भीतर झाँको। शारीरिक सुख अपूर्ण हैं। इन्द्रियों के स्वाद छोड़ो। सादा पहनो, पवित्र खाओ। आवश्यकताएं कम करो। इससे आचरण श्रेष्ठ होगा। कर्म की धारणा अपने आप आएगी। अपने सुख दूसरो मे बांटकर प्रसन्नता अनुभव करो। जितना अपने शारीरिक सुख का परित्याग करोगे, उतना ईश्वर के निकट पहुँचोगे..... ईश्वर परायण होकर, दूसरों के दुःख दूर करने क लिए अपने शारीरिक सुखों को समर्पित कर देना ही सच्चा धर्म है। इस वास्तविक धर्म को पहचानने वाले ही सच्चा आनन्द अनुभव करते हैं। ईश्वर देवी-देवताओं की पूजा से नहीं मिलता, वनों में नहीं मिलता, वह तो कर्तव्य निभाने से मिलता है। कर्तव्य पालन करना ही धर्म है। सभी धर्म शास्त्र कर्तव्य परायणता का संदेश देते हैं।

राजनीति अन्धी है। धर्म सही दृष्टि प्रदान करता है। धर्म का अभिप्राय है - अपने सुखों को दूसरों के लिए समर्पित करना। मात्र सुनने से कुछ नहीं बनता। लाभ आचरण और व्यवहार में है। ईश्वर सबको सुमति प्रदान करें जिससे सही निश्चय को धारण करके अपनी और देश -जाति की उन्नति कर सकें।

3. धर्म तो यह है कि जीवन में हर प्रकार की पवित्रता हो। दीन-दुखियों की सेवा में प्रवृति हो। परस्पर प्रेम हो। प्रत्येक जीव को ईश्वर रूप समझा जाये या आत्मवत् देखा जाये।

4. धर्म की धारणा ही ऐसी है जिससे सांसारिक विकारों से मुक्ति मिले, ऐसी धारणा को ही धर्म का रूप जानो। पवित्र आहार, मधुर वाणी, सादा वेश, सत-भाषण, निष्काम सेवा, सत्संग, स्मरण - यही शुभ गुण धर्म का स्वरूप है। जो मनुष्य से देवता बनाने वाले हैं।

5. (प्रश्न) हमारे हिन्दुओं में ही कितने धर्म हैं। कोई कुछ कहता है, कोई कुछ। समझ नहीं आती, किसकी बात मानी जाये ?

उत्तर : जीव दया और आत्म पूजा, तिस समान धर्म नहीं दूजा ॥

जो सब जीवों में अपनी आत्मा जानकर, सबकी सेवा करता है, मन-वचन-कर्म से किसी को दुःख नहीं देता, वही धर्म के स्वरूप का ज्ञाता है। इस प्रकार विचार करोगे तो धर्म का मार्ग अपने आप स्पष्ट हो जायेगा।

दुःख रूप संसार

1. शरीर धारी जीव की बुद्धि स्वभाव वश भोगों में गिरफ्तार रहती है। देखा जाए तो आम जीवों ने खाना-पीना, सोना, ऐश व आराम ही मानुष चोले का मकसद समझ रखा है।

2. यह शांति सुख इसी में समझता है कि ज्यादा से ज्यादा धन मिल जावे परिवार बढ़ जावे, माल इकबाल, कोठियां वगैरह हो जायें लेकिन जिनके पास सब साज व सामान है उनसे जाकर पूछो कहाँ तक उन्हें शांति मिली है। कोई न कोई संशय हर एक को अशांत बनाए रखता है।

3. प्रत्येक मनुष्य अपनी पाँच ज्ञानेन्द्रियों तथा पाँच कर्मेन्द्रियों द्वारा अपने सुखों की पूर्ति चाहता है परन्तु जिस शरीर के लिए वह इतना उद्यम करता है वह शरीर पल-प्रति-पल बदलता रहता है इसलिए जहाँ एक और पूर्ति होती है, वहां दूसरी और अभाव भी पैदा होता है। मनुष्य की बुद्धि वास्तविक शान्ति की तड़प को समझने में असमर्थ है।

4. जो भी जीव संसार में शरीण धारण करके आया है उसे तीन ताप, अर्थात् आधि (मानसिक दुःख), व्याधि (शारीरिक दुःख) और उपाधि (बाहरी दुःख जो अचानक आ जाते हैं) सता रहे हैं। चौरासी लाख प्राणी इन्हीं तीनों रोगो में से किसी न किसी से ग्रस्त हैं। अन्य योनियों को छोड़ कर इस मनुष्य जीवन पर विचार करे। इस शरीर को प्राप्त करके प्रत्येक जीव दिन-रात सुख पाने का यत्न कर रहा है।

5. चक्रवर्ती राजे भी लाचार हैं, भिखारी भी लाचार हैं, परिवारी भी तंग है, बूढ़े आदमी हाय-हाय कर रहे हैं। जवान उससे ज्यादा दुःखी हैं, शोर मचा रहे हैं। बच्चे अनायुक्त हालात को धारण करके रो रहे हैं। तसल्ली किसी को भी नहीं । जीव शरीर की ममता में फंसा हुआ शरीर की कायमी के तरीके सोच रहा है और खुश हो रहा है। मगर जब जानता है कि शरीर खत्म हो जावेगा और बाकी कुछ नहीं रहेगा, उस वक्त सोचता है कि क्या हालत होगा। जितना यत्न-प्रयत्न संसार में करता है, तृष्ण बढ़ती जाती है, शरीर घटता जाता है, आखिर अशांत ही इस दुनिया से जाता है। आया था लेने के वास्ते लेकिन यहां आकर डूब गया। न अपना भला, न देश का भला न कौम का भला ।

6. क्या जवान, क्या बूढ़ा, क्या रोगी, क्या जोगी - सभी सुख की खोज में लगे हैं, परन्तु सुख को जानते-पहचानते नहीं । कुछ लोग सोचते हैं कि यदि इस समय शांति नहीं तो पुत्र प्राप्त होने पर शांति मिलेगी। पौत्र भी हो जाता है, तब भी शांति नहीं मिलती। तब प्रश्न यह है कि शांति है कहाँ ?

7. शारीरिक उन्नति की खातिर बड़े-बड़े यत्न करता है, नौकरी करता है, कोयला बेचता है, खरीद-फरोख्त करता है। पुलिस से दोस्ती बनाता है, अफसरों से मुलाकात करता है, कोशिश करता है कि एम.एल.ए. बन जाये। दिन-रात यत्न कर रहा है, मगर शांति एक लम्हा भी नहीं । रात को भी तजवीजें सोच रहा है कि कैसे पैसा हासिल हो । यह अति कृपण हालत है ।

हर वक्त जलता रहता है। धन वगैरह इकट्ठा किया, खजानें का मालिक बन गया, लेकिन दिल को तसल्ली नहीं, यही जहालत है, मरना उसको याद नहीं, उसका धर्म-कर्म जीवन गर्ज है। आखिर सब कुछ छोड़कर चला जाता है।

8. हर समय नई से नई आशाऐं बनी रहती हैं। मनुष्य सोचता है कि यदि सुख नहीं है तो अमुक वस्तु मिलने पर सुख होगा परन्तु जब वह वस्तु मिल जाती है तब भी वह सुखी नहीं होता, बल्कि तृष्णा और भी बढ़ जाती है। जब कोई वृद्ध मरने लगता है तो सम्बन्धी कहते हैं कि "लाला जी ! कहो हरे राम !' सारी उम्र तो लाला जी उसके लिए अंधेरा खोजते रहे, तृष्णा में उलझे रहे, अब कहते हैं- हरे राम कहो। अब कहने से क्या होगा ? जो सोचते हैं उन्होने समझ लिया कि यह शरीर एक दिन छोड़ना है। इसके साथ हर समय का लगाव ठीक नहीं। सौ वर्ष की आयु के बाद भी मनुष्य ज्योतिषियों के पीछे भागता है मानो वे उसकी आयु बढ़ा देंगे परन्तु बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी ? भोजन के पदार्थों में एक चटनी ही कम हो तो कितना बुरा लगता है? जब शरीर भी छूटेगा तो कितना दुःख होगा।

9. आप कितना भी प्रयत्न करें कि यह शरीर सदा बना रहे परन्तु यह अवश्य समाप्त होगा और इसमें सुख भी नहीं मिलेगा। राजा जनक को जब ज्ञान दिया गया तो कहा गया कि हे राजन् ! जो तू कहे कि मैं सुखी हूँ या दूसरे सुखी हैं यह गलत है। जब कोई सेठ दूसरे सेठ से

मिलता है तो पूछता है - 'लाला जी, क्या हाल हैं ?' उत्तर में वह कहता है - 'बहुत अच्छा है।' परन्तु थेड़ी देर बाद ही यह कहने लगता है - 'क्या अच्छा है, गुजारा नहीं होता, बच्चा बीमार है, मुकदमा चल रहा है, मकान गिर रहा है...' इत्यादि । वास्तविकता यह है कि वास्तव में कोई सुखी नहीं है। सबको सुख की तलाश है। सब ने अपनी-अपनी बाजी लगा रखी है। कोई सिनेमा में सुख ढूंढता है, कोई मदिरा में, कोई गृहस्थ में परन्तु सभी अंधकार में भटक रहे हैं।

10. वास्तविक इच्छा है- अखण्ड शांति की । परन्तु जितने भी पुरूषार्थ हो रहे हैं उनसे अशान्ति बढ़ रही है। मूर्ख जीव देवी-देवताओ के पीछे भाग रहे हैं उसे पता नहीं कि उसके कर्म ही ठीक नहीं। देवी-देवता उसे कैसे बचा सकते हैं ?

11. जैसे वर्षा के कारण अनेक प्रकार की वनस्पतियां पैदा हो जाती हैं वैसे ही शरीर को अति सुख देने से दुःख प्रकट होते हैं। जरा किसी धनवान के जीवन की छानबीन करो । उसे बहुत दुःखी पाओगे । हकीम उसकी नाड़ी थामे खड़े हैं। शारीरिक सुख उसके लिए अति दुःख का कारण बन रहे हैं। अति सुख रोग पैदा करता है करोड़पति भी रो रहे हैं। सभी मुसीबत में फंसे हैं। हाहाकार कर रहे हैं। आत्मा भूखी है इसलिए जीव जो कुछ कर रहा है उससे शांति नहीं ।

12. जब तक आचार-विचार में सुधार नहीं होता, तब तक दुःखों से छुटकारा नहीं मिलेगा, बल्कि दुःख अधिक बढ़ते

ही जाएंगे। जब स्वार्थ बढ़ जाता है, अशांति भी साथ-साथ बढ़ जाती है, तमोगुण के बढ़ जाने से लोग आपस में कट-कट कर मरते हैं। सन्तों का काम तो समझाना ही है। यदि कोई समझ कर सही मार्ग अपना लेगा तो उसके स्वार्थ-परमार्थ दोनों बन जायेंगे। जब तक किसी के होकर न चलोगे, दोनों और से निराशा होगी। ईश्वर ही इस भयानक समय में सबको सुमति प्रदान करे।

सुख कैसे मिले ?

1. हर घड़ी, हर लम्हा अपनी बेहतरी का विचार करना चाहिए। कौन सी चीज त्यागने योग्य है और कौन सी ग्रहण करने योग्य है ? हर समय सत् शिक्षा सत्संग द्वारा हासिल करते रहना चाहिए। कुछ समय महापुरूषों की संगत में जाना चाहिए। जिस जगह आत्म-ज्ञान की चर्चा हो रही हो, जिनके संग से अच्छी-अच्छी युक्तियां प्राप्त होती हों। आलसी नहीं बनना चाहिए। जिस तरह संसार के कामों को होशियारी से करते हो जिनका नतीजा सिवाय राग-द्वेष के कुछ नहीं होता अगर इसी तरह सत पुरूषार्थ में समय दिया जाये तो सफलता पास ही है।

लाला दास गोबिन्द भज, आलस मनो विसार।
रछ पराया कारज आपना, वरत लियो दिन चार॥

2. इस संसार में ऐसे चलना चाहिए जैसे बाग की सैर को जाया जाता है। बाग की तब सिर्फ सैर का ही मकसद होता हे। लगाव किसी चीज से नहीं किया जाता।

3. गुजरान वाला प्रोग्राम बना कर चलना चाहिए यानि जो प्रोग्राम बनाओ वह जीवन रक्षा की खातिर तथा गैर जरूरी इच्छाओं को त्याग कर कर्म खर्च में चलने वाला होवे। अगर प्रारब्धवश ज्यादा धन प्राप्त हो तो उसे सत्कर्मों में खर्च करो और दीन-दुःखी, अनाथों में बांटो। प्रोग्राम को पालन करने में दलील से काम न लें। हर समय चित्त को दयावान बनाये रखना चाहिए।

4. जुबान के पक्के रहना चाहिए। किसी से कोई वायदा करो तो उसे हर कीमत पर निभाओ। अपने संकल्प-विकल्पों पर काबू पाने की कोशिश करें, फिजूल बोलना बन्द करें। मतलब हुआ तो कोई बात कर ली, बाकी समां अन्तर मुख होने की कोशिश करो। झूठ बोलना बन्द करें यानि झूठ न बोलने का व्रत रखें।

2. शारीरिक यानि तन की सफाई की हद मुकर्रर होनी चाहिए। मानुष जामें में जीव मानसिक शुद्धि के वास्ते आया है लेकिन भूल में पड़कर शरीर की सफाई सुथराई में लगा रहता है। इसलिए शरीर से ज्यादा दिल की सफाई कर चित को पवित्र करना ज्यादा

बेहतर है। फकीर या गुरमुख मन को पवित्र करने में लगे रहते हैं।

6. मानुष को चाहिए कि हमेशा वक्त की पाबन्दी में रहे।

7. जिस काम को करने से जमीर रोके, वो काम मत करें। उसको करने की सूरत में नुकसान होगा। सोच-विचार कर नेक काम करें।

8. स्वतन्त्र बुद्धि द्वारा नित सत् विचार धारण करें और सत्-आहार, सत्-व्यवहार और सत्-संगत धारण करते हुए जीवन कल्याण के मार्ग पर चल पड़ें।

9. किसी को हानि या दुःख पहुँचाने की कोशिश न करें। ऊँच-नीच के भाव को मन से निकाल देवें। जो प्रारब्ध कर्म अनुसार प्राप्त हो जावे उसमें प्रभु आज्ञा को मानते हुए सन्तोष धारण करें।

10. घर में बुजुर्गों की सेवा का लाजमी ख्याल रखो। सत्पुरूषों संत-महात्माओं की संगत में समय दें एवं अपने पुराने ग्रन्थों शास्त्रों का विचार करें।

11. दो घड़ी सुबह व शाम मालिक की याद, जैसी किसी गुरू ने बताई हुई है, प्रेम से करो।

12. ईश्वर विश्वास व चिंतन, आखिरत की याद (मृत्यु की याद) और परोपकार सेवन, यदि इन तीन बातों को नित्यप्रति याद करें तो कुछ अर्से में मनुष्य देवता बन जाएगा।

13. वास्तव में जीवन का सार यह है कि उसे मर्यादा से रखो। यह अन्त में दुःख रूप है, इसे सादा बनाओ। सादा भोजन करो, वाणिज्य व्यापार में भी ईमानदारी का बर्ताव करो। जितने भी महापुरूष हुए हैं उनके शरीर तो तुम्हारे समान ही थे केवल उनके उच्च कर्मों ने ही उन्हें महापुरूष बनाया। जो हर समय अपने शरीर के साज-श्रृंगार में ही लगे रहते हैं वे दूसरे का हित कैसे कर सकते हैं ? शरीर के पिंजर की पूजा मत करो। पूजा उसकी करो जो उस शरीर के भीतर विद्यमान है, जो इसे चला रहा है।

14. अपने सुखों को दूसरों की सेवा में लगाना, सतपुरूषों के

बचनों पर आचरण करना, सत्संग द्वारा विवेक-बुद्धि को जागृत करना, शरीर की पूजा की बजाय इसके सिरजनहार को पहचानना और पूजना यही सांसारिक विकारों की अग्नि को शान्त करने के उपाय हैं।

15. सब चीजें पराई जानो। अपना कुछ न समझो । सिर्फ सतगुरु को अपना जानो क्योंकि सब परिवारी अपने-अपने मतलब के हैं जोकि जीवन को हर समय अंधेरे की तरफ ले जाने का कारण बनते हैं।

16. सांसारिक धन, परिवार, महल, अटारियां वगैरह हमेशा रहने वाला सुख नहीं दे सकते इसलिए जो जीव इनको प्राप्त होने पर इनको प्रभु की दात समझता है उसके लोभ, मोह आप ही कम हो जाते हैं।

17. अपना भाव ठीक रखना चाहिए। मोटी बात यह है कि सबसे प्रेम भाव रखना, किसी से द्वेष न करना, जहां तक हो सके तन, मन से दुखियों की सेवा करनी, अच्छे महापुरूषो को देखकर खुश होना और सेवा करना, पापी जीवों को देखकर नफरत विरोध न करना बल्कि उदास होना/उनके लिए चित से प्रार्थना करनी : "ईश्वर इनको सुमति देवे।" निन्दा किसी की नहीं करनी, सत्संग सत् सिमरन में लगे रहना । यही सत् धारणा किसी समय परमगति की तरफ ले जायेगी इसी तरह विचार करते रहा करो ।

18. तुम्हारा भला दूसरे के भले में है। अपनी जिन्दगी की वृद्धि चाहते हो तो दूसरों की वृद्धि करो। जो दूसरे का विरोधी है उसको शांति नहीं मिलेगी, आराम नहीं मिलेगा। अगर तू दूसरे के नाश का यात्न करेगा तो तेरा अपना नाश होगा। ईश्वर शक्ति सबमें विचर रही है जब कुदरत में तफरीक (भेदभाव नहीं तो तू भेदभाव क्यों करता है। तंगदिली किसी मेराज पर नहीं पहुँचने देगी ।

19. अपनी रोटी में से अतिथि, अभ्यागत, यतीम, अनाथों को दे, तेरे भण्डार भरे रहेंगे । आत्मा जैसा तुम में प्रकाश कर रहा है वैसा दूसरों में भी प्रकाश कर रहा है।

20. ऐसी जगह को त्याग देना चाहिए जिस जगह प्रभु की महिमा 30 विचार न हो। ऐसे साथियों को छोड़ देना चाहिए जिनके अन्दा प्रभु चरणों की प्रीत नहीं, ऐसे रिश्तेदारों को छोड़ देना चाहिए, जिनका हर वक्त भोगमयी जीवन संसारी है। झूठ बोलने वाले से तथा दूसरो की एबजोई करने वालों से, डरपोक व लालची लोगों से भी सदा परहेज करना चाहिए।

21. बुद्धि को संसार के बनाने वाले में लगा देने से काम बन जाएगा। जो सुनते हो उसका विचार किया करो। खाली सत वचन कर देने से काम नहीं हो जाता, सत शांति, शरीर, मन, इन्द्रियों की गुलामी में नहीं। मन पर जब सवारी करोगे, तब सुधार होगा।

22. कर्म गति का हर समय विचार करना चाहिए। अपने कर्म शुद्ध करो। तेरा पाप तुझे नाश कर देगा। अपने प्रारब्ध कर्म आप ही बनाने वाले हो। आज के आपके शुभ-अशुभ किये हुए कर्म आने वाले समय में प्रारब्ध कर्म बन जाते हैं इसलिए सही सोच और सही कोशिश करो ताकि सही नतीजा निकले। मर्यादा का जीवन बनाकर चलोगे तो ईश्वर की याद भी बन जायेगी। अगर रोग का इलाज तो किया मगर बद परहेजी भी कायम रखोगे तो सेहत कैसे हो सकती है ? ईश्वर ने बुद्धि दे रखी है। बुद्धि से सही सोचकर सतकर्म करोगे और सत-सिमरन में भी लगोगे तो दुःख, अशांति और चंचलता दूर हो जायेगी। गुरू पीरों की शिक्षा लेकर चलोगे तो शांति ही शांति मिलेगी। देखा-देखी अगर तुम भी गुरू पीर अवतारों का सत्कार करके सिर्फ धूप, दीप से सेवा करने लग जाओगे और जो वे कह गये हैं उस पर अमल नहीं करोग तो ना तो यह लोक सुधरेगा और ना ही परलोक ही। सुख से भी महरूम (वंचित) रहोगे। ईश्वर सबको सुमति देवे। सुबह इधर से चले जाना है। जो कुछ सुना है उसको दिल में जगह देना। फकीरों के पास यही धन है जो दे रहे हैं। जो भी इनके वचनों पर अमल करेगा लाभ प्राप्त करेगा। सूरज का काम है रोशनी देना। इससे कोई फायदा उठाये या न उठाये यह उसके भाग्य हैं। ईश्वर कृपा करे एवं सबको सद्बुद्धि प्रदान करे।

सत्संग का लाभ व स्वरूप

स्मरण रखो, जीवन-कल्याण का एकमात्र उपाय सत्संग ही है। सत्संग में आने से ही बन्धन और मुक्ति के भेद का पता चल सकता है। संसार में जीव क्यों आता है? माया क्या है ? ईश्वर क्या है ? 'मैं' कौन हूँ? शरीर के नाश के पश्चात् जीव कहाँ जाता है ? इन सभी जिज्ञासाओं का समाधान सत्संग में सम्भव है। राग-रंग में मस्त रहकर ये बातें नहीं जानी जा सकती। संसार का श्रेष्ठतम महाकार्य सत्संग ही है । मेरा वास्तविक स्वरूप क्या है ? इस गुह्य भेद को समझने के लिए सत्संग अर्थात् सत्पुरूषों की संगत आवश्यक है। वही महापुरूष ही इन रहस्यों को समझा सकते हैं जिन्होने अपने व्यावहारिक आचरण द्वारा पहले आत्म-तत्त्व को पहचाना, फिर सर्व-कल्याण के लिए उसे दूसरों को समझाया ।

सत्संग क्या है ? सच्चे अर्थों में सत्संग उसे कहते हैं जहाँ ईश्वर महिमा का विचार हो। संसार क्या है ? जीव शरीर धारण करके किस प्रकार दुख-सुख प्राप्त करता रहता है ? अंत में इसे छोड़कर वह कहाँ चला जाता है ? यह दुनिया का खेल क्या है.....? ऐसे सभी प्रश्नों की वास्तविकता को समझने समझाने का जहाँ विचार हो उसे सत्संग कहते हैं।

शरीर रूपी संसार को धारण करके जीव दिन-रात अपनी कामनाएं पूरी करने के लिए भटक रहे हैं किन्तु अनेक सुख भोग प्राप्त होने पर भी उन्हे संतोष नही है, शांति नही है। उल्टे, भोगों की लालसा और बढ जाती है। जीव जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए अनेक भले-बुरे कार्य करता है और चाहता है कि उसके मन को शांति मिले, पर मिलती नही। प्रकृति के 25 गुणों अथवा तत्त्वों का यह ढांचा (शरीर) उसे अनेक प्रकार के नाच नचाता है। सभी साधन करके थक जाने के बाद वह

चारपाई पर जाकर लेट जाता है और सारी सुध-बुध भूल जाता है। सत्संग में जाकर उसे सत विचार मिलते हैं वहाँ जाकर उसे पता चलता है कि वास्तव में यह शरीर क्या है ? इसके भीतर कैसा खेल हो रहा है ? कैसे यह ढांचा बन बिगड़ रहा है ? यह किस शक्ति के सहारे खड़ा है ? उसके भीतर बोलने वाला तत्त्व क्या है ? सुख और दुख का अनुभव इसके अन्दर कौन करता है ? इन प्रश्नों की ओर, सत्संग में गए बिना जीव का ध्यान ही नही जाता, बल्कि उसकी इधर-उधर की भागदौड़ में वह असली खोज के मार्ग से भटक जाता है। सारी शक्ति नश्वर शरीर के पालन-पोषण में नष्ट कर देता है।

सभी जीवों में मनुष्य की बुद्धि सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए इसे सभी प्राणियों मे शिरोमणी माना गया है। कारण, इसी मनुष्य शरीर द्वारा ही जीव आवागमन से मुक्ति का उपाय कर सकता है। वैसे तो सभी जीव अपने-अपने साधनों से कुछ न कुछ उपाय करते रहते है । कोई पूजा पाठ भक्ति करता है, कोई देवी-देवता, गुरू-पीर मनाता है। परन्तु इसमें अधिकतर उद्देश्य स्वार्थ की पूर्ति करना होता है । कोई न कोई कामना ही उसके मूल में रहती है। इसीलिए अशांति कम नही होती । इसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य सत्संग में जाकर पहले सत्-असत् का विवेक प्राप्त करे, फिर दृढ विश्वास से उन पर विचार करे। तब चित्त निर्मल और शांत हो सकता है ।

सत्संग में जाकर यह विवेक प्राप्त होता है कि जो भी पदार्थ इस संसार में दिखाई दे रहे हैं वह सब प्रतिपल परिवर्तनशील हैं। जो पदार्थ उत्पन्न होकर नष्ट हो जाता है, समय-समय पर बदल जाता है, असत् रूप है। ये शरीर भी हड्डी, माँस, मज्जा और कई जोड़ो से बने हुए हैं। सफेद, काली, लाल चमड़ी का आवरण इन पर चढा हुआ है जीव इन्हे देखकर मोहित होते रहते हैं। तनिक

ध्यान से विचार करें तो स्पष्ट हो जाएगा कि इसके भीतर कितनी मलिनता भरी है ? उस पर गहराई से विचार करते ही इससे घृणा होने लगेगी। सत्संग से यह पता चलता है कि कैसे इस शरीर के जोड़ ढीले हो रहे हैं, इसमें निरन्तर ह्रास हो रहा है और यह नाश की ओर बढ रहा है। अतः इसका मोह मिथ्या है, दुखदायक है। शरीर में जो अनेक वासना विकार हैं उनकी पूर्ति के लिए जीव प्रयत्न करता है परन्तु कोई भी कामना पूर्ण नही होती, अधिक बढती रहती है, तृप्ति मिलती नही । कोई-कोई गुणी पुरूष ही इस रहस्य को जानने की चेष्टा करता है और जान पाता है कि इस संसार को बनाने वाला भी कोई है। इस रहस्य को सत्पुरूषों ने जाना और लोगों को बतलाया। मनुष्य शरीर इसी सार तत्त्व को जानने के लिए मिला है जिन्होने इसे जान लिया उन्होने जीवों को माया की नींद से जगाने के लिए सत् उपदेश दिए कि सत् स्वरूप आत्मलीनता ही वास्तविक शांति का साधन है। असंख्य सुख-भोगों और भौतिक पदार्थों के स्वामी को संसार में बुद्धिमान समझा जाता है परन्तु संतो की दृष्टि में वह अंघमति ही माना जाएगा। जिसे न तो यह ज्ञात है कि वह कहाँ से आया है और कहाँ जाएगा, जन्म मरण का रहस्य क्या है ? वह केवल अपनी उदर पूर्ति में लगा हुआ है-और यही सबसे बड़ी मूर्खता और ज्ञानहीनता है। सत्संग द्वारा सत्पुरूष बतलाते है कि अपने आप को समझो । इस संसार को देखकर, इसे बनाने वाले का विचार करो। सोचो कि बड़े-बड़े धनी-मानी, राजा-महाराजा कहाँ गए ? स्वार्थ के निमित जीव अनेक सम्बन्ध बनाता है परन्तु वियोग के समय दुखी होता है अतः संसार से विदा होने से पहले सत्य की पहचान कर लो। जिस सत्य को प्राप्त कर गुरू, पीर, अवतार, देवी, देवता बने, ध्रुव-प्रहलाद, भर्तृ हरि, गौरख, रामकृष्ण, कबीर, नानक जैसे संतो, भक्तों, सत्पुरूषों ने जिस सत् की महिमा गाई है उसी सत् को

जानकर तुम भी निष्काम आनन्द को प्राप्त करो। ईश्वर कहीं दूर नहीं। है। हर स्थान पर विद्यमान है। परन्तु यह जीव साधन ही नही करता, इसीलिए उसे सातवें आकाश पर समझता है।

सत्बुद्धि प्राप्त करने के लिए ऐसे स्थान पर जाओ जहाँ से पन को शांति मिले, स्वयं को जानने का उपाय ज्ञात हो। संसार में कैसे चलना है ऐसी सीख मिले। ईश्वर कृपा करें, इस भयानक समय में सत्बुद्धि प्रदान करें।

(जगाधरी नवम्बर 1953) सत्संग का वास्तविक अर्थ है सत्-स्वरूप की संगति। परन्तु ऐसी संगति कोई-कोई व्यक्ति ही कर सकता है। वही, जो नौ द्वारों की रसना से ऊपर उठ जाता है। यह परम उच्च कोटि का सत्संग है।

इससे दूसरे स्थान पर, मध्यम कोटि का सत्संग वह है जिससे सर्व साधारण जनता लाभ उठा सकती है। वह है - सत्पुरूषों के जीवन से सम्बन्धित अध्ययन, विचार और मनन और उनके गुणों के अनुकरण अथवा उनके सत् सिद्धान्तो पर आचरण की चेष्टा। अन्य सभी प्रकार के सत्संग निम्न कोटि के हैं।

मनुष्य का शरीर पाँच तत्त्वों से निर्मित है। शरीर के भीतर पाँच विकार स्थित है, अतः शरीर की संगति इन विकारों से है। दूसरे शब्दों मे शरीर का संग अपने आप से है अथवा उन सम्बन्धियों या मित्रों से जो शरीर या व्यक्ति के सम्पर्क में आते हैं।

शरीर की रचना जिन पाँच तत्त्वों के मिश्रण से हुई है उन्हीं का परिणाम रूप पाँच विकार है। आकाश से अहंकार, वायु से लोभ, अग्नि से क्रोध, जल से काम और पृथ्वी से मोह उत्पन्न होते हैं। शरीर का सम्पर्क जब सम्बन्धियों से अधिक हो जाता है तब मोह प्रबल हो जाता है। अन्य विकार भी साथ-साथ बढते हूँ। महापुरूषों ने इन विकारों से बचने के लिए गहरी खोज के बाद

अनुभव किया शरीर का संचालक जीवन स्वरूप सत्य तत्व है। यह शरीर प्राण के आधार पर जीवित है। इन प्राणों को जीवन देने वाली, अर्थात चलाने वाली शक्ति कोई और है जिसके निकल जाने पर शरीर, इन्द्रियाँ, प्राण- सभी निष्क्रिय हो जाते हैं। इस शक्ति को सत्पुरूषों ने सत् तत्व की संज्ञा दी है और शरीर की समस्त क्रियाओं को उसी के आधार पर चलाने का प्रयत्न किया, अर्थात त्याग वृति धारण करके जीवन को सेवा परायण बनाया तथा शुद्ध सात्विक आचरण धारण किया।

आप कहेंगे कि गृहस्थ जीवन में रहकर, मोह-माया के बिना काम नही चल सकता। कारण-बिना कारण क्रोध आना तो साधारण बात है यही स्थिति अन्य विकारों की है। इस सम्बन्ध में निवेदन है कि मोह-माया वही उचित है जो बच्चों के पालन-पोषण में सहायक हो। क्रोध वही उचित है जो गुरू द्वारा शिष्य को सत्मार्ग पर लाने की प्रेरणा दे। इस प्रकार की उचित दृष्टि हो तो ये विकार अहितकारक नही होते। जैसे-जैसे इन विकारों की अग्नि शान्त होती जाएगी, मन में धैर्य और संतोष का प्रवेश होगा। मन स्वयं अन्तर्मुखी बनेगा और समय पाकर अपने निज स्वरूप के साक्षात्कार में अवश्य सफल होगा। ईश्वर सभी सज्जनों को सुमति और शक्ति प्रदान करें।

ॐ

ब्रह्म सत्यम् **सर्वाधार**

महामन्त्र की महिमा

महामन्त्र

ओ३म् ब्रह्म सत्यम् निरंकार,
अजन्मा अद्वैत पुरखा सर्व व्यापक
कल्याण मूरत परमेश्वराय नमस्तं

शब्दार्थ

ओउम्	-	सर्व रूप ओंकार
ब्रह्म	-	अनन्त शक्ति परम तत्त्व
सत्यं	-	सदा एक रस
निरंकार	-	आकार से रहित
अजन्मा	-	जन्म से रहित
अद्वैत	-	केवल रूप
पुरखा	-	परम चेतन सत्ता
सरब-व्यापक	-	सब में व्याप्त
कल्याणमूरत	-	परमान्द स्वरूप और सरोत
परमेश्वराय	-	ऐसे परम ईश्वर, बड़े मलिक को
नमस्तं	-	नमस्कार हो !

यह महामंत्र तेरह अक्षरों का मंत्र है, जैसा कि पाठकों को विदित है गुरूदेव मंगत राम जी को तेरह वर्ष की आयु में उस समय प्रकट हुआ। जब वह तरेल नदी के किनारे समाधी में थे। इस मंत्र में ब्रह्म के साकार और निराकार सगुण और निर्गुण सर्वव्यापक और सर्वातीत-दोनों रूपों का वर्णन है। ओउम् से वाचित ब्रह्म ही चराचर जगत के रूप में प्रकट हुआ है - वही पिण्ड है और वही

ब्राह्मण्ड है। प्रत्येक वस्तु का आकार भी वही है और उस का आत्मा भी। वही गुण है और वही द्रव्य। इतना होते हुए भी वह सर्वातीत अद्वैतरूप है। उसी की शरण में जाकर जीव कल्याण को प्राप्त होता है। गुरूदेव का कहना है -

विश्व के पीर-पैगम्बर, वली और अवतारों मन्त्र दृष्टा ऋषियों, ज्ञानियों, संत महापुरूषों ने जो भी धार्मिक तालीम (शिक्षा) अपने शिष्यों को दी। इसका लबोलबाब अर्थात् निचोड़ (सार) उन्होने चन्द शब्दों और छोटे वाक्यों में इस तरह भरकर रख दिया मानो दरिया को कुजे में बन्द कर दिया हो। ऐसे वाक्य को आदि मंत्र, महामन्त्र या मूलमंत्र, कलमा इत्यादि कहकर पुकारा जाता है और उन महापुरूषों की तालीम (सिद्धान्त) इसी महावाक्य के चक्र पर घूमती रहती है। जिस तरह रथ का पहिया रथ की धुरी के आधार पर चक्र काटता रहता है। इसी कारण इसको बीज मंत्र या मूलमंत्र कहा जाता है। जैसे बीज से पहले अंकुर फूटता है, फिर शाखाएं, पत्तों इत्यादि निकल कर पेड़ की सूरत बन जाती है। बाद मैं फूल और फिर फल रूप में उस तालीम के सार तत्व की प्राप्ति हो जाती है।

वेदों में जैसे गायत्री मंत्र, उपनिषदों में महावाक्य, इस्लाम में कलमा शरीफ इत्यादि को जो पदवी हासिल है, वही पदवी इस समता रूपी तालीम (सिद्धांत) में इस महामंत्र को प्राप्त है। युग पुरूष महात्मा 'मंगत राम जी' महाराज ने समता सिद्धांत की विस्तारपूर्वक तालीम के सार को इस महामंत्र में भर दिया है। जिस तरह भगवान श्री कृष्ण जी ने गीता ज्ञान

के सार तत्व को 18वें अध्याय के 66 वें श्लोक में वर्णन किया है - है अर्जुन ! तू सब धर्मो का त्याग करके केवल मेरी शरण में आ जा। तुझे सब पापों से मुक्त कर दूंगा। तू शोक और संशय मत कर।

इसी प्रकार यह महामंत्र समता की तालीम का सार तत्व है और ज्ञान रूपी वृक्ष का अमृत फल। जिसका विधिपूर्वक मनन और निध्यासन करने से जीव के विकार, मल, विक्षेप आवरण आदि निवृत होकर समता रूपी ज्ञान प्राप्त होकर उसे परम आनन्द, अभय पद की प्राप्ति हो जाती है। ये तेरह अक्षर का महामंत्र समता रूपी ज्ञान की प्राप्ति का मूल साधन है। जिस तरह सप्त ऋषि ध्रुव मंडल की कीली के गिर्द चक्कर काटते रहते हैं। इसी तरह ये महामंत्र समता रूपी ज्ञान का "आधार" मात्र हैं और सब प्रकार की रिद्धि-सिद्धि के देने वाला है।

महामंत्र कब और कैसे प्रकट हुआ

ये मूल मंत्र श्री सद्गुरूदेव महात्मा मंगत राम जी के स्वयं कथनानुसार तीन दिनों में प्रगट हुआ। इसका वर्णन उन्होंने जून 1930 ई. में नखेत्र पर्वत (रियासत कश्मीर) पर एकान्तवास के दिनों में अपने सेवक भगत बनारसी दास के एक प्रश्न के उत्तर में दिया था।

आपका उत्तर था कि ये 13 वर्ष की उमर में एक दिन पानी के किनारे खड्ड में बैठे हुए थे (ये खड्ड तरेल नदी के नाम से प्रसिद्ध था और यह नदी महाराज जी के जन्म स्थान के निकट नीचे की ओर बहती थी)

जब पहले दिन इस महामंत्र के तीन अक्षर ॐ, ब्रह्म, सत्यम् प्रगट हुए और दूसरे दिन निरंकार, अजन्मा, अद्वैत पुरखा प्रगट हुए और तीसरे दिन सर्वव्यापक, कल्याण मूरत, परमेश्वराय नमस्तं। इन्हें (महाराज जी) स्वयं एक कागज पर नोट करते रहे। फिर जब जंगल में या एकान्त में बैठते, अथाह विचार अन्तर से प्रगट होते। लेकिन किसी के आगे बोलते नहीं थे। अकेले ही समय गुजरता था। जब समय आया, प्रभु आज्ञा से पहली दफा अहमदाबाद की तरफ जाना हुआ। तब महन्त 'रतन दास' ने कुछ सवाल किये। जिन पर कुछ बोलना हुआ। जोकि उन्होने लिख लिया। अब प्रभु प्रेरणा से तुमने मौज को बाहर निकाला है। लिखने वाले बनो। यहाँ किसी बात की कमी नहीं है।

इस महामंत्र की पूर्ण रूप में महिमा को अमृत वाणी में जनवरी 1942 में शाहपुर कंडी (जिला गुरदासपुर) के बाहर रावि नदी के किनारे एकान्तवास में भगत बनारसी दास की प्रार्थना पर स्वयं कलमबद्ध किया।

ये महामंत्र सद्गुरू देव जी की आज्ञानुसार संगत समतावाद के सत्संगों तथा हर शुभ-अशुभ कार्य के आरम्भ के पहले पाँच बार मिलकर

त्रियोदश अक्षर मंत्र यह, सरब सिद्ध दातार।
जो सिमरे नित प्रेम से, मंगल पाये अपार॥

वाणी से स्पष्ट है कि महामंत्र जगद्दीक्षा के रूप में अवतरित हुआ था। ईश्वर कभी शरीर रूप में प्रकट होकर जिज्ञासु का मार्गदर्शन करते हैं उस समय वे गुरू रूप होते हैं। कभी ऐसा समय आता है कि वे शब्द रूप परमेश्वर मंत्र रूप में अवतार लेकर जीवों की तपन बुझाते हैं। परन्तु ऐसी कृपा कभी-कभी ही हुआ करती है। ऐसे महामंत्रों में शक्तिपात की क्षमता निहित रहती है। बिना दीक्षा लिए ही महामंत्र के द्वारा जिज्ञासु दीक्षित हो सकता है। यही इसकी महिमा है। प्राण-अपान की साधना के लिए तो कामिल गुरू की जरूरत रहती है क्योंकि उसे गुप्त रखा गया है लेकिन महामंत्र सबके लिए है। इसके जाप के लिए दीक्षा की जरूरत नही है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित संवाद शिक्षाप्रद है।

प्रेमी : जब सब जगह आश्रम खुल गए हैं तो आपको (आपके बाद) एक सही गुरू तो बिठाना ही पडेगा। अगर ऐसा हुआ तो क्या यह गुरूडम नहीं होगा ?

गुरूदेव : यहाँ गुरू स्थापित करने का कोई सवाल नही है। गुरू बनाया नही जाता, गुरू बनाना ही गुरूडम है। इधर तालीम में कोई कमी नही रखी गई..... महामन्त्र अपने आप में गुरूमंत्र है। सहज-सजह शब्दों के अंगो में समाधि अवस्था में अनुभव होता रहा है। जैसे-जैसे आया नोट करते रहे। अब मुकम्मिल रूप में रूहानी (अध्यात्मिक) मन्त्र अर्थसहित समता प्रकाश में लिखा है। गीता में भी जपयोग की बड़ी महानता बतलाई गई है। यह मन्त्र सर्व सिद्धि दातार है।

प्रेमी : आपने समता विलास में एक जगह फरमाया है कि असली सिमरण वही है जो कि मन और पवन की

सन्धि करे और अब आप फरमा रहे हैं कि महामन्त्र का जाप सर्वश्रेष्ठ है। आखिर कौन सी बात ठीक है?

गुरूदेव : गुरू की हिदायत (उपदेश) पर विश्वास ही गुरू की प्राप्ति है। जब कामिल गुरू शारीरिक तौर पर मौजूद नहीं रहते तब चालाक लोग आगे आकर मना की हुई बातों को नजरअंदाज करके खुद गुरूडम फैलाने का कारण बनते हैं। भोली भाली जनता को गुमराह करके उनके धन दौलत व दीगर (अन्य) सामग्रियों से सुख भोगते हैं। इसलिए महामन्त्र की महानता बयान कर दी गई है ताकि पीछे से लोग गुमराह न हों। विश्वास ही कामिल गुरू है।

प्रेमी : अगर फिर भी चालाक लोग रास्ता निकालकर आगे आ जाएँ तो भोली भाली जनता को ईश्वर के नाम पर आसानी से गुमराह किया जा सकता है और महामन्त्र की जगह गुरूमंत्र का लालच दिया जा सकता है।

गुरूदेव : इन्सान बेशक कमजोर दिल है। लालच और लोभ से स्वयम् ही अपनी कमजोरी का शिकार हो जाता है। लेकिन जैसे रोटी के लिखे हुए शब्द पढ़ने से भूख की निवृति नहीं होती, कामिल गुरू के बगैर युक्ति और शक्ति नहीं मिलती।

प्रेमी : फिर महामन्त्र से आपकी अनुपस्थिति में किस प्रकार संतोष होगी ? वह भी तो वास्तव में लिखी हुई रोटी के शब्द की ही प्रकार समझा जायेगा।

गुरूदेव : आप भी उन चालाक लोगों की तरह उनकी वकालत कर रहे हैं, जो भोले-भाले लोगों को अपने दांव-पेंच में डालकर फाँस लेते हैं। प्रेमी जी, कामिल पुरूषों की तहरीर (लेख) व तकरीर (वचन) में कोई अन्तर नहीं होता। यकीन कामिल (पूर्ण विश्वास) ही सफलता की कुंजी है, बस।

महामंत्र महिमा - शब्द की व्याख्या

शब्द (1)
त्रियोदश अक्षर मंत्र ये, सरब सिद्धि दातार।
जो सिमरे नित प्रेम से, मंगल पाए अपार ।।

भावार्थ - यह तेरह अक्षर का मंत्र हर प्रकार की सिद्धि सफलता, सुख-समृद्धि देने वाला है। जो प्रेम-प्रीति से इसका जाप करते हैं उनको अपार मंगल की प्राप्ति होती है। वे सुखी रहते हैं और उनका कल्याण हो जाता है।

शब्द (2)
जन्म-जन्म जाये भरमना, प्रभु चरन पाये विश्वास।
मोह माया संकट मिटे, सब कारज होवें रास ।।

भावार्थ - जो सज्जन पुरूष इस मंत्र का प्रेम और सद्भावना से जाप और सिमरन करते हैं, उनका आवागमन का भ्रम दूर हो जाता है। उनको प्रभु चरणों का सच्चा निश्चय प्राप्त होता है। सत् विश्वास से वह प्रभु भक्ति करते हैं उनके मोह माया के सब बन्धन कट जाते हैं और अन्त में वह मुक्त हो जाते हैं। उनके संसार के सब कार्य सफल हो जाते हैं। प्रभु की उनपर विशेष कृपा होती है।

शब्द (3)
महमा सत्सरूप की, सब अक्षर पहचान।
चार वेद और सिमरती, सबका सार निधान ।।

भावार्थ - इस मंत्र के सब अक्षर सत्स्वरूप परमात्मा के नाम, गुण और स्वरूप महिमा का वर्णन करते हैं, ऐसे जानो । चारों वेद, छः शास्त्र और सत्ताईस स्मृति-ग्रंथ जिनमें उस महाप्रभु की महिमा का गायन किया गया है। यह मन्त्र उन सब ग्रन्थों का सार निधान है, अर्थात् प्रभु महिमा का इस मंत्र से पूर्ण भाव प्राप्त होता है।

वास्तव में पहला अक्षर "ओ३म्" ही "शब्द ब्रह्म" है, ओ३म् से ही चारों वेद, सारा ज्ञान और जगत की उत्पत्ति हुई है।

सारा मंत्र और शेष शब्द 'ओ३म्' की महिमा बखान करते हैं। यह ओ३म् ही सार शब्द, सत शब्द, अनाहद, नाद या अनहद शब्द, अलख वाणी आदि नामों से पुकारा जाता है। इसी शब्द की प्राप्ति ही परमात्मा की प्राप्ति होती है। इस कारण से गुरू महाराज जी ने महामंत्र की विशेष महिमा गाई है। और इसका उच्चारण और ध्यान या अराधना सर्व फल दाता कहा है-ओ३म्।

शब्द (4)
परम शक्त प्रकाश अत धारे, कोट पिण्ड ब्रह्माण्ड।
सरब न्यारा आप रहे, तत् नाद रूप अखण्ड॥

शब्द (5)
रिखी मुनी और देवते, गायें गुरू अवतार।
महमा अवगत रूप की, पल-पल करें विचार॥

शब्द (6)
ज्ञानी कथा विचारते जुग जुग पूरन सार।
ओड़क निरना पाया, सरब रूप ओंकार॥

भावार्थ - वह परमात्मा सर्वशक्तिमान, ज्योति स्वरूप स्वयं प्रकाश, अपने प्रकाश से प्रकाशमान अनन्त ब्राह्मण्डों को धारण करता है, अर्थात उत्पन्न करता है, पालन करता है, संहार करता है। इतनी विचित्र लीला करता हुआ भी वह परम तत् अखण्ड नाद (शब्द) के रूप में सबसे न्यारा और असंग रहता है।

सब ऋषि-मुनि और देवगण, गुरू पीर और अवतारी पुरूष उसकी महिमा और गुणानुवाद गाते हैं अर्थात उस नाद ब्रह्म 'ओंकार' की महिमा व स्वरूप का ध्यान या चिन्तन करते हैं

तत्वेता ज्ञानी पुरूष जिनको अखण्ड शब्द की लखता प्राप्त होती है, वह युगों-युगों में शरीर धारण करके आते हैं और जन-समाज को शब्द ब्रह्म का उपदेश करते हैं और उसके पूर्ण सार को प्रगट करते हैं। अन्त में वह यही निर्णय देते हैं कि यह सारा दृश्यमान प्रपंच (जगत) और उनके सारे रूपों में एक शब्द ओंकार ही समाया हुआ है।

शब्द (7)

कथा विचारें वेदान्ती, देवें अनक भाँत परमान।
ब्रह्म सत्यम् तत् रूप का, निरनय करें बखान॥

भावार्थ - परमात्म, परम चेतन सत्ता के विषय में वेदान्त के आचार्य अनेक प्रकार के प्रमाण देते हैं और यह सिद्धान्त कहते हैं कि एक ब्रह्म ही सत्य है और सब जगत मिथ्या है, जीव भी ब्रह्मस्वरूप है भिन्न नहीं है अर्थात "सर्व खल्विदं ब्रह्म" यह सब कुछ ब्रह्म है और तीन काल सत् है। इस प्रकार परम तत् को ब्रह्म सत्यम् कहा गया है।

शब्द (8)

शब्द रूप को पूजते, जो तीन काल निरदोख।
त्रैगुन से नित भिन्न है, निरंकार शबद तत् मोख॥

भावार्थ - वह परम तत् परमात्मा निर्गुण, निराकार है, इससे वह शब्द स्वरूप है, वह अति सूक्ष्म है और एक अद्वैत है। उसमें दोष और विकार सम्भव नहीं है। वह तीन काल सदा निर्विकार और निर्दोष है। माया के तीन गुणों से भी वह परे या अतीत है। ऐसे नित्य मुक्त शब्द तत् को सार शब्द के पुजारी निरंकार कहते हैं।

शब्द (9)

उतपत परलय जो होये, सो असत माया विकार।
अजन्मा कर प्रभ पूजते, जुग जुग गुनी अपार॥

भावार्थ - जो वस्तु उत्पन्न होती है, वह नाश होती है। इस प्रकार आदि अन्त वाली वस्तु सत्य नहीं होती, बल्कि उसको असत्य मिथ्या कहते हैं। इस प्रकार सारा संसार और पदार्थ असत् और मिथ्या है। इससे उनको माया का विकार कहा गया है। गुणी ज्ञानी पुरूष परम तत् सत्यस्वरूप परमात्मा को अजन्मा कहते हैं और सदा इस नाम से उसकी पूजा करते हैं।

(10)
केवल सत्ता तत् रूप को, पूजें सिद्ध बुद्ध अनेक।
दृश्यमान सब भरम है, प्रभ केवल रूप अद्वैत।

भावार्थ-अनादि काल से सिद्ध और बुद्ध अर्थात पूर्ण तत्वेता और ज्ञानी पुरूष उस परम चेतना सत्ता की पूजा करते हैं, जो केवल सत् भ्रम-भाव में स्थित है। जो एक ओर अद्वैत हैं। सारा संसार उनको भ्रम रूप असत्य और मिथ्या भासता है। वह परमात्मा केवल रूप अद्वैत आप में आप स्थित है।

शब्द (11)
परम शकत संसार में, ज्ञान मात्रक सार।
सरब आधारी तत् सो, करें पुरखा विचार॥

भावार्थ - सारे संसार में वह परम शक्ति सार तत् सर्वज्ञाता सर्वज्ञ के रूप में निवास करता है। वह ज्ञानस्वरूप है। सबके अन्तर्गत रहकर सब कुछ जानता है, सारे चराचर पदार्थों में परिपूर्ण है। सब शरीर रूपी पुरियों में समाया हुआ "पुरूष" नाम से कहा जाता है।

शब्द (12)
लाख चौरासी जन्त में, जो सम रस रह्या व्याप।
सरब व्यापक तत् जान के, हरजन करते जाप॥

भावार्थ - संसार में जीवों की चौरासी लाख योनियाँ बताई जाती है। उन सब में जो परमात्मा समान रूप में एक रस एक जैसा व्यापा हुआ है, उसको हरिजन सर्वव्यापक कहकर याद करते हैं। जिस प्रकार बिजली की धारा सारे यन्त्रों, बल्बों, पंखों, मशीनों आदि में समान रूप से व्यापत होकर उनको चलाती है, इसी प्रकार यह चेतन शक्ति की धारा भी समान रूप में सबमें व्याप कर उनसे लीला करवाती है। इससे उसको सर्वव्यापक कहते हैं।

शब्द (13)
राग द्वेष जाँ को नहीं, शुद्ध सरुप त्रैकाल ।
कल्यान मूरत तत् ध्यान से, तन-मन होये निहाल ॥

भावार्थ - जिस परम चेतन तत् में राग-द्वेष नहीं है और जो सदा एक रस सम और अखण्ड है, वही कल्याण की मूर्ति या कल्याणस्वरूप तत् है। उसकी अराधना करने से जीव का तन-मन निहाल हो जाता है अर्थात जीवन सफल हो जाता है।

शब्द (14)
सरब शकत आधार जो, अतुल शकत निर्धार ।
परमेश्वर कर पूजिये, ताप तपन होये छार ॥

भावार्थ - संसार की सारी शक्तियों का जो आश्रय और आधार है। सारे देवी-देवताओं में भी जिसकी शक्ति काम करती है। जिसकी शक्ति का कोई माप-तोल नहीं अर्थात जो अनन्त शक्ति वाला है, ऐसे परम ईश्वर की पूजा करने से जीव के सारे दुःख-सन्ताप नाश हो जाते है और जीव परम सुखी होता है।

शब्द (15)
नमों नमों प्रभ रूप को, जाँ की महमा अपरमपार ।
अनन्त शकत तत् शबद को, नमस्तं बारम्बार ॥

भावार्थ - उस परम पिता परमात्मा को नमस्कार हो, नमस्कार हो, जिसकी महिमा अपरमपार है, वर्णन नही हो सकती। उस परम तत् शब्द रूप अनन्त शक्ति को बार-बार नमस्कार हो, प्रणाम हो ।

शब्द (16)

तत् मन्तर महमा अपार है, ज्ञान सागर अथाह ।
जिस बिध जो सिमरन करे, भव दुस्तर तरे असगाह ॥

भावार्थ - इस महामंत्र सत-तत् की महिमा बहुत अधिक है और यह ज्ञान का अथाह सागर है। इस मंत्र का जाप या सिमरण जिस विधि से भी कोई करेगा, वह दुस्तर भवसागर को पार कर जायेगा।

शब्द (17)
सत सरूप परमात्मा, सब अक्षर महमा जाँ।
जो सिमरे चित्त प्रीत से, कलह न व्यापे ताँ ।।

भावार्थ - इस मंत्र के सारे अक्षर सत स्वरूप परमात्मा की महिमा का बखान करते हैं। जो मन चित्त में प्रेम और श्रद्धा धारण करके इस मंत्र का सिमरन करेंगे, कलह-क्लेश और दुःख-सन्ताप उनके निकट नहीं आ पाएंगे।

शब्द (18)
सत मंतर सिमरण करे, उठ्ठत बैठत नर जोये।
जाये भरम की दूषना, चित्त शान्त परापत होये ।।

भावार्थ - इस महामंत्र का सिमरन जो उठते-बैठते करेगा, उसकी भ्रम की दूषना दूर होगी और उसका चित्त समाहित और शान्त होगा। मोह-माया के कारण जो शरीर को सत और आत्मा मान लिया था जिस कारण अहम् और ममता का रोग लग गया था, यही भ्रम की दूषना थी जिसमें जीव फंसा था।

शब्द (19)
विजय पाये संकट मिटे, सत गुन ले सुखसार।
आध व्याध जाये कल्पना, पाये सूझ धरम अपार ।।

भावार्थ - इस मंत्र का सिमरन करने वाले को संसार में विजय प्राप्त होती है और सारे दुःख सन्ताप मिट जाते हैं। दैवी सम्पत्ति के शुभ गुण उसको प्राप्त होते हैं जिससे उसे सारे सुख का लाभ होता है। उसके शारीरिक और मानसिक रोग सब दूर हो जाते हैं और उसे अपने सत्य धर्म का अपार ज्ञान प्राप्त होता है। जिससे वह मोक्ष लाभ करता है।

शब्द (20)
जो ध्याये नित प्रेम से, परसे नहीं पखवाद।
समता तत् रसना मिले, मोह ममता मिटे मूल परमाद ॥

भावार्थ-जो साधक प्रेम से इस मंत्र का जाप और सिमरण भजन करता है और पक्षपात से दूर रहता है उसको समता तत् आत्मानन्द का रस प्राप्त होगा और मोह-ममता का मूल परमाद, अज्ञान और अविद्या दूर हो जायेंगे। वह आत्म-ज्ञान को पाकर समता स्थिति वाला होगा वही सच्चा समतावादी होगा।

शब्द (21)
कलह कलेश सब दूर होये, पाये ज्ञान तत् योग।
'मंगत' तत् अक्षर नित गाइये, प्रभ दर्शन होयें संजोग ॥

भावार्थ - इस मंत्र की आराधना से साधक को तत्-ज्ञान की प्राप्ति होती है और उसके जीवन के सारे दुःख और कलेश दूर हो जाते हैं। महात्मा मंगत राम जी महाराज फरमाते हैं कि इस परम तत् शब्द के अक्षरों का नित सिमरण करना चाहिए, ताकि प्रभु-दर्शन की प्राप्ति हो जाये और जीवन सफल हो।

ॐ

ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार

आरती

तूँ पार ब्रह्म परमेश्वर, तीन काल रछपाल।
नित पाऊँ शरनागती, सत् चरन कँवल दयाल॥
तूँ नित पतित उद्धार है, पूरन प्रभ जगदीश।
मोह माया संकट हरो, दीजो ज्ञान संदेश॥
नित ही तेरे चरन की, मन में रहे परीत।
तूँ दाता दातार है, पुरुखोत्तम सुखरीत॥
पवन पानी बैसन्तर, धरती और आकाश।
सब को सरजनहार तूँ, आद पुरख अबनाश॥
घट-घट व्यापक तूँ परमेश्वर, सरब जीयाँ आधार।
अनमत कूकर को राख लें, किरपा निद्ध करतार॥
काल करम जाये दूषना, खल बुद्धी हरो अज्ञान।
सत शरधा पाऊँ चरन की, अखण्ड प्रेम चित ध्यान॥
दीनानाथ दयाल तूँ, पल पल होत सहाये।
कीरत साचे नाम की, मन तन आये समाये॥
अन्तर का सब खेद हरो, दीजो सत विशवाश।
सरनागत हूँ मंधमती, घट अन्तर करो परकाश॥
अन्तरगत सिमरन करूँ, निरन्तर धरूँ ध्यान।
घट घट में दर्शन करूँ, आद पुरख भगवान॥
तूँ साचा साहब सरब परकाशी, शबद रूप आखण्ड।
गुनी मुनी उस्तत करें, तन मन पायें आनन्द॥
होवें दयाल तूँ सत परमेश्वर, देवें धीर अपार।
निमख निमख सिमरन करूँ, चित चरन रहे आधार॥
काया अन्तर परतख होवें, नाद रूप बिसमाद।
पल पल कीजूँ आरती, तन मन तजूँ व्याध॥

जग आवन सुफला होवे, तेरी आज्ञा मन में ध्याऊँ।
अन्तरगत करूँ आरती, भव दुस्तर तर जाऊँ॥
अन्धमत मूढ़ा नित प्रती, तेरे चरनी करे पुकार।
'मंगत' माँगे दीनता, सत् धर्म सुख सार॥
अन्धमत मूढ़ा नित प्रती, तेरे चरनी करे पुकार।
'मंगत' माँगे दीनता, सत् धर्म सुख सार॥

समता – मंगल

समता धरम हिरदे रसे, बिख ममता होवे नाश।
सत सरूप परमातमा, जल थल पाऊँ प्रकाश॥
सब जीवों से प्रेम हो, तन मन सेवा धार।
समता साधन पाये के, नित परसाँ जै जैकार॥
सत् करम सत् निश्चय, निर्मल पाऊँ विचार।
'मंगत' समता धार के, जीत चलो संसार॥
सत् करम सत् निश्चय, निर्मल पाऊँ विचार।
'मंगत' समता धार के, जीत चलो संसार॥